अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी

आशीर्वाद

परम पूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज

संकलनकर्ता

ऐलक विज्ञानसागर

प्रकाशक

अतिशय क्षेत्र जय शांतिसागर निकेतन

ग्राम मंडौला, पुलिस चैक पोस्ट

जिला-गाजियाबाद (उ.प्र.) 201102

कृति : **अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी**

आशीर्वाद : प.पू. आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज

संकलनकर्ता : ऐलक विज्ञानसागर महाराज

प्रेरणास्रोत : माँ श्री केसर बाई जी (क्षुल्लिका श्री निर्वाणनंदनी जी)

उपलक्ष्य : आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का 50वें संयमोत्सव
आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज का 50वें जन्मोत्सव
ऐलक श्री विज्ञानसागर जी महाराज का 24वें दीक्षा दिवस

लेखन सहयोगी : ब्र. नन्दनी (ज्योति दीदी)/व ऋजुता (रानी दीदी)

संस्करण : 2017 (प्रथम) 1000 प्रतियां

मूल्य : 50/-

पुण्यार्जक : **श्री सुभाष चन्द जैन देवकुमार जैन सर्राफ**
सहारनपुर (उ.प्र.)

प्रकाशक : आचार्य वसुनन्दी साहित्य सदन, मंडौला
सम्पर्क सूत्र : 9719323429, 9811227718
9311271565, 9690042294

प्राप्ति स्थान : **आचार्य श्री वसुनन्दी जी मुनिराज ससंघ**
सम्पर्क सूत्र : 7042206609

अतिशय क्षेत्र जय शांतिसागर निकेतन
पुलिस चौकी मण्डौला, जिला गाजियाबाद (उ.प्र.) 201102

शैलेष जैन, पारस गोल्ड
20 पंथी कोठी के बाहर, मधुबन (श्री सम्मेदशिखर जी)
मोबाईल - 7992286317, 8578080900

मुद्रक : वसुनन्दी ग्रॉफिक्स, दिल्ली
फोन : 011-65002127, 9212019046

अनुक्रमणिका

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी	**ऐलक विज्ञानसागर**	5
गुरु कृपा से मिला जीवन का आधार	**नंदिनी दीदी, ऋजुता दीदी**	8
धर्म एवं अध्यात्म के तत्वज्ञानी आचार्यश्री	**बा.ब्र. चेलना**	9
ज्ञान साधना के स्वामी - आचार्यश्री	**बा.ब्र. प्रज्ञा दीदी**	11
करुणामूर्ति आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज	**बा.ब्र. सौम्या**	14
संतों का देश है भारत	**साध्वी बिन्दु श्री जी म.सा.**	15
प्रकृति विद्या के संप्रेरक	**ब्र. जय कुमार जैन 'निशांत'**	16
सरस्वती पुत्र आचार्य वसुनन्दी जी	**प्र. कमलेश कुमार जैन**	17
लेखनी लिखती गई	**ब्र. संजय शास्त्री**	18
वसुनन्दिपञ्चाशिका	**डॉ. अरविन्द कुमार तिवारी**	19
मेरी दृष्टि 'वात्सल्य के गहन सागर-आचार्यश्री'	**प्र. पं. पवन जैन दीवान**	32
जिन धर्म प्रभावना के अनुपम सूर्य	**प्र. पं. नरेश कुमार जैन**	36
अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी	**पं. सतन कुमार विनोद कुमार**	38
बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी	**प्र. श्री मनोज जैन शास्त्री**	39
वात्सल्य स्वभावी एवं क्षमाशील	**पं. अमर चन्द्र शास्त्री**	41
आचार्य श्री के उपकार	**पं. अशोक जैन ''शास्त्री''**	43
आचार्य श्री वसुनंदी जी-गागर में सागर भरते हैं	**पं. सुरेश जैन मारौरा**	44
चारित्र और चर्या के धनी	**पं. दीपक जैन शास्त्री**	45
मूलगुण धारी गुणों में दृढ़	**संजीव कुमार जैन, आई.पी.एस.**	46
वात्सल्य का अपार स्रोत-आचार्य श्री	**पवन जैन, आई.पी.एस.**	49
युवा पीढ़ी के मार्गदर्शक	**मनोज जैन पाटनी, आई.ए.एस.**	51
शुभकामना	**अरविन्द कुमार जैन, आई.पी.एस.**	53
शुभकामना	**गोरखनाथ यादव**	54
वात्सल्य एवं दया की मूर्ति : आचार्यश्री	**सूबेदार मोनिका जैन**	55
क्या कहती है आपकी जन्म कुण्डली	**रवि जैन गुरुजी**	58
श्रमण संस्कृति उद्गाता : आचार्यश्री	**प्रो. नलिन के. शास्त्री**	62
संवाद-एक संत का	**प्रो. आर. आर. आजाद**	71
संत परंपरा का दैदीप्यमान नक्षत्र : आचार्यश्री	**डॉ. के.एल. जैन**	74
जिनशासक प्रभावक-आचार्य श्री वसुनंदी महाराज	**डॉ. प्रो. जयकुमार उपाध्ये**	76
शब्दवाहिनी-अविरल प्रेमभाव से पल्लवित	**प्रो0 वीरेन्द्र सिंह**	82
माँ त्रिवेणी के लाल, जग को कर दिया निहाल	**प्रो. टीकम चन्द जैन**	86
प्रणामाञ्जलि	**प्राचार्य पं. निहालचंद जैन**	87

तुम्हें भूलना नामुमकिन	**डॉ. एम. सी. जैन 'सर'**	88
उत्सव आज मनाऐं	**डॉ. एम. सी. जैन 'सर'**	91
आचार्य श्री वसुनंदी जी संक्षिप्त परिचय	**प्रो. एस.के. जैन**	93
विद्वानों की दृष्टि में - आचार्यश्री	**प्रो. (डॉ. मुकेश जैन)**	96
नमन	**विनीत कुमार जैन**	98
आत्मनिष्ठा के अनुपम आदर्श : आचार्यश्री	**डॉ. डी. सी. जैन**	99
सरल स्वभाव एवं चुम्बकीय व्यक्तित्व के धनी	**डॉ. अनुपम जैन**	101
ज्ञान के अथाह सागर-आचार्यश्री	**डॉ. अनेकान्त कुमार जैन**	104
एक अद्भुत संत : आचार्य वसुनन्दी जी महाराज	**डॉ. अमित जैन**	106
राष्ट्रसंत की परम्परा के सच्चे निर्वाहक आचार्यश्री	**डॉ. पंकज जैन**	108
तहाँ धम्मो जहाँ तरू (जहाँ वृक्ष हैं वहाँ धर्म है)	**डॉ. अमित जैन**	112
मेरी दृष्टि में आचार्य वसुनन्दी	**डॉ. सतेन्द्र कुमार जैन**	116
आचार्य श्री कृत साहित्य : संस्कृति का अनुनाद	**डॉ. नीलम जैन**	118
आचरण की पूज्यता से ही चरणों की पूज्यता है।	**डॉ. प्रभाकिरण जैन**	121
युगपुरुष आचार्य वसुनंदी जी महाराज	**डॉ. रूबी जैन**	124
आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज	**डॉ. सरोज जैन**	126
श्रमण संस्कृति उन्नायक : आचार्यश्री	**डॉ. ममता जैन**	127
नहिं कृत उपकारं साधवः विस्मरंति	**अभिनंदन दिवाकर**	129
एक लाजवाब संत-आचार्य श्री वसुनंदीजी	**अनूप चन्द्र जैन**	133
वात्सल्य के धनी आचार्य श्री वसुनंदी जी	**जिनेन्द्र जैन शास्त्री**	135
शत्-शत् उन्हें प्रणाम है। वसुनंदी जी नाम है।।	**दीपा जैन**	137
लोक-मंगलकारी प्रसंग-आचार्यश्री	**सतीश जैन**	141
महान ज्ञानोपयोगी	**एम. हुक्मी चंद्र जैन**	143
शत्-शत् नमन-आचार्यश्री को	**प्रेमनारायण वारेश्व**	144
अनमोल रत्न	**प्रवीन जैन**	145
महावीर के लघुनन्दन आचार्य वसुनन्दी जी	**संजय कुमार जैन**	146
आचार्य श्री वसुनंदी जी	**संजय जैन ''संजू''**	148
मधुरता सरलता और मृदुता के धनी-आचार्यश्री	**शैलेष जैन**	150
गुरुवर मेरे भगवान है	**सुरेन्द्र कुमार जैन 'मिन्टू'**	152
अविस्मरणीय संस्मरण	**पारस जैन**	155
आचार्य श्री के चरणों में बारम्बार नमोऽस्तु	**निलेश कहाते**	160

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी

परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज नाम आज किसी का मोहताज नहीं है। चहुं ओर आपकी यशोगाथा का गान सुन रहा हूँ। आपकी चर्या जन कल्याण और लोक कल्याण वाली है आपका लौकिक और आध्यात्मिक ज्ञान दोनों ही अपनी चरम सीमा को पार कर चुके है, आप में अपार ज्ञान का भण्डार है जिसे हम सोच भी नहीं सकते है सागर की तरह अथाह है। आपके द्वारा जब प्राकृत भाषा का विपुल साहित्य प्रकाश में आया तो ये जगत भी अपने आप में आश्चर्य चकित रह गया। जब 22-23 सितम्बर 2017 को ग्रीन पार्क में संगोष्ठी हुई तो उसमें लगभग 40 विद्वान पधारे थे तब आचार्य श्री के प्राकृत भाषा के कई ग्रन्थों की संगोष्ठी हुई थी उसमें आचार्य श्री द्वारा लोक कल्याण मयी साहित्य को देखकर सभी विद्वान आश्चर्य कर रहे थे, तभी मेरे मन में एक विचार आया कि अगर समय रहते इस हीरे को नहीं परखा तो समय बहुत निकल चुका होगा, इसलिए हम यह सुकार्य के लिए तत्पर हो गए। आ. श्री की लेखनी में गजब का जादू है उससे भी अधिक आपकी वाणी का प्रभाव सभी ने साक्षात् देखा है कि किस प्रकार आपका शिष्यों को और श्रावकों को पढ़ाने की कला जिसे अगर कोई मनोयोग से एक बार भी पढ़ ले तो समझों उसे कण्ठस्थ हो गया। चाहे आपकी चर्या हो या चर्चा सभी ही आगम के अनुकूल है। आपका आगम व्याकरण और अनुयोग के साथ-साथ जो छन्द-काव्य की कला देखी है वह काफी अद्भूत और विस्मयकारी है।

आपकी काव्य व गाथाओं की श्रृंखला को देखकर ऐसा लगता है मानो माला में मोती पिरो दिये हो। मुझे तो ऐसा लगता है कि अनुभूति की तीव्रता ही ऐसा दुर्लभ कार्य कर सकती है, जिसे देखकर व सुनकर विद्वान वर्ग दांतो तले अंगुलियां दबाने लगे तब तो लगता है कि आज किसी पूर्वाचार्य का ही जन्म हो गया है जो मात्र दो दिन में ही एक ग्रन्थ पूर्ण कर देते है, आश्चर्य नहीं ये बहुत आश्चर्य है आपके द्वारा अभी तक

लगभग 20 प्राकृत ग्रन्थों की पूर्णिता हुई है अभी भी निरंतर कार्य प्रगतिशील है। एक और आश्चर्यकारी बात है कि आ. श्री इन ग्रन्थों को स्वयं नहीं लिखते है, मात्र शिष्य-शिष्यों को अपने चिंतन से गाथाएँ व सूत्र लिखवाते है फिर शिष्य-शिष्याएं ही कम्पोजिंग कराते है, प्रुफ करते है व प्रकाशन कराते है। कभी-कभी तो आ. श्री विहार करके आये या फिर आहार करके आये लोगों को देखने में तो लग रहा है कि आप विहार कर रहे है या आहार कर रहे है लेकिन गाथाएं व सूत्र आपके मनो मष्तिक में चलते रहते हैं।

आचार्य श्री के द्वारा लगभग 250 पुस्तकों का लेखन व सम्पादन हुआ है। आपको ज्ञान-ध्यान व चर्या के अलावा एक मिनट का फालतू समय नहीं है चर्या के क्षेत्र में शहरों में रहते हुए भी अपनी चर्या को बिल्कुल ही आगम के अनुकूल बनाकर रखा है। विवादित विषय को आप कभी छोड़ते ही नहीं हो फिर चाहे वह साधुओं का विषय हो अथवा श्रावकों का विषय है।

मेरे मायने में तो आप अनुभूति के गहरे सागर है जिसे हम न तो किसी यंत्र से नाप सकते है और ना ही अपने शब्दों से उन्हें आंक सकते है मात्र अपने अन्तरंग में अनुभव ही कर सकते है।

आज कई विद्वान आ. श्री के सूत्रों को अपने प्रवचनों में कहने लगे है व कई विद्वान आपके साहित्य पर पी.एच.डी. की तैयारियां करने लगे है, क्योंकि अध्यात्म जगत के शिरोमणि आ. श्री कुन्दकुन्द स्वामी के बाद ये सुअवसर आज हम सभी को प्राकृत भाषा के ग्रंथ पढ़ने को प्राप्त हुआ है, आप और भी 3-4 साधुगण प्राकृत साहित्य को लिखने का प्रयास कर रहे है यह जैन साहित्य के लिए बड़ी ही प्रंशसा की रात है।

यह सब देखकर हमने अपने आचार्य श्री के प्रति कुछ शब्दों के पुष्प बनाकर अर्पण किये है, ये शब्द भी उन्हीं के है मैं तो मात्र शब्दों को बनाकर व बनवाकर भाव रूपी माला में पिरो रहा हूँ, मैं क्या कर रहा हूँ इस बात की सोच परमात्मा के हाथों में सौप दी है अच्छा है तो गुरु चरणों में समर्पित है और अगर अच्छा नहीं लगे तो भी उन्हीं के चरणों में अर्पण है, क्योंकि ये पुष्प भी उन्हीं की बगिया के है।

पूर्व में भी आ. श्री की यशोगाथा पर कुछ साहित्य प्रकाशित हुआ था हमारे द्वारा जिसमें आ. श्री वसुनन्दी विधान, हस्ताक्षर, परिचय के गवाक्ष में, स्वर्णोदय, जन्म स्वर्ण जयंती महामहोत्सव, आचार्य श्री वसुनन्दी प्रश्नोत्तरी, आदि-आदि कृतियां थी उन्हीं में यह पुष्य भी सम्मिलित कर लेना। इस कृति में भारत भर के कई विद्वानों व बुद्धिजीवों ने अपने मनोभाव लिखकर हमारे मनोबल को बढ़ाया है, यह कृति भी आ. श्री की वास्तविक यशो गाथा का बखान करेगी, सभी विद्वत वर्ग व मनीषी गण धन्यवाद के पात्र है, जिन्होंने मात्र हमारे छोटे से प्रयास को उच्च शिखर तक पहुँचाया है। वह सभी विद्वान साधु वाद के पात्र है हम उन्हें आ. श्री का आशीर्वाद प्रदान करते है और भविष्य में भी इसी प्रकार की अपेक्षा करते है। इस कार्य के लिए संघ के सभी साधुगणों का भी पूर्ण सहयोग रहा है।

इस पुस्तक की पावन प्रेरणा मुझे क्षुल्लिका श्री निर्वाणनन्दनी माता जी से ही मिली थी, क्योंकि आप प. पू. आ. श्री वसुनन्दी जी महाराज को अपना गुरु मानती थी, उन्हीं की सत्त प्रेरणा से हमारा यह कार्य सफल हुआ है और आपके ही पुण्य स्मरण के लिए इस कृति का प्रकाशन हो रहा है। इस कृति को तैयार करने में जो सहयोगी बनी ऐसी बा. ब्र. नन्दनी जी एवं बा. ब्र. ऋजुता जी रही है कि जो हर कार्य को सफल करने के लिए निरन्तर तैयार रहती है वह भी धन्यवाद व साधुवाद की पात्र है। अंत में उन्हें भी गुरु का आशीर्वाद है जिन्होंने इस कृति को प्रकाशित कराके जन-जन को लाभ दिया है ऐसे श्री सुभाषचन्द्र जैन, देवकुमार जैन सपरिवार सहारनपुर वासी जो स्वयं ही एक गुरु भक्त है जिन्होंने अपनी चंचला लक्ष्मी का सद्उपयोग किया है व गुरु भक्ति में अर्पण किया है उन्हें भी साधुवाद है और इसी प्रकार सभी जन धर्म कार्य में लगे रहे।

कार्तिक शुक्ला तेरस — आपका अपना

2/11/2017 — **ऐलक विज्ञानसागर**

वी.नि.सं. 2544 — अतिशय क्षेत्र जय शांतिसागर निकेतन,

वि. सं. 2074, श. सं. 1939 — मंडौला, जिला गाजियाबाद (उ.प्र.)

गुरु कृपा से मिला जीवन का आधार

गुरु कृपा से मिला,
जीवन का आधार।

वसुनंदी हृदय बसे,
बता रहे है सार॥

निर्वाण नंदिनी दिखा रही है,
समता की रसधार।

युग-युगांतर तक रहे,
वात्सल्य-प्रेम भण्डार॥

अभीक्ष्ण ज्ञान का कलश लिया है

अमृत रस को बाँट रहे।

माँ की ममता देखी हमने,
केशर की बगिया बाँट रहे॥

दोनों का सहयोग रहा है,
सिर पर देखों हाथ रहा।

आप हमारे पूज्य गुरुवर,
केशर माँ का साथ रहा॥

नंदिनी दीदी, ऋजुता दीदी

अतिशय क्षेत्र जय शांतिसागर निकेतन, मंडौला (गा.बाद)

26.11.20017

धर्म एवं अध्यात्म के तत्वज्ञानी आचार्यश्री

आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज मानव जीवन में जन्म लेकर साधना के साथ सफलता की ओर अग्रसर हो रहे हैं और गुणों की खेती करना सिखाती है उनकी जीवन शैली। चेतना में खुले वैराग्य का झरोखा है उनका जीवन।

ॐ वंदे वसुनंदी आचार्य जगद्गुरुम्।
पादपद्मे तयोः श्रित्वा प्रणमामि मुहुर्मुहुः॥
मीठे प्रवचन से जग में जिनका नाम है।
आचार्य वसुनंदी जी को चेलना का प्रणाम है॥

आपकी संवेदना एवं भावना की गहराई एवं सघनता के कारण जनता जनार्दन के बीच एक गहरा लगाव एवं आस्था-श्रद्धा का संबंध विनिर्मित हुआ है और इसी कारण से आज ऐलक श्री विज्ञानसागर जी अनेकों भक्तगत को साथ लेकर आपकी चर्या-चर्चा एवं प्रश्नोत्तरी के माध्यम से आपके जीवन परिचय को चरितार्थ कर रहे हैं।

आप सतत तपस्या संयम-ध्यानाध्ययन की ऊर्जा से ऊर्जावान रहते हैं, अतः आप अपनी ऊर्जा का बहुमूल्य अंश स्व-पर कल्याण की जड़ को सिंचित करने के लिए नियोजित करते रहते हैं, जिससे आज इसका आंतरिक विकास निर्बाध रूप से होता रहता है।

आपकी ऊर्जा से भक्तगण शिष्यगण त्यागीगण अनमोल आध्यात्मिकता से सदा उपकृत एवं लाभान्वित होते रहेंगे। आपका यह आध्यात्मिक जीवन जन-जन के हित के लिए जागृत बने, निर्बाध गति से आगे बढ़ते रहे। आपकी जीवन शैली को, आपके पास आने वाले भक्तगण-प्रत्यक्ष-परोक्ष में भक्ति करने वाले प्रत्येक व्यक्ति अपनी धड़कनों में सांसों में रग-रग में गुरु को बसा ले और गुरु-आदेशों को आचरण में लाने के लिए सदा तत्पर रहे। सच्चा गुरु वहाँ पहुँचा देता है, जहाँ शिष्य अपने पुरुषार्थ से कभी नहीं पहुँच सकता है, अतः हे वसुनंदी गुरुवर! आप महान हैं।

ऐलक श्री विज्ञानसागर जी के द्वारा 1000 प्रश्नोत्तरी निश्चित साधकों

की साधना में चित्त निर्मल होगा। इससे कम संस्कार से उपजे सांसारिक मोहपाश ढीले पड़ेंगे। साथ ही भक्त के जीवन चेतना में वैराग्य का प्रादुर्भाव होगा। ऐसा हो पाना सांसारिक जीवन की महती उपलब्धि है, क्योंकि संसार के विभिन्न पाशों में बंधा-फंसा जकड़ा जीव कभी भी स्व चेतना की ओर उन्मुख नहीं हो सकता। ऐसा केवल तभी संभव है, जबकि उसकी चेतना में वैराग्य का झरोखा खुले। इस वैराग्य के प्रखर होते ही उसके चित्त के कल्मष धुलते हैं और वह गुरु भक्ति की कृपा का आहवान करने में समर्थ होता है।

आपका हृदय अत्यंत पावन एवं पवित्र है और इस हृदय से निकलने वाली आवाज बहुत दूर तक पहुँचती है।

उद्देश्य श्रेष्ठ हो, लक्ष्य महान हो एवं दिल में प्रबल भावना हो तो किए गए कार्य का प्रभाव तो परिलक्षित होगा ही। वसुनंदी गुरुदेव का लक्ष्य स्व पर कल्याण भक्तों की स्वतंत्रता बने। आपने अपने स्वर के माध्यम से धीरे-धीरे स्त्री पुरुष, बाल वृद्ध सभी को अपने प्रभाव में ले लिया। मीठे यह स्वर गांव में, कस्बे, शहर, नगर, महानगर होते हुए समस्त समाज में प्रसारित हो गया और जर्जर समाज के व्यक्ति में अनियमित जीवन जीने वाले जैनियों के अंतर में प्रार्थना के स्वर फूटने लगे। कई भक्त गुरु भक्ति का आह्वान करने लगे। कई भक्त गुरु छत्र-छाया का आसरा लेकर जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर ली ये गुण आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज की जीवन चर्चा का ही फल है जो आपमें विद्यमान है।

आचार्य श्री वसुनंदी की जय हो,
दर्शन ज्ञान चारित्र अक्षय हो।
चेलना दीदी नित शीश नवाये,
पावन दर्शन मंगलमय हो।।

आपका आध्यात्मिक जीवन मेरे जीवन के शिक्षास्प्रद बने। मैं भी कुछ गुण ग्रहण कर सम्यक् मार्ग पर अग्रसर होऊँ।। आप दीर्घायु सतायु रहे, स्वस्थ रहे, ये ही मंगल शुभभावना के साथ श्रद्धा सुमन समर्पित।।

बा.ब्र. चेलना, त्रियोगाश्रम, श्री सम्मेद शिखर जी, झारखण्ड

ज्ञान साधना के स्वामी - आचार्यश्री

समीचीन दर्शन महिमा की मंदाकिनी, ज्ञान-गरिमा की गोदावरी और चारित्रिक सुगंधी की सरस्वती की अजस्र धारा रूप प्रवाहित श्रमण परम्परा में तात्विकता एवं सात्विकता, ज्ञान और तप, मृदुता और गंभीरता, ऋजुता एवं तत्परता के माणिकांचन योग से सुशोभित अभीक्ष्ण ज्ञानोयोगी, स्याद्वाद केसरी आचार्य श्री 108 वसुनंदी जी मुनिराज अपने बहमुखी एवं चुम्बकीय व्यक्तित्व के कारण जन-जन के श्रद्धा के पुंज बने हुए है।

आचार्य श्री श्रमण परम्परा के ऐसे दैदीप्यमान दिवाकर हैं जो मान-सम्मान की चाह और वाह से कोसों दूर नजर आते हैं, सरलता सहजता एवं संयम जिनके पर्याय हैं जो चिंतन, मनन, लेखन सम्पादन एवं उद्‌बोधन के क्रम में सदा अप्रमत्त भाव से डूबे रहते हैं, सौम्यता, शालीनता एवं गांभीर्य जिनके व्यक्तित्व की खास पहचान है, जो ओजस्विता एवं पुरुषार्थ के लिए निरन्तर प्रयन्तशील रहना जिनकी प्रकृति का महत्वपूर्ण पहलू है, प्रज्ञाचिंतन एवं अनुभव की गहनता, संवेदना की सूक्ष्मता, भावों की तरलता एवं कोमलता, सृजनात्मकता, मौलिक चिंतन वस्तुत्व के निष्पक्ष प्रतिपादन की क्षमता जिनकी लेखनी का सार है, जो हृदय में सरलता, ज्ञान सम्पन्न मस्तिष्क, वाणी की मधुरता, वात्सल्यपूरित नेत्र, गंभीर और सौम्य वदन, मिष्ट स्मित युत अधरोष्ठ आदि नाना भूषणों से अलंकृत हैं।

बहुधा अन्तस् में एक स्वर मुखरित होता है यथा समा-विषम, अनुकूल-प्रतिकूल सभी परिस्थितियों में सदा सन्तुलित रहा जा सकता है? जैसे ही आचार्य श्री के मुखमण्डल की तरफ दृष्टि जाती है प्रश्न सहज ही समाधान को प्राप्त हो जाता है। चाहे विपदाओं की काली रेखाएं हो या सर्व-सम्पदाओं का उजियारा, वे सभी परिस्थितियों में गजब का सन्तुलन बनाये रखते हैं विपदाओं की काली रेखाएं उन्हें नयी ऊर्जा और नवीन उत्साह उत्साह से सम्पन्न कर देते हैं। और संपदाओं को संवेश नव्य स्फूर्ति से भर देते हैं।

आचार्य श्री ऐसे अद्‌भुत व्यक्तित्व के धनी है कि वे प्रसिद्धि के दास न बनकर सदा ज्ञान-साधना के स्वामी कहलाये हैं। उनका आभामण्डल इस बात का ठोस प्रमाण है। एक अनिर्वचनीय आत्मशांति एवं आत्मतृप्ति की अनुभूति होती है उनके आभामण्डल में प्रवेश करने के पश्चात्। उनका निरभिमानी अप्रमत जीवन प्रत्येक मनुष्य के लिए आदर्श की भांति प्रतीत होता है।

मन स्तब्ध रह जाता है यह सोचकर कि प्राकृत की गाथाओं को कण्ठस्थ कर निराबाध गति से बोलना भी जब दुष्कर एवं दुर्लभ है तब विषय-वस्तु संयोजना अक्षर मात्राओं की गणना के साथ मूल गाथा की रचना बिना रूके गद्य व लेखन की गति से पद्य का सृजन गुरुजी के लिए कितना सहज और सरल है, नि:संदेह हमारी गद्य उच्चार गति व लेखन-क्षमता मंद पड़ सकती है परन्तु आचार्य श्री द्वारा निबद्ध प्राकृत और संस्कृत में अनवरत मौलिक चिंतन बेमिसाल होता है, फिर चाहे व गद्य में हो या पद्य में।

षडावश्यक आदि श्रमणोचित क्रियाओं का निर्दोष निराबाध पालन, अध्ययन-अध्यापन, प्रवचन एवं शंका-समाधान के साथ अपनी व्यस्त दिनचर्या को स्वस्थ बनाने के लिए स्वपर कल्याणार्थ साहित्य सृजन हेतु समय निकालना श्लाघनीय ही नहीं वंदनीय भी है जो भारतीय वांगमय को तो समृद्ध करता ही है साथ ही जैन संस्कृति के संरक्षण और संवर्द्धन में भी महतीय योगदान प्रदान कर रहा है। भावों की विशुद्धि के लिए प्रेरक विधानों की रचना, मीठे प्रवचन, विज्जावसु सावगायारो, रट्ठसंती महाजागो, अज्ज-संस्किदी, धम्मसुत्तं, जदि किदि कम्मं, अप्प सुत्तं, जिणवयणसारो, जिणवर धोत्तं, णिग्गंथ युदी, रयणकंडो, णमोयार महापं, अंते समाहि मरणं, विश्वधम्मो, अहिंसागाहारो, आदि लगभग 30 प्राकृत मूल ग्रन्थों की रचना, संस्कृत टीका ग्रन्थों का सर्जन, जीवनोपयोगी हिन्दी प्रवचन, सूक्ति, सूत्रों की पुस्तकें, प्राचीन आचार्यों के ग्रन्थों का सम्पादन आदि महत्वपूर्ण कार्य ऐसी अनुपम निधि है जिससे वर्तमान समाज लाभान्वित हो रहा है।

वस्तुतः संसार में सर्वाधिक क्लिष्ट है गुरु के सम्बन्ध में अपने भावों को शब्दों की पोशाक पहनाने का उपक्रम है क्योंकि श्रद्धा या समर्पण को शब्दों में बांधने का प्रयास उसे भौतिक बना देता है परन्तु यह तो एक अभौतिक अथवा अनुभूत्यात्मक आस्वान है जो गूंगे के गुड़ की भांति मात्र अनुभूति का विषय है, वर्ण का नहीं। अतः अपने अविराम भावकों को संजोए हुए शब्दों को विराम देकर आचार्य श्री को सिद्ध, श्रुत आचार्य भक्ति सहित नमोस्तु निवेदन करती हूं।

बा.ब्र. प्रज्ञा दीदी
(संघस्थ आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज)

तन को इतना तपा दिया है,
तन को ही कुन्दन कर डाला।
वाणी पर अधिकार किया है,
वाणी में जादू भर डाला।
मोक्ष मार्ग के निस्पृह योगी,
मेरा वंदन स्वीकार करो।
भटक रहे है कई जन्मों से,
मेरा भी उद्धार करो।

–साभार 'स्वर्णोदय'

करुणामूर्ति आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज

गुरु की महिमा अनंत है, अनंत किया उपकार।
लोचन अनंत उघारिया, अनंत रिखावन हार॥

गुरु की महिमा अनंत है। उन्होंने मानव जीवन पर अनंत उपकार किये हैं। गुरु ने मनुष्य के उन लोचनों को उघाड़ा है जिनसे उसने अनंत के दर्शन किये हैं और आत्म साक्षात्कार कर उसे परमात्मा बना लिया।

साधना के शिखर, प्रखर आध्यात्मिक चिंतक, उत्कृष्ट चारित्र के धनी, करुणा मूर्ति, वात्सल्य जिनके रोम-रोम से झलकता है, ऐसे पू. गुरुदेव आ. श्री वसुनंदी जी महाराज के जो एक बार दर्शन करता है वह चुम्बक की तरह खिंचा चला आता है।

गर्मी का मौसम था, ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी। आ. श्री जी अपने संघ सहित तत्व चर्चा में लीन थे। उसी समय अचानक एक कबूतर आया और पू. गुरुदेव के हाथ पर बैठ गया, वह घबड़ाया हुआ था, जैसे ही आ. श्री ने उसे देखा और कहा घबराओ नहीं ''मैं हूं ना'' वह कबूतर बार-बार आ. श्री को देख रहा था और मानो वह अंदर से भक्ति कर रहा हो, गुरुदेव को अपना दुख दर्द बता रहा हो, और वह अपने शब्दों में गुरुदेव का जयकारा लगाते हुए उड़ गया। पू. गुरुदेव ने सभी पर अनंत उपकार किये। जिस प्रकार आकाश के तारे गिनना असंभव है, उसी प्रकार गुरुदेव के उपकारों के प्रति कुछ भी कहना समुद्र के जल से समुद्र को संतरित करना है।

पू. गुरुदेव के श्री चरण-कमल में त्रय भक्ति सहित कोटि-कोटि नमोस्तु समर्पित करती हूँ।

बा.ब्र. सौम्या

(संघस्थ आ. श्री वसुनंदी जी मुनिराज), इन्दौर

संतों का देश है भारत

भारतवर्ष ऋषि प्रधान भूमि रही है। बड़े-बड़े ऋषि महर्षि की पुण्य भूमि रही है। जिन्होंने स्वपर हित हेतु अनेक महान कार्यों के द्वारा जनता का उद्धार किया है-जिस प्रकार चन्द्रमा की चांदनी, ताप को मिटाती है, गंगा की धारा पाप को मिटाती है, कल्पवृक्ष संताप को दूर करता है इसी प्रकार महानात्माओं के महान विचार, ताप, पाप, संताप इन सभी को दूर करते हैं। ऐसे ही महानु पुरुषों की श्रंखला में एक नाम आता है-आचार्य श्री वसुनन्दी जी म.सा. जिनका जीवन अपने आप में एक दिव्य भव्य अनुपम रहा है। जिनके विषय में कुछ कह पाना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। इस छोटी जिह्वा के द्वारा आचार्य श्री जी के महान कार्यों का वर्णन एवं उनका गुणानुवाद करना असम्भव प्रतीत होता है। आप श्री जी अनेक शिष्य रत्नों में से एक है-ऐलक पूज्य श्री विज्ञानसागर जी म. जिनके द्वारा संचालित संस्था 'जय शांतिसागर निकेतन'। जहां पर अक्सर संत साध्वी जी म. विचरण करते हुए जय शांति निकेतन में विश्राम अवश्य लेते हैं। यहां के पूरे स्टाफ की सेवा भावना सराहनीय है। आचार्य पूज्य मुनि श्री वसुनन्दी जी म.सा. के 50वें जन्म जयन्ती महोत्स्व की अपार खुशियां एवं बधाईयां समग्र जैन समाज का प्राप्त है।

अन्त में इतना ही कहते हुए अपनी लेखनी को विराम देती हूं।

तुम जिओ हजारों साल, साल के दिन हो पचास हजार।

उ.प्र. साध्वीरत्न श्री राधा जी म. की सुशिष्या

साध्वी बिन्दु श्री जी म.सा.

प्रकृति विद्या के संप्रेरक

जिनशासन अनादि निधन है, काल चक्रानुसार कई चौबीसी एवं चक्रवर्ती एवं चक्रवर्ती शासन हो चुके हैं। वर्तमान काल के आद्य तीर्थंकर श्री आदिनाथ भगवान की परम्परा में अंतिम तीर्थेश महावीर भगवान हुए हैं। बौद्ध धर्म प्रवर्तक गौतम बुद्ध भगवान महावीर स्वामी के समकालीन होने के कारण सामान्यतः सभी साहित्य एवं संस्कृति विद्वान भगवान महावीर को जिन शासन के प्रवर्तक मानते हैं। जबकि वह इस काल के अंतिम हैं, जिनके शासन काल में अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह का उद्घोष हुआ है। आपके शासन काल में जिन साहित्य एवं बोलचाल की भाषा प्राकृत थी। इसीलिए अधिकांश शास्त्र एवं साहित्य का सृजन प्राकृत भाषा में ही किया गया है। आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी, यति वृषभाचार्य, नेमिचन्द्रचार्य सहित कई आचार्यों ने इसी भाषा में साहित्य रचकर माँ सरस्वती के भण्डार को सुलभ बनाया है।

काल चक्र के परिणमन से शनै-शनै इस भाषा का प्रयोग कम होने तथा संस्कृत भाषा का प्रचुर प्रयोग होने से इसका अस्तित्व क्षीण होने लगा। वर्तमान काल में प्राकृत भाषा को जन भाषा का आधार बनाने का प्रयास कई आचार्यों एवं मुनिराजों ने किया। परन्तु इनमें मौलिक साहित्य सृजन का सम्यक् पुरुषार्थ आचार्य वसुनंदि महाराज ने किया है। आपके द्वारा सृजित सूत्र ग्रंथ, सरल, सुबोध एवं हृद्यगम्य होने के साथ साथ आपसी संवाद को भी सार्थक करने में सक्षम है।

जैन धर्म का प्रथम प्रवेश णमोकार मंत्र एवं चत्तारि दंडक के रूप में होता है जिसे प्रत्येक जिन धर्मी अपने जीवन का आधार बनाता है। आज स्वाध्याय के प्रति अरुचि एवं सांसारिक व्यामोह में आशक्त मानव प्राकृत भाषा से विमुख हो रहा है, परंतु आचार्य श्री वसुनंदी महाराज का यह सशक्त प्रयास जन-जन में प्राकृत भाषा के प्रति रुचि एवं उत्साह जागृत करेगा।

मेरी भावना है आचार्य श्री के साहित्य से सभी जैन धर्मानुरागी जिन शासन की मूल प्राकृत भाषा को अपने जीवन की भाषा बनायें। आत्मकल्याण का पथ प्रशस्त करें।

ब्र. जय कुमार जैन 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)

सरस्वती पुत्र आचार्य वसुनन्दी जी

सरस्वत्या प्रभादेन, काव्य कुर्वन्ति मानवाः।
तस्मात् निश्चल भावेन, पूजनीया सरस्वती॥

माँ सरस्वती के प्रसाद से ही जीव की बुद्धि काव्यादि को करने का ज्ञान प्राप्त होता है। इसीलिये छहढालाकार पं. दौलतराम ने लिखा।

ज्ञान समान न आन जगत में, सुख को कारण।
इह परमामृत जन्म, जरा, मृतु रोग निवारण॥

आचार्य वसुनंदी जी द्वारा संपादित, रचित, अथवा अनवादित विपुल साहित्य द्रष्टव्य होता है। आचार्य श्री बहुआचार्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग बनाये रखने के लिये, ज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थ, ज्ञानपिपासुओं की पिपासा शान्त करने के लिये सूक्ति, गद्य, पद्य विद्याओं के माध्यम से सुधी पाठकों के लिये विपुल साहित्य का भण्डार देकर उपकृत किया।

षोडशकारण भावनाओं में भी अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग का महत्वपूर्ण स्थान है। श्रावक के प्रथम आवश्यक देवपूजा आवश्यक में भी आचार्य पूज्यपाद द्वारा रचित शान्तिभक्ति में शास्त्राम्यासो जिनपति नुतिः संगतिः सर्व दार्यैः वाक्य कहकर निरन्तर चारों अनुयोगों का सम्यक् गुरुमुख से अध्ययन करना चाहिये। ऐसा उपदेश है?

जीव में ज्ञानगुण प्रधानगुण है इसी आशय को लेकर आचार्य नेमिचंद्र सिद्धान्त चक्रवर्ती ने गोम्मटसार जीवकांड में कहा है। ज्ञान से ही जीव की पहिचान होती है ज्ञान सम्यक् हो तो संशय, विपर्य और अनध्वसाय रहित ज्ञान ही मोक्षमार्ग में सहायक होता है।

इक्कीसवी सदी के अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री के चरणों में कोटि कोटि वंदन करते हुए उनकी दीघार्यु हो ऐसी भावना भाता हूँ।

देशव्रती प्रतिष्ठाचार्य कमलेश कुमार जैन
गुलाब वाटिका, लोनी, गाजियाबाद (उ.प्र.)

लेखनी लिखती गई

जो प्रतिदिन व्रत, मंत्र रूप होम में निरत है, ध्यानरूपी अग्नि में शीघ्र हवन करने वाले है, षट् आवश्यक क्रियाओं में लीन है, तप रूपी धन ही जिनका धन है, साधु की क्रियाओं को साधने वाले है, 18 हजार शील ही जिनके ओढ़ने का वस्त्र है, 84 लाख गुण ही जिनके शास्त्र हैं, चन्द्र और सूर्य से भी अधिक जिनका तेज है, मुक्ति महल के द्वार को खोलने में जो मट है ऐसे साधुजन मुझ पर प्रसन्न हो।

'अचलानव्यपेत निद्रान, स्थानयुतान्कष्ट दुष्ट लेश्या हीनान्।
विधि नानाश्रित वासा, नलिप्त देहान्विनिजितेन्द्रिय करिणः॥'

घोर उपसर्ग परीषहों को जीतने में जो पर्वत के समान अचल हैं, प्रमाद, आलस्य, निद्रा रहित हैं, कायोत्सर्ग सहित है, कष्ट व दुःख देने वाली, नीच गति में ले जाने वाली कृष्ण-नील-कापोत ऐसी 3 अशुभ लेश्या रूपी परिणामों से जो रहित हैं, जिन्होंने चरणानुयोग में कथित विधि के अनुसार पर्वत, मंदिर, गुफा आदि अनेक स्थानों में निवास किया है अथवा विधिवत् घर का त्याग कर ''अनाश्रितवास'' किया है, जो घर रहित हैं, जिनका शरीर केशर, चंदन, कस्तूरी आदि सुगंधित द्रव्यों या भस्म आदि से लिप्त नहीं है, जो इंद्रिय रूपी हाथियों को वश में कर विजेता कहलाते हैं, ऐसे हमारे पूज्य गुरुदेव के बारे में क्या लिखूँ? उनके महानतम गुणों का बखान तो वाचस्पति भी नहीं कर सकता, फिर भी मेरी भक्ति मुझे उत्साहित करती है कि स्वर्ण-जयंती के अवसर पर लिखो, विनयांजलि अर्पित करो, मैं पूज्य गुरूदेव को क्या दे सकता हूँ? जो कुछ मेरे पास है उन्हीं का है, मेरी माँ का तो मात्र गर्भ में रखने का उपकार है इसके उपरांत सारे उपकार पूज्य गुरुदेव के हैं, आज जो मैं यहाँ तक पहुँचा हूँ ये सब गुरुजी की ही देन है, मैं तो नन्हा सा बालक था, मुझे चलना भी नहीं आता था, आज अंगुली पकड़कर 'विधानाचार्य' के रूप में खड़ा कर दिया। मुझको ही नहीं मेरे भाई मनोज को भी 'प्रतिष्ठाचार्य' के संस्कार अपने कर-कमलों से किये, ऐसे पूज्य गुरुदेव के बारे में क्या लिखूँ? बस इतना कहता हूँ। ''जब तक तन में प्राण है गुरुजी की सेवा में बीतें, मेरा अंतिम समाधि-मरण पूज्य गुरुदेव की गोद में हो, और मेरे पूज्य गुरुदेव शतायु हो, लोकप्रिय हो। तीर्थंकर सम उनका यश फैले, इन पवित्र भावनाओं के साथ पूज्य गुरूदेव के पावन चरणों में-त्रय भक्ति पूर्वक 'शत्-शत् नमन्'। **ब्र. संजय शास्त्री,** सिद्धक्षेत्र आहार जी, म.प्र.

वसुनन्दिपञ्चाशिका

पुण्यानां प्रचयोदेन वसुधालङ्कारभूतंसुतं
भौमे लोकसुनेत्रशून्यनयने संवत्सरेऽलौकिकम्।
राजस्थानपवित्र धौलनगरे माता त्रिवेणी शुभा
जैनानां मिहिरोपमं प्रसुषुवे दिव्यं ह्यमायां तिथौ॥1॥

शुभ माता त्रिवेणी ने 2023 संवत्सर में राजस्थान स्थित पवित्र धौलपुर में अमावस्या तिथि, मंगलवार के दिन पुण्योदय होने पर जैनियों के सूर्य के समान पृथ्वी के अलंकारभूत अलौकिक पुत्र को जन्म दिया।

रिखबचन्द्रजो बालो ववृधे रविवत्प्रियः।
दिनेशजैननाम्नायं मोहयन् स्वजनान् गुणैः॥2॥

पूज्य (पिता) रिखबचन्द्र के इस प्रिय पुत्र ने रवि के समान दिनेश जैन नाम से आत्मीय जनों को गुणों से मोहते हुए बढ़ना आरम्भ किया।

दृष्ट्वाकस्मिकमृत्युमेष सदयो यूनो विरक्तिं गतः
दीक्षां श्रीविमलाख्यसागरगुरोः स ब्रह्मचर्यात्किीम्।
लब्ध्वा क्षुल्लकदीक्षणं जिनमतिः ख्यातो जिनेन्द्राभिधः
चोपाध्यायपदेन निर्णय इतः नाम्ना श्रुतो भारते॥3॥

इस (दयालु) ने किसी युवक की आकस्मिक मृत्यु देखकर वैराग्य धारण कर लिया। श्री विमलसागर जी से ब्रह्मचर्य दीक्षा ले ली, क्षुल्लकदीक्षा के बाद ये जिनेन्द्रसागर नाम से जाने गए, तत्पश्चात् उपाध्याय पद पाकर निर्णय सागर के नाम से भारतवर्ष में विख्यात हो गए।

श्वेतापिच्छवतो मुनेः स कृपया विद्यावतो धीमतः
एलाचार्य पदं गतस्तु वसुनन्दी चाप्तवान् विश्रुतिम्।
भाषाणां निकरः प्रवाचकवरो जैनालये श्रावकैः।
सम्पूज्यो भुति शोभते गुरुवरो जैनाब्धिमुक्ताफलः॥4॥

तत्पश्चात् श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानन्दी जी मुनिराज से (आपने) एलाचार्य पद को प्राप्त कर लिया। अनगिनत भाषाओं को जानने वाले, जिनधर्म प्रवाचक शिरोमणि, जैनालयों में श्रावकों द्वारा सम्पूज्य जैन धर्म रूपी समुद्र

के मुक्तापुल आचार्य वसुनंदी जी मुनिराज नाम से विश्रुत हैं।

जैनाचारविचारसाररमणः शान्तो मुनिः सक्रियः
वन्द्यः सिद्धजिनेन्दमार्गनिलयो धीरो विरक्तः कृती।
संसारानलतप्तमानवमयं चोद्धर्तुमुत्कण्ठितः
धीमान् सद्गुरुरेव सैष वसुनन्दी ज्ञानदोऽज्ञानहा॥5॥

जैन आचार-विचार में रमे रहने वाले, शान्त, सक्रिय, वन्दनीय, मुनि, सिद्ध जिनेन्द्र के मार्ग पर चलने वाले, धीरे, विरक्त, रचनाकार, ज्ञान देने वाले, अज्ञान का नाश करने वाले विद्वान् सद्गुरु ये संसार के दुखों से तप्त मानव का उद्धार करने के लिए उत्कण्ठित रहने वाले वसुनन्दी मुनि जी हैं।

योऽनङ्गं तु विजित्य जैनकुलजो दृश्यो बुधो भारते
मन्ये हन्त दिगम्बरो जिनरुचिः ख्यातः सतां मानितः।
चानन्ताः कृतयो लसन्ति सरसाः गोष्ठीजुषां शोभनाः।
धन्योऽस्मद्गुरुरेव सैव वसुनन्दी ज्ञानदोऽज्ञानहा॥6॥

जिन्होंने कामदेव को जीत लिया है, जो भारतवर्ष में दर्शनीय विद्वान हैं, सज्जनों के माननीय जैनधर्म में रुचि रखने वाले दिगम्बर मुनि हैं, जिनकी अनन्त सरस कृतियाँ प्रसिद्ध हैं, वे ये सद्गुरु वसुनन्दी जी (महाराज) ज्ञान देने वाले और अज्ञान को नष्ट करने वाले हैं।

शिष्या यस्य समस्तभारतभुवि प्रायो भ्रमन्त्यानताः
सम्यग्दर्शनसच्चरित्रमतयो जैनागमानां बुधाः।
धर्माधर्मपरीक्षकाः श्रुतधियो देशान्तरे कीर्तिताः
मन्येऽस्मद्गुरुरेव सैष वसुनन्दी ज्ञानदोऽज्ञानहा॥7॥

मानो लगभग सम्पूर्ण भारतवर्ष में जिनके विनीत शिष्य दृष्टिगोचर होते हैं, वे शिष्य सम्यक् दर्शन, चारित्र बुद्धि वाले हैं, जो जैनशास्त्रों के ज्ञानी हैं, धर्म-अधर्म के परीक्षक हैं, उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैली है, वे ये सद्गुरु वसुनंदी जी महाराज ज्ञान देने वाले और अज्ञान का नाश करने वाले हैं।

साहित्ये रुचिमान् जिनेश्वरमते बद्धादरः कोविदः
धर्मे दत्तमनाः परार्थमनिशं सर्वस्वदानोत्सुकः।

जेतुं मृत्युभयं जिनेन्द्र कृपया यो दृश्यते निर्भयः
पूज्योऽस्मद्गुरुरेव सैष वसुनन्दी ज्ञानदोऽज्ञानहा॥8॥

साहित्य में (विशेष) रुचि रखने वाले, जैनधर्म के प्रति अटूट आदर रखने वाले, कोविद (विद्वान) धर्म के प्रति समर्पित मन वाले, परोपकार के लिए सब कुछ दान करने के लिए उत्सुक रहने वाले, जिनेन्द्र की कृपा से मृत्युभय को जीतने के लिए जो निर्भय रहते हैं, वे ये पूज्य, ज्ञान देने वाले और अज्ञान का नाश करने वाले वसुनंदी जी महाराज सद्गुरु हैं।

मोहं निस्त्रपमानवा जयत रे मायां दृढां श्रावकाः
रागद्वेषसमुद्भवां विषयगां जैनेश्वरं ध्यायत।
हा षाट्कौशिकनिर्मिते च मलिने देहे निलीनाः कथं
भक्तान् भाषत एव सैष वसुनन्दी ज्ञानदोऽज्ञानहा॥9॥

अरे निर्लज्ज मानवों! अरे श्रावकों! राग-द्वेष से जन्म लेने वाली विषयों में संचरण करने वाली दृढ़ माया को जीत लो, जिनेन्द्र का ध्यान करो। इस षाट्कौशिक मलिन देह में क्यों डूबे हुए हो? जो इस प्रकार से भक्तों को सदुपदेश देते हैं, वे ये ज्ञान देने वाले और अज्ञान का नाश करने वाले वसुनन्दी जी महाराज हैं।

ईर्ष्या पापनदीव दुःखसलिलासूया घृणा राक्षसी
रागो बन्धनबान्धवः सुखहरो रोगः प्रमादो मतः।
यानं वीतविरक्तसाधुवचनं चारुह्य मग्नो जनः
पारं यातु सुखं मुनिस्स वसुनन्दी भाषते सद्गुरुः॥10॥

सद्गुरु मुनिवर वे वसुनन्दी जी कहते हैं कि ईर्ष्या पाप की नदी है, असूया दुःखरूपी सलिल है, घृणा राक्षसी है, विषय राग बन्धन का कारण है, प्रमाद दुःखदायी रोग माना गया है, वीतरागमुनि का प्रवचन (संसार सागर से) पार करने वाला यान है, जिस पर चढ़कर संसार पार करो।

लब्ध्वा सज्जनसङ्गतिं नरवरो नक्रालयं सागरं
नूनं भीषणसर्वदुःखशमन श्रीमज्जिनेशं स्मरन्।
शीघ्रं कण्टकीर्णमार्गमचिरं पुष्पोपमं भावयन्
सर्वं संलभते पदं व वसुनन्दी भावते सद्गुरुः॥11॥

सद्गुरु आचार्य वसुनन्दी जी कहते हैं कि श्रेष्ठ मनुष्य सज्जनों की संगति पाकर मकरों से भरे सागर को अवश्य ही सभी दुःखों को दूर करने वाले जिनेन्द्र को याद करते हुए शीघ्रमेव काँटों में भरे मार्ग को पुष्प के समान समझता हुआ पार करके (उच्च) पद को पा लेता है।

वसन्तीह भूमावने वेक महान्तः
सुविज्ञा वदन्तीव ये तत्त्वमेते।
न कुर्वन्ति किन्तु प्रचारं जिनेन्द्र!
स्वधर्मस्य हा ते वृथा ज्ञानवन्तः॥12॥

बड़े खेद के साथ (आचार्य जी) कहते हैं कि इस भूमि पर अनेक महापुरुष निवास करते हैं, जो विद्वान होते हुए तत्त्वोपदेश करते हैं, परन्तु स्वधर्म का प्रचार न करने वाले व्यर्थ ज्ञानी हैं।

बन्धुः सुखी पुण्यमयी च माता
पिता प्रसन्नश्च पितामहश्च।
द्रष्टुं जिनेन्द्रं चलितस्य गेहात्
जगत् पुनीतं निगदन्ति विज्ञाः॥13॥

आचार्य श्री वसुनन्दी जी का मन्तव्य है कि जिनेन्द्र प्राप्ति के लिए जो गृहत्याग कर देता है, उसके बन्धु सुखी, माता पुण्यमयी, पिता और पितामत प्रसन्न हो जाते हैं, सन्तों का कहना है कि इस कार्य से संसार पवित्र हो जाता है।

मातुः पितुर्गुरुजनस्य तु कर्म चैतत्
संस्कारशिक्षणमये शिशवे न भोगः।
संस्कारहीन तनयो न स मानहेतुः
भोगः कुरोग इति जानत एव विज्ञाः॥14॥

आचार्य वसुनन्दी जी कहते हैं कि माता, पिता ओर गुरुजनों का यह कर्तव्य है कि अपने शिशु को संस्कार की शिक्षा दें, धन नहीं दें, संस्कारहीन पुत्र कदापि सम्मान कारक नहीं होता और भोग तो रोग होता है, यह बात समझदार लोग जानते हैं।

यस्मिन् सुदेशे जिनमन्दिराणि

उपाश्रयः श्रावकवर्गरावः।
धर्मानुरक्ता धनिनो विनीता
दृश्यः स देशः परमः पवित्रः॥15॥

आचार्य श्री वसुनन्दी जी के मुखारविन्द से यह ध्वनि निकलती है कि जिस देश में जिन मन्दिर है, उपाश्रय है, श्रावकों की आवाज गुंजित है तथा (जिन) धर्मानुरागी विनयशील धनी लोग निवास करते हैं, वह दर्शनीय देश परम पवित्र होता है।

संस्कारतो भवति भोः परमात्मलाभः
वित्तैर्न हन्त विपदः प्रभवन्त्यनेकाः।
तस्मात्सदैव गुरुभिः शिशवे चरित्र-
शिक्षादिमा मुहुरहो न धनं कदाचित्॥16॥

अरे मनुष्यों! संस्कार से परमात्मलाभ होता है, धन तो अनेक विपत्तियों का कारण होता है, इसलिए गुरुजन अपनी सन्तति को बार-बार चरित्र का पाठ पढ़ायें, धन कभी नहीं दें।

यान्तं पदाभ्यां शुभदं दिगम्बरं
पश्यन् रविर्मोदत एव खेचरः।
सङ्कोचयन् तापमसौ प्रजारतिः
जिनेश्वरं प्रार्थयते स्वरश्मिभि॥17॥

कल्याणकारी दिगम्बर मुनि को पद विहार करते देखकर आकाश गामी प्रजापति सूर्य अपनी ऊष्ण किरणों को खींचता हुआ (शीतल) किरणों द्वारा जिनेश्वर की प्रार्थना करने लगता है।

धर्मं विनाशयति सर्वधनं सुशिष्य!
सम्भाषते गुरुवरो वसुनन्दिनामा।
तस्माद्विक्तमनसा जिनधर्मवृद्धिः
कार्याजिनेन्द्रमतिभिर्निजमुक्तिहेतुः॥18॥

अरे सुशिष्य! धन धर्म को विनष्ट कर देता है, यह सारगर्भित प्रवचन आचार्य वसुनंदी मुनि जी का है। अतः विरक्त मन से जैन धर्म की वृद्धि करनी चाहिए, जो मोक्ष का हेतु है।

दग्ध्वा गृहं मोहकृतं विशालं
शुद्धात्मना जैनपवित्रगेहम्।
विशन्त्वभीता मनुजाः समस्ताः
जरादिशून्यं किल दर्शनीयम्॥19॥

अपने मोहनिर्मित विशाल गृह को जलाकर शुद्धात्मा होकर जैन के पवित्र गृह में (जिनालय में) सम्पूर्ण मनुष्य भयरहित होकर प्रवेश करें, जो जरादि से शून्य एवं दर्शनीय हैं।

आचार्यो वसुनन्दिनामकमुनिः साधुः महानीदृशः
यो जैनेन्द्रविभावनार्पितमनाः नैजात्मकल्याणकृत्
यस्याङ्गेषु जिनेन्द्र भक्तिरमला दृष्टाद्वितीयाद्भुता
विद्यानन्दमुनेः करोऽस्ति शुभदो यस्मिन् स धन्यो गुरुः॥20॥

आचार्य वसनुन्दी जी ऐसे महान् साधु हैं, जो जैन प्रभावना के लिए समर्पित हैं, आत्मकल्याण करने वाले हैं, जिनके रोम-रोम में अटूट, निर्मल जिनेन्द्र भक्ति समाई हुई है। कल्याण की भावना रखने वाले इन मुनि जी के ऊपर विद्यानन्द मुनि जी का वरद हस्त है, अतः ये धन्य हैं।

नत्वा महावीरमये मुनीशं
जिनेशमेनं सुखसागरं भोः।
लोकाद् दृढ़ बन्धमद्य बन्धो
छित्वा विरक्तः प्रमुखं लभस्व॥21॥

अरे श्रावक! सुख के सागर जिनेन्द्र महावीर को नमस्कार सांसारिक बंधन को काटकर विरक्त होकर दिव्य सुख की प्राप्ति करो।

कार्यं करोति निगमागमदृष्टिपूतं
ध्यानेप्रलीनसुमना मुनिरेष पूज्यः।
शिष्यादिशिक्षणपरो जिनधर्मरक्तो
दीक्षाप्रियः स वसुनन्दिबुधोऽद्वितीयः॥22॥

(जैन) आगम-निगम से पवित्र दृष्टि वाले ध्यानावस्थित शिष्यों की शिक्षा देने में तत्पर जिनधर्म में अनुरक्ति रखने वाले दीक्षाप्रिय ये वे पूज्य वसुनन्दी मुनि अद्वितीय हैं।

जिनगतिः सुमतिर्जिनशास्त्रवान्
सकललोकहिताय रतो मुनिः।
उपदिशन् हरते विपदो ध्रुवं
प्रणमत रे सततं मनुजा वसुम्॥23॥

अरे मनुष्यो! जैन धर्म में जिनकी गति है, शुद्ध-बुद्धि वाले शास्त्रों को जानने वाले संसार का भला करने में लगे हुए मुनि उपदेश देते हुए निश्चय ही विपत्तियों को हर लेते है।। ऐसे (गुरुवर) वसुनन्दी जी को नमस्कार करो।

दमनं चेन्द्रियसङ्घस्य शमनं काषायकस्य च।
दीक्षाचार्यो ददत् शिष्यान् नयते कल्याणवर्त्मनिः॥24॥

दीक्षाचार्य आचार्य वसनुन्दी जी एकादश इन्द्रियों के दमन और कषायों के शमन, की शिक्षा देते हुए शिष्यों को कल्याणमार्ग में ले जाते हैं।

प्रददाति धनं त्वधनोगुरुः,
कुत इदं भवतीह नु सम्भवम्।
वदतु हन्त विमृश्य विभावकाः
जिनधन ददते न स रौप्यकम्॥25॥

अरे भक्तो! ये अधन (निर्धन) गुरु (भक्तों को) धन प्रदान करते हैं, यह कैसे सम्भव हो सकता है, यह विचार करके बताओ। ये जिनेन्द्र भगवान् रूपी धन प्रदान करते हैं, रुपया नहीं।

कषायकेशवस्त्राणि दीक्षार्थं त्यजेन्नरः।
वसुनन्दीगुरुः शिष्यान् भाषते श्रावकानपि॥26॥

आचार्य वसुनन्दी जी श्रावकों से कहते हैं कि कषाय, केश और वस्त्रों का मनुष्य दीक्षार्थ त्याग करें।

वाक्यामृतं जिनमुनेः वसुनन्दिनो भोः
नित्यं करोति जगतां परमोपकारम्।
मायानिबद्धजटिलं बहुकण्टकीर्णं
ज्ञानं गुरोर्हरति नो प्रसृतं मदान्धम्॥27॥

अरे मनुष्यों! आचार्य वसुनन्दी मुनि जी का (प्रवचन) वाक्यामृत जगत् का

परम उपकार करता है, जैसे मायाबद्ध जटिल अनेक दु:खों से भरे विस्तृत मदान्ध को गुरु का ज्ञान हर लेता है।

श्रुत्वा विशिष्टं वचनं जिनार्थं
मुखाद् गुरोर्वै वसुनन्दिनोऽस्य।
ब्रूते सुशिष्यो जिनधर्मवेत्ता
गुरुः महावीर इवात्र नव्यः।।28।।

आचार्य वसुनन्दी मुनि जी के मुखारबिन्द से जैन धर्म के विशिष्ट वचन सुनकर सभ्य शिष्य जो जैनधर्म को जानने वाला है, वह बोल उठता है, ये मानो दूसरे नवीन महावीर गुरु हैं।

सत्यं सदा वद तु निन्दजनं न कञ्चित्
नैवागुणं स्मर च रञ्जय लोकमेनम्।
यात्रा सुपुत्र तव नूनमतोऽनुकूला
रम्या भविष्यति भुवि वसुनन्दि वाक्यम्।।29।।

आचार्य वसुनन्दी मुनि यह सदुपदेश देते हैं कि हे मनुष्य! सदा सत्य बोलो, किसी की निन्दा मत करो, न किसी के दुर्गुणों को उधाड़ो, इस लोक को प्रसन्न रखो। ऐसा करने से अरे सुपुत्र! अवश्यमेव तुम्हारी (संसार) यात्रा रमणीय एवं अनुकूल हो जायेगी।

श्लाघ्यस्वभावो बहुशास्त्रदर्शी
सम्पादको जैनसुपुस्तकानाम्।
कार्यं ह्याननन्तं भवतो जगत्यां
श्रीनेमिनामा मुनिराह जैनः।।30।।

आचार्य वसुनन्दी जी के विषय में श्रीनेमीसागर मुनि का कहना है कि आपका स्वभाव प्रशंसनीय है, आप अनेक शास्त्रों को जानने वाले हैं, आपने (अनेक) जैन ग्रंथों का सम्पादन किया है, इस संसार में आपके अनगिनत शिष्य हैं।

कालस्य चक्रमनिशं गतिमज्जगत्याम्।
उत्थानमस्ति पनतं च विधेः कृते द्वे।
लिप्सा सुखं मनुजजीवनमार्गरोधो
मग्नो जनोऽत्र लभते सततं प्रपीडाम्।।3।।

आचार्य आचार्य वसुनन्दी जी का मानना है कि कालचक्र अनवरत गतिशील है, संसार में उत्थान और पतन विधिनिर्मित है, लिप्सा (पाने की इच्छा) मनुष्य के जीवन में अवरोधक बनी है, जहाँ वह मग्न है और असह्य पीड़ा झेल रहा है।

पुष्पं फलं पत्रमहो तरुणां
मूलाश्रितान्याहुरिमे मनुष्याः।
वृद्धास्तथा सन्ततिपुष्पवृद्ध्यै
मूलाभिधाना मुनिरेष वक्ति॥32॥

(महामनीषी) वसुनन्दी जी कहते हैं जैसे कि पुष्प, फल, पत्र वृक्ष के जड़ पर आश्रित रहते हैं, वैसे ही सन्तति रूपी पुष्पादि वृद्धों पर आश्रित रहते हैं। अतः सदैव वृद्धजनों की सेवा करनी चाहिए।

जैनश्रमणकालोऽयं स्वर्णिमो वर्तते ध्रुवम्।
यस्य श्रेयो मतं सर्वैः शान्ति सागरसन्मने॥33॥

(आप मानते हैं कि) यह जैन श्रमण काल वास्तव में स्वर्णिम काल है, जिसका श्रेय शान्तिसागर मुनि जी को सभी प्रदान करते हैं।

मुख्यो जनः सर्वजनस्य नेता
कुर्याद् विकासं समतुल्यमेव।
प्रवाचको भाषत एव गोष्ठ्यां
गुरुर्महान् श्री वसुनन्दिनामा॥34॥

(संयुक्त परिवाार को लक्ष्य करके) आचार्यश्री सभाओं में कहते हैं कि परिवार का मुखिया सबको ले चलने वाला होता है, अतः उसे चाहिए कि एक समान सबका विकास करे।

उत्कृष्टा नवसाधनासरणिका चाविष्कृता सौख्यदा
आचार्यैर्वसुनन्दिभिर्गुरुवरैर्वात्सल्यसत्सागरैः।
साक्षात् सूर्यसमैः जिनेन्द्रवचनैजैनागमो रक्ष्यते
तेभ्यः स्युर्नतयोनिबद्धकरजाः श्रीमद्गुरुभ्यो मुदा॥35॥

जिन गुरुवर ने नवीन साधना प्रणाली का आविष्कार किया है, जो वात्सल्य

के सागर है, साक्षात् सूर्य केसमान जिनेन्द्र (स्तावक) वचनों द्वारा जैनागमों की रक्षा करते हैं, ऐसे सद्गुरु वसुनन्दी जी की मैं हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ।

अनादिनिधने लोवेक वासोऽनाद्यतनो मतः।
जीवादिद्रव्यकाणान्तु कल्पान्तं च भविष्यति॥36॥

गुरुवर का मानना है कि-आदि अन्त से रहित इस संसार में जीवादिद्रव्यों का निवास अनन्त है, यह कल्पान्त तक रहेगा।

परिवर्तनमेतत्तु गुणपर्याययोनिः ध्रुवम्।
वै द्रव्यगुणपर्याये शुद्धे शुद्धं भवत्युत॥

यह परिवर्तन तो गुणपर्याय में निश्चितरूपेण होता रहता है, शुद्ध द्रव्य-गुणपर्याय में शुद्ध परिवर्तन होता है।

धर्मोऽधर्मा वियत्कालो नित्यशुद्धा मता बुधैः।
अनन्तकालपर्यन्तं शुद्धाः स्थास्यन्ति निश्चितम्॥38॥

धर्म, अधर्म आकाश और काल विद्वानों द्वारा नित्य शुद्ध माने गए है, ये अनन्तकाल पर्यन्त निश्चित ही शुद्ध रहेंगे।

हिमालयो नो समतां गुणोऽस्य
चन्द्रो गुरोः शुक्लगुणाभिलाषी।
अब्धौ गभीरत्वमहो गुरोः क्व
जिनेन्द्रचित्तस्य विदन्तु विज्ञाः॥39॥

आपके गुणों की समानता हिमालय नहीं कर सकता, चन्द्रमा गुरु (वसुनन्दी) को शुक्लगुणों का अभिलाषी है, अरे विद्वानों! गुरुवर के गुणों की गम्भीरता समुद्र में भी नहीं है।

सतां जगत्यां न सुहृन्न बन्धुः
न वेषभूषा न गृहं न देशः।
विज्ञायतेऽसौ तपसा तपस्वी
तपोधनो जैनगुरुर्मदीयः॥40॥

सज्जनों का संसार में कोई मित्र या बन्धु नहीं होता (अर्थात् वे किसी से विशेष राग नहीं रखते हैं) न उनकी वेशभूषा, न गृह, न देश होता है

(वसुधैव कुटुम्बकम्) की भावना रखने वाले होते है।। ये तपस्वी तपस्या द्वारा जाने जाने वाले मेरे गुरुवर तपोधन हैं।

संसारे भ्रमतीव जीव इति को जानाति नो श्रावकाः।
यद्यत्कर्म चकार तैस्तुमनुजो बद्धः सुखं प्रायशः
मिथ्यात्वेन कषायरागवशगस्तप्तो जिनेन्दं स्मरन्
वैराग्यं लभते विशुद्धमनसा मुक्तिं गुरुर्भाषते।।41।।

आचार्य वसुनन्दी जी कहते हैं कि हे श्रावको प्रायः अपने कर्मफल से बंधा मनुष्य संसार में मानो भ्रमण करता रहता है, मिथ्याजन्य कषायादि के वश में गया वह दुःखी होकर शुद्धमन से जब जिनेन्द स्मरण करता है, तब वह मोक्ष पा लेता है।

वक्तुं न शक्यो बहुशाब्दबोधैः
शब्दोऽक्षमः सद्गुरुवर्णने वै।
साहित्यसारः क्षमते न रूपं
वक्तुं गुरोः श्री वसुनन्दिनोस्य।।42।।

आचार्यवर के विषय में किसी जैनानुरागी मुनि ने कहते हुए लिखा है इस (आप) वसुनन्दी गुरु के गुणों का वर्णन शब्दबोधों द्वारा कर पाना असम्भव है, शब्द आपके गुणों के वर्णन में असमर्थ हैं। साहित्यसार भी आपके रूप का वर्णन नहीं कर सकता अर्थात् आप अवर्णनीय हैं।

क्व सर्वशैलेषु मिलन्ति दिव्य-
रत्नानि जानन्ति न रत्नवेत्ता।
यथा तथा जैनगुरुर्नलोके
सन्दृश्यतेऽसौ वसुनन्दितुल्यः।।43।।

सभी पर्वतों पर कहाँ दिव्य रत्नों की प्राप्ति हो पाती है, यह सब रत्नपारखी जानते हैं, वैसे ही संसार में आचार्य वसुनन्दी जी जैसे गुरु नहीं मिल पाते।

जैनेतिहासे मुनयो ह्यसङ्ख्या
यथा च खे तारकवृन्दराशिः।
सर्वैरिमं लोकमहो स्वबोधैः
प्रकाशितं पश्यति देश एषः।।44।।

यह देश साक्षी है कि जैनधर्म के इतिहास में अनगिनत मुनि हुए, जैसे आकाशमण्डल में तारकवृन्द। परन्तु जिन्होंने अपने ज्ञान से इस संसार को प्रकाशित किया है।

तेष्वेष एकः परमः कृपालुः
जिनाश्रयो जैनमुनिर्दयालुः।
सम्मन्यते श्रीवसुनन्दिदेवः
शिष्यैरनन्तैरमलो गुरुश्रीः॥45॥

उन्हीं मुनियों की परम्परा में परम कृपालु जैन मुनि, जिनके अनन्त शिष्यों ने श्री वसुनन्दी जी को पवित्र गुरुश्री कहा है।

त्रिरत्नधारी गुणसङ्घहारी
नित्यं विहारी जिनवाक्यचारी।
लोकोपकारी परमार्थपारी
लसेत् त्रिलोके जितकामनारिः॥46॥

आप जैन धर्मसम्मत रत्नत्रय को धारण करने वाले हैं, आपने गुणों से जिनसंघ को जीत लिया है, आप जैन प्रवचन का आचरण करने वाले हैं, नित्य (पद) विहार करने वाले आप संसार का भला करने वाले हैं, परमार्थ को पार करने वाले (परमार्थ जिन तत्त्व) को जानने वाले आप कामनाओं को जीत चुके हैं, आप त्रिलोक में विलसित होवें।

छेत्तुं विशालं गगनं न शक्यते
तारागणः खे गदितुं न शक्यते।
अब्धिश्च वातुं मनुजैर्न शक्यते
गुरोगुणं वर्णयितुं क्व शक्यते॥47॥

जैसे विशाल गगन का छेदन नहीं किया जा सकता, आसमान में कितने तारे हैं? यह बोला नहीं जा सकता, समुद्र मनुष्यों द्वारा भी पिया नहीं जा सकता, वैसे आचार्य वसुनन्दी जी के गुणों का वर्णन नहीं किया जा सकता।

द्रुमा फलन्तीव ऋतो प्रकामं,
सदेव लोके किल दृश्य तेऽत्र।

मान्यो गुरुवै फलतीव नित्यं,
तस्मादयं पूज्यत एवं शिष्यैः ॥48॥

वृक्ष तो ऋतुओं में प्रचुर फल देते हैं, यह संसार में दिखाई पड़ता है। परन्तु सद्गुरु (आचार्य वसुनंदी जी) नित्य मेव सभी ऋतुओं में शिष्यों, श्रावकों को ज्ञानरूपी फल देते रहते हैं।

नान्धः पदार्थं भुवि विद्यमानं
सञ्चोदितः पश्यति भाष्यमाणः।
गुरुप्रबोधैः पिहिताक्ष एष
सर्वं समालोकत एव जाने॥49॥

यह सर्वविदित है कि संसार में अन्धा व्यक्ति उपस्थित पदार्थ को बताये जाने पर भी नहीं देख पाता है। परन्तु यह कैसी विचित्रता है! बन्द आँखों वाला यह शिष्य (आचार्य वसुनन्दी जी जैसे) गुरु के ज्ञान को पाकर सब कुछ देखने लग जाता है, यह कौन नहीं जानता है।

गुरुर्महान् श्रीवसुनन्दिनामा
जिनागमानां मधुरः प्रवक्ता।
जिनेन्द्रबुद्धिर्जितसर्वकामो
जयन् त्रिलोकं भजते जिनेशम्॥50॥

आप वसुनन्दी नामक महान गुरु हैं, जो जैन ग्रन्थों के मधुर प्रवक्ता हैं, जिनेन्द्र बुद्धि द्वारा आपने काम को जीत लिया है आप तीनों लोकों जिनेन्द्र की सेवा करते हैं।

जैनधर्मो महात्लोके तत्रापि च दिगम्बरः।
तत्रायं सद्गुरुश्श्रेष्ठो वसुनन्दीमहामुनिः॥51

संसार में जैन धर्म महान है, उसमें भी श्रेष्ठ दिगम्बर है, वहाँ भी श्रेष्ठ सद्गुरु आचार्य महामुनि वसुनन्दी जी हैं।

डॉ. अरविन्द कुमार तिवारी (संस्कृत प्रवक्ता)
आदर्श वैदिक विद्यालय, इ.का.
नंगला-सिनौली, बागपत (उ.प्र.)

मेरी दृष्टि 'वात्सल्य के गहन सागर- आचार्य वसुनंदी जी''

दिनाँक 31 अक्टूबर 2002 में मुरैना विद्यालय से द्वितीय बार सेवा निवृत्ति लेकर मैं अपनी कर्मस्थली मुरैना में ही नित्यप्रति गृहस्थोचित षटावश्यकों का पालन करते हुये धर्म समाज सेवा में संलग्न हुआ। सन् 1997 में जुलाई से दिसम्बर 2000 तक श्रमण संस्कृति सांगानेर (जयपुर) राजस्थान में भी व्याख्याता पद संस्था में सेवारत था। अथवा कहो कि प्रथम शैक्षिणक सत्र पं. श्री रतनलाल जी बैनाडा आगरा के अधिष्ठाता पद व डॉ. शीतलचन्द जी के निर्देशन में ब्र. संजीव जी पं. महेश जी के साथ प्रथम बैच के 35 विद्यार्थियों के साथ आज के सुप्रसिद्ध प्रतिष्ठाचार्य पं. मनोज जी आहार से प्रारम्भ हुआ। अर्थात् पं. मनोज जी उस समय विनम्रता, सहृदयता, निष्ठापूर्वक कर्तव्य पालन की भावना से प्रभावित थे आज भी है।

मार्च 2007 सन् की बात है मैं चौमू (जयपुर) राजस्थान पंचकल्याणक से वापिस लौटा था। तभी एक दिन मनोज जी कोठिया का समाचार आया कि गुरुजी/दीवान जी उपाध्याय श्री निर्णयसागर जी के सन्निध्य में एवं आपके प्रतिष्ठाचार्यत्व में सरधना (मेरठ) उ. प्र. का 30 अप्रैल से 7 मई 2007 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव होना हैं मैं भी आपके साथ रहूँगा। कृपया स्वीकृति दें। पूज्य उपाध्याय श्री ने आपको शुभाशीष प्रदान किया है। तब मैंने भी 'अन्धा क्या चाहे दो आंखे'' सूक्ति के अनुसार प्रथम सन्निधि मिलने की भावना से स्वीकृति दे दी और नियत समय पर सरधना पहुँच गया।

प्रथम बार में ही कठिन परीक्षा -(एक संस्मरण)-सरधना पंचकल्याणक प्रतिष्ठा की प्रथम पेपर ही बहुत कठिन आया हुआ। यूं कि अगले दिन जिस मंच पर श्री जी स्थापना वेदी संस्कार विधि आदि सम्पन्न होनी थी, रात्रि 9 बजे तक भी तमाम कोशिशों के बाद भी वेदी एवं मंच तैयार नहीं

हो पा रही थी, J.C.B मशीनें भी असफल रहीं। मैं कि कर्तव्यमूढ़ था, कुछ नवयुवकों के साथ मैं आचार्य श्री के प्रवास कक्ष में पहुँचा और मन की व्यथा सुनायी उपाध्याय श्री ने गंभीरता के साथ सुना और चूंकि मौन था इसलिए संकेत कर मुझसे कहा कि आप जाइये विश्राम कीजिये सुबह आपको मंच तैयार मिलेगा। लेकिन मैं तो विचलित था फिर भी गुरु आदेश को मानकर सो गया। प्रातः नियत समय पर जब प्रतिष्ठा मंडप में मंच पर पहुँचा तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा देखा कि वास्तव में मंच पूर्ण रूप से व्यवस्थित हो चुका था जब यथार्थता जानी तो विदित हुआ कि पूज्य श्री के शुभाशीष से समाज के साधक 50 युवकों ने रातभर कार्यसेवा को प्रतिफल किया है। फिर तो सम्पूर्ण प्रतिष्ठा महोत्सव सानंद सम्पन्न हुआ। जब अन्त में वापिस मुरैना आने के लिये आशीर्वाद लेने पहुँचा तब उनकी चरणरज लेते ही पूज्यश्री ने कहा कि पं. जी/दीवान जी आपकी प्रस्तुति विधि विधान, शैली-समर्पण अच्छा लगा जुड़कर रहना, मैंने भी इसे गुरु आदेश रूप में स्वीकार किया और तब से अलीगढ़ अप्रैल 2017 तक 12 प्रतिष्ठा महोत्सव सानंद सम्पन्न कराके जीवन सफल किया।

जब पूज्य श्री ने मेरे निर्णय को मान्य किया-(द्वितीय संस्मरण) जलेसर एटा (उ.प्र.) का पंचकल्याणक 7 से 10 मार्च 2008 का अल्पकालिक व आकस्मिक था। जबकि कार्यवृहत् था जब मैंने व पं. मनोज जी ने प्रतिष्ठेय बिम्बों का परीक्षण किया तो कुछ प्रतिमायें प्रतिष्ठा योग्य नहीं थी जब मैंने उपाध्याय श्री को इन तथ्यों से अवगत कराया तो उन्होंने भी दृष्टिपात करके यही कहा कि पं. जी ने जो निर्णय दिया वही सही है और उन प्रतिमाओं को परिवर्तित करके प्रतिष्ठा योग्य प्रतिमायें मंगवाकर ही प्रतिष्ठा विधि सम्पन्न करायी।

अनुशासन पालन की सुदृढ़ता- (तृतीय संस्मरण) 23 नवम्बर से 30 नवम्बर तक असौढ़ा हाऊस मेरठ का पंचकल्याणक एलाचार्य श्री वसुनंदी जी के ससंघ सान्निध्य में कई विशेषताओं को लेकर गरिमापूर्ण ढंग से था। हम दोनों की जोड़ी (मैं व पं. मनोज जी को दिया) आचार्य श्री के भक्तों एवं जैन जगत में दूर दूर तक ज्ञात हो चुकी थी। अनुशासन का पूर्ण

कर्तव्य निष्ठा के साथ पालन करना-कराना हम लोगों की विशेषता थी। एलाचार्य श्री के निर्देशानुसार प्रतिष्ठा मंच पर किसी के लिये भी मौजे आदि स्वीकृत नहीं थे। इसके परिपालन की जिम्मेदारी हमारी टीम की थी। कार्यक्रम के मध्य किसी मंत्री विशेष का एवं ख्यातिलब्ध सांस्कृतिक भजन गायक श्री राजेन्द्र जी कलकत्ता का आगमन हुआ। तब हम लोगों ने उनके कई तर्क-वितर्को के बाद भी स्वयं मंच पर उपस्थित रहकर दृढ़ता के साथ इस अनुदेश का पालन कराया। पब्लिक ने साधुवाद दिया। अन्ततोगत्वा राजेन्द्रजी ने स्वीकार किया कि पं. जी मैंने अपने जीवन में प्रथम बार किसी धार्मिक मंच पर मौजे उतार कर प्रस्तुति दी, अपने को गौरवान्वित महसूस किया।

यूं तो प्रतिष्ठा महोत्सवों की संस्मरणों की एक दीर्घ श्रृंखला है किन्तु मैं सीमान्तर्गत रहकर उनकी सबसे बड़ी खूबी को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना चाहूँगा कि आचार्य श्री पंथवाद/हठवाद से दूर रहकर धर्म-समाज-संघ की साधलढ़ि सब बिन्दुओं पर दूरदर्शिता से विचार कर निर्णय लेकर क्रियान्वयन कराते है। जो भी उनके चरणों में निश्छल सर्मपण करता है उसे पुचकार भरी आशीर्वाद की बौछार से सराबोर कर देते हैं। यथा एक माता-पिता अपनी सन्तान का सम्यक् संरक्षण-संवर्द्धन करते है तथैव आचार्य श्री अपने कर्तव्यपालन में संलग्न है। यही कारण है कि देखते-2 आज आचार्य श्री विशाल संघ के अधिनायक हैं। उनकी सम्पूर्ण शिष्य श्रृंखला गुरु के प्रति समर्पित व आज्ञा पालन में है। आचार्य श्री के शुभाशीष से ही लगभग 4 वर्षो तक श्री श्री सत्यबोध (मासिक पत्रिका) दिल्ली का सफल सम्पादन भी किया है।

अभी कुछ समय से ऐसा प्रतीत होता हैं श्रमणसंघों में परस्पर वात्सल्य भाव की हीनता परिलक्षित हो रही है। किन्तु आचार्य श्री इस अपवाद से दूर है। वे गंभीर व दूरदर्शी हैं। क्योंकि श्रमण संस्कृति ही श्रावकों के लिये आदर्शवत है। और श्रमण-श्रावक रूप दो पहियों से ही जैन संस्कृति की रथ पंचम-कालान्त तक गतिशील रहेगा। अन्ततः आचार्य श्री के 50वें जन्म जयन्ती वर्ष समारोह पर अपने श्रद्धामयी विनय पुष्प निम्न भावनाओं

के साथ समर्पित करता हूँ।

श्रद्धा तुम चरणों में इतनी, जितना सागर में पानी है।
आचार्य श्री वसुनंदी जी हमारे–अति ज्ञानी–और ध्यानी है।।
वो शब्द नहीं हैं पास हमारे, जिनसे तुम्हारा गुणगान करूँ।
हे महावीर के लघुनंदन मैं, सदा तुम्हारा ध्यान धरूँ।।
जिये हजारों साल गुरुवर, यह शुभ भाव हमारा है।
हे वसुनंदी आचार्य गुरुवर, सौ सौ नमन हमारा है।

इत्यम्।।

प्रस्तुति–प्रतिष्ठाचार्य
पं. पवन जैन दीवान मुरैना (म.प्र.)

जिनवाणी से निजवाणी हो,
गुरुवर ऐसा कहते हैं।
चेतनता की मूरत गुरुवर
जग से न्यारे रहते हैं।।
मानव जीवन हमें बताकर,
मानवता का पाठ दिया।
वसुनन्दी के चरण कमल ने,
धरती का उद्धार किया।।

–साभार 'स्वर्णोदय'

जिन धर्म प्रभावना के अनुपम सूर्य - आचार्य श्री वसुनन्दी जी मुनिराज

इस युग के महान आचार्य भगवन श्री कुन्दकुन्द देव जी ने अपने महान ग्रन्थराज प्रवचनसार में श्रमण की चर्या का उल्लेख करते हुए कहा है

समसत्तु बंध वग्गो सम सुहदुक्खो पसंसणिंदसमो।
सम त्वोट्ठ कंचणो पुणं जीविद मरणे समो समणो॥

जिनके लिए शत्रु और मित्र समान हैं, सुख दुख समान हैं, निंदा और प्रशंसा में सदैव समता भाव रखते हैं, जिनकी दृष्टि में सोना और लोहा भी समान है, जीवन मरण में भी समता है, वो श्रमण है।

यही भावना पंडित प्रवर श्री दौलतराम जी ने अपनी कृति छहढाला में प्रगट की है।

अरि मित्र महल मसान कंचन, कांच निदंन द्युति करन।
अर्घावतारन असि प्रहारन में सदा समता धरन॥

ऐसी मंगल भावना को अपने जीवन में चरितार्थ किया है जिन्होंने और सम्पूर्ण भारत वसुंधरा पर सत्य, अहिंसा, जिनधर्म की प्रभावना का तो मानो जीवन का लक्ष्य बना लिया है, तथा पंच कल्याणक प्रतिष्ठयाँ जिनके सान्निध्य में प्रति वर्ष लगभग 8-10 प्रतिष्ठायें तो होना सामान्य बात है। मुझे भी मेरठ शास्त्री नगर में पंच कल्याणक प्रतिष्ठा परम पूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में कराने का अवसर प्राप्त हुआ था, मैंने अनुभव किया की पूज्य महाराज श्री के ज्ञान का क्षयोपशम अति तीव्र हैं आपका अनुशासन प्रशंसनीय है। आपने अपने जीवन में जैन संस्कृति की साहित्य रचना करके जो संस्कृति को समृद्ध किया है, आपकी लेखनी से अनेकों पुस्तकों का लेखन सम्पादन आदि कार्य हुए हैं।

परम पूज्य ऐलक श्री विज्ञान सागर जी महाराज के पत्र द्वारा यह

जानकर अति प्रसन्नता हुई कि पू. आचार्य श्री का 50वीं जन्म जयंती उत्सव स्वर्ण जयंती महामहोत्सव के रूप में 3 अक्टूबर 2017 को दिल्ली में मनाया जा रहा है। इस अवसर पर पू. ऐलक श्री विज्ञानसागर जी द्वारा पूज्य आचार्य श्री के जीवन पर एक ग्रंथ प्रकाशित हो रहा है यह जानकर मन बड़ा हर्षित हुआ। हम महाराज श्री के विषय में क्या लिख सकते हैं। जिनकी कीर्ति रूपी ध्वजा आपके सुशिष्यों रूपी हवा से दिगदिगान्तों में फहरा रही हैं। जिनका श्रेय गुण वात्सल्य भक्तों को अपनी ओर खींच लेता है। जो पूज्य श्री का एक बार भी दर्शन कर लेता है वह गुरुवर का हो जाता है। पू. आचार्य श्री का रत्नत्रय सदैव वृद्धि को प्राप्त होता रहे। पूज्य श्री शतायु एवं स्वस्थ रहें ऐसी मेरी मंगल कामना है।

गुरुवः पान्तुः नो नित्यं, ज्ञान दर्शन नायकाः।
चारित्रार्णव गम्भीरा, मोक्षमार्गोपदेशकाः॥

अंत में ज्ञान, दर्शन, चारित्र की वृद्धि की कामना के साथ गुरु चरणों में बारम्बार नमोस्तु।

प्रतिष्ठाचार्य पं. नरेश कुमार जैन ''कांसल''
पंच कुटीर पांडव नगर, हस्तिनापुर मेरठ (उ.प्र.)

ज्ञानामृत का पान कराते,
मन की बगियाँ खिला रहें।
बात-बात में हमें बताकर,
मोक्षमार्ग को दिखा रहे।
बाँट रहे है अमृत कण को,
करुणा के तुम सागर हो।
विद्यानन्द के हृदय विराजे,
आप तो गुरुवर नागर हो॥

–साभार 'स्वर्णोदय'

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी

ध्यान और अध्ययन से संलग्न रहने वाले साधक निर्ग्रन्थों की चर्या को चरितार्थ करने वाले साधुजन आज इस पंचम काल में मंगल विहार करते हुए स्व-पर का कल्याण कर रहे हैं। इस समय मोक्ष नहीं है, किन्तु मोक्ष मार्ग अवश्य है।

जहाँ अनेक श्रमण मोक्षमार्ग का अनुसरण कर रहे हैं, वही भव्य जनों को मोक्ष मार्ग में लगने की प्रेरणा देते हुए आत्म कल्याण में संलग्न हैं।

इसी क्रम में आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज निरंतर ध्यान अध्ययन में संलग्न हैं। मुनि धर्म का पालन कर रहे हैं, करा रहे हैं और श्रावक धर्म का उपदेश कर श्रावक समूह को कल्याणक मार्ग दिखा रहे हैं।

इस वर्ष दशलक्षण पर्व में आपके निकट रहकर आत्मचिंतन, जिज्ञासा, समाधान एवं जैनागम के अनेक गुण रहस्यों का ज्ञान प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। आपकी दिन चर्या देखकर लगा कि आपको जिनवाणी के अध्ययन मनन, चिंतन, पठन-पाठन आदि के प्रति अत्यंत लगन है, आप कभी कोई समय व्यर्थ नहीं जाने देते है।। अपना उपयोग हमेशा स्वाध्याय में लगाते हैं। परिणामत: संघस्थ साधुओं को अनेक ग्रन्थों का अध्ययन है। सभी साधु प्रज्ञावान हैं।

यह सब विशेषतायें आपके लम्बे समचित जीवन के कारण संभव हो सका है। आपकी सरलता, सहजता, निस्पृहता और उदारता श्लाघनीय हैं

वात्सल्य भाव का प्रकट रूप से आपमें दर्शन ही नहीं अपितु अनुभव भी होता है।

आपके अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगता से हम अभिभूत हैं। आपके स्वर्ण जन्म जयंती के अवसर पर हम आपके चरणों में नमन करते हुए भावना भाते हैं कि आपके ज्ञानमय उद्देश्य से जन-जन लाभान्वित होते रहे।

पं. सतन कुमार विनोद कुमार

रजवांस, सागर (म.प्र.)

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी : आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज

आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज श्रमण परम्परा के वह नक्षत्र हैं जो सदैव धरा को प्रकाशित कर रहे हैं। आचार्य वसुनंदी जी महाराज 36 मूलगुणों का अक्षरता पालन करने वाले प्राणी मात्र के कल्याण की कामना में सदैव तत्पर एवं संस्कारों का शंखनाद कर रहे हैं। प्राणी मात्र से वात्सल्य प्रेम देखकर मन आनन्द से विभोर हो जाता है। जो स्व-पर कल्याण में लगे हुए हैं निर्विकार, सरल हृदय, करुणा के सागर हैं। आचार्य श्री ने धर्म बचाओ, धर्म सिखाओ का नारा चरितार्थ कर उन्होंने देश की संपूर्ण युवा शक्ति को धर्म के प्रति जागरुक किया है।

विशाल संघ के अधिनायक होने के साथ-साथ आचार्य श्री ने देश में संस्कृति, संवर्धन व संरक्षक हेतु अनेक अभियान छोड़े हैं। धर्म के प्रचार-प्रसार में श्रावक सद्संस्कार शिविर का आयोजन करना कराना मजबूत कड़ी का कार्य है।

आचार्य श्री शताधिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठायें कराई हैं। प्रत्येक पंचकल्याणक अभूतपूर्व रहा है। आचार्य श्री के मंगल सान्निध्य में जुलाई 2004 में दिल्ली में सिद्धचक्र विधान के समय सान्निध्य प्राप्त हुआ जो आज तक निरंतर चला आ रहा है।

आचार्य श्री के मंगल सान्निध्य में अभी तक 40-50 पंचकल्याणकों के अलावा कई विधान कराने का सौभाग्य मिला। आचार्यश्री प्रतिष्ठा कार्यों में शुद्धि एवं क्रियाओं में किसी प्रकार की शिथिलता पसंद नहीं करते हैं।

आचार्यश्री के आशीर्वाद से आपके सान्निध्य में बचपन से प्रतिष्ठादि विधानों में प्राप्त हुआ, जैन संस्कृति की परम्परा को स्थिर रखने के लिए धार्मिक विधि-विधानों को शास्त्रोक्त विधि से करना सिखाया क्योंकि गुरुवर अनुभवशील होने के साथ-साथ किसी भी पंथवाद से रहित

मनोदृष्टि अपने आप में सर्वोपरि है। आपके अंदर समाहित अनेक प्रकार के अनुभवों से परिपक्व थे। धीर-वीर साधक, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की स्थिति जानते हुए अनुभव के आधार से अनेक धार्मिक अनुष्ठानों का धर्म प्रभावनापूर्वक सम्पन्न हुआ।

आचार्य श्री की तीर्थ क्षेत्रों के प्रति आपकी दृष्टि संरक्षक रही है एवं किसी भी क्षेत्र में राग-द्वेष की भावना से रहित होकर हमेशा तीर्थ क्षेत्रों के प्रति संरक्षक की दृष्टि सकारात्मक रही। तीर्थों की पवित्रता पर ध्यान दिया और जीर्ण-शीर्ण तीर्थों को व्यवस्थित बनाने का मार्ग दर्शन दिया। जिसके तहत अजमेर में श्री जिनशासन तीर्थ की स्थापना और बौलखेड़ा जम्बूस्वामी तपोस्थली के साथ अनेक तीर्थ क्षेत्रों की काया कल्प एक स्वर्णिम कीर्तिमान है। जो सदियों तक स्मरण रहेगा। साहित्य के क्षेत्र में आचार्य श्री ने जो अवदान दिया है वह स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा। सैकड़ों ग्रंथों के टीकाकार उन्हें सहज, सरल, बोधगम्य बनाना केवल आचार्य श्री वसुनंदी मुनिराज ही कर सकते हैं।

मीठे प्रवचन एवं प्राकृत कृति सहित लगभग 40-50 कृतियों के सृजेता महाकवि आचार्य श्री कुशल चिंतन व समालोचक भी हैं। उच्च अर्थों में गुरुदेव एक संत हैं।

ऐसे युग पुरुष-युग दृष्टा के श्री चरणों में कोटि-कोटि नमोस्तु।

प्रतिष्ठाचार्य

श्री मनोज जैन शास्त्री

रोहिणी, दिल्ली

वात्सल्य स्वभावी एवं क्षमाशील

आशीष हाथ गुरु का, जब से मिला है
संतोष का कमल, जीवन में खिला है।
निर्दाम ही मिल रही, मुझको सुवस्तु,
मैं बार-बार करता, गुरु को नमोस्तु॥

परम पूज्य वयोवृद्ध आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज के सुयोग्य शिष्य परम पूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज के चरण कमलों में त्रिबार नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु गुरुवर।

मेरी भगवान से यही प्रार्थना है कि हे भगवान मोक्षमार्ग पर चलने चलाने वाले परम पूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज का स्वास्थ्य मंगलमय हो एवं शतायु रहे और उनकी असीम कृपा हम जैसे सभी भक्तों पर बनी रहे एवं आचार्य श्री का मंगल आशीर्वाद प्राप्त होता रहे। जिससे हम सभी अपने जीवन को कृतार्थ कर सकेंगे। पूज्य आचार्य श्री बहुत ही वात्सल्य स्वभावी एवं क्षमाशाली है। एवं अधिक ज्ञानी, ज्ञानोपयोगी, अक्षर शिल्पी, वाचनार्ह, मोक्षमार्ग के प्रदर्शक ऐसे वह हम सभी भक्त जनों को उसी मोक्ष मार्ग पर लगाने वाले हैं।

तपो निध्यै घात्रे, उदधि गुण युक्ताय च नमः।
क्षमोऽद्भुत मूल्यै वा, सुशिव पथ दात्रे नित नमः॥
महाज्ञानी वक्त्रे, परम मुनये वा मम् नमः।
विधात्रे ह्यस्माकं, सुगुरु वसु नन्द्यो शत् नमः॥

प.पू. आचार्य श्री हमेशा अपने तप में लीन रहते हैं, क्योंकि वे आत्मा में हमेशा के लिए ही लीन रहना चाहते हैं। ऐसे में पूज्य गुरुदेव क्षमा की अद्भुत सी मूर्ति के समान ही है। जो कि हमेशा वात्सल्य स्वभाव में ही रहते हैं और वे ज्ञान वृद्धि के कारण मोक्ष मार्ग पर चलकर अपने जीवन को धन्य ही बनायेंगे। पूज्य गुरुदेव बहुत ही ज्ञानी हैं। लेकिन वह कभी

भी अपने ज्ञान पर मान नहीं करते हैं और सदैव ही बारह प्रकार के तपों में लीन रहते हैं।

यथा यथा विशेष्यन्ते तपो ज्ञानादिभिर्गुणैः।
तथा तथा धिकं पूज्यः मुनयो गृह मेथिभिः॥

मैं भगवान से कामना करता हूँ कि हे भगवान आपके द्वारा हमारे वात्सल्य मूर्ति आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज के ज्ञान में निरंतर वृद्धि हो, यही मेरी मंगल भावना है।

अभी परम पूज्य आचार्य गुरुदेव वसुनंदी जी महाराज का 17 नवम्बर को अतिशय क्षेत्र जय शांतिसागर निकेतन मंडौल, गाजियाबाद, उ.प्र.में 50वां स्वर्ण जयंती महोत्सव मनाया जा रहा है। पूज्य गुरुदेव युगों-युगों तक जयवन्त रहें। पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में शत-शत् नमन्।।

इत्यलम्

पं. अमर चन्द्र शास्त्री
किशनगंज (बिहार)

हँसमुख चेहरा, प्रसन्न चित्त हो,
कायोत्सर्ग में करते ध्यान।
करूणा इतनी भरी हृदय में,
सुर-नर लखकर करते गान।।
एक बार जिसने भी देखा,
वो चरणों में आता है।
कोई मजहब कही का प्राणी,
तुमको शीश नवाता है।

–साभार 'स्वर्णोदय'

आचार्य श्री के उपकार

परम पूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी उत्कृष्ट ज्ञान और सम्यकचारित्र के धनी होने से वास्तव में आचार्य श्री सौम्य छवि, शांत दृष्टि, करुण हृदय, अमृत वचन व्यक्तित्व एवं दिगम्बर मुद्रा मोक्षमार्ग का निरूपण करती है आचार्य श्री की सरल, सुबोध और हृदय ग्राही मीठे प्रवचन की शैली से प्रभावित सभी विद्धतगण और श्रोतागण आत्मशांति के साथ आपके अगाध ज्ञान का लाभ उठाते हुए अपने को धन्य मानते है।

आचार्य श्री ने श्रमण संस्कृति के आदर्श दिगम्बर मुनि के रूप में धर्म की ध्वजा को फहराते हुये अनेकों प्रांतों की यात्रा करते हुये बद्रीनाथ क्षेत्र की यात्रा आपने की। आपके पास कोई भी भक्त पहुंचे चाहे परिचित हो या अपरिचित, चाहे निर्धन हो या कोई भी हो आपको वात्सल्य मीठी वाणी, और मंगल आशीर्वाद सभी को प्राप्त होता है।

परम पूज्य आचार्य श्री विद्वतजनों के प्रति वात्सल्य भाव से हम सभी के लिये असीम उत्साह एवं ऊर्जा प्रदान करते है उनका मुख मंडल, शांत सहज मुद्रा देखकर भक्तजनों का मस्तक श्रद्धा से झुककर तृप्ति का प्राप्त होता है वे मानवीय संवेदनाओं के प्रभाव पुंज है हम सबके मार्ग दर्शक व श्रद्धा के जननायक है हमारा परम सौभाग्य है कि परम पूज्य अक्षर शिल्पी परम उपकारी अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य 108 श्री वसुनंदी जी मुनिराज के पावन चरणों में 50वाँ स्वर्ण जयंती (जन्म महोत्सव) पर शतश - नमोऽस्तु - नमोऽस्तु - नमोऽस्तु।

गा सकुं आपका नगमां, वो साज कहां से लाऊं,
सुना सकुं आपको अन्दाज, वो अल्फाज कहां से लाऊं,
चांद और तारों की तारीफ तो की जा सकती है,
कर सकुं आपकी तारीफ, वो अल्फाज कहां से लाऊं।।

पं. अशोक जैन ''शास्त्री'' गुलगंज
जैन मण्डी खतौली उ.प्र.

आचार्य श्री वसुनंदी जी गागर में सागर भरते हैं

आचार्य श्री के प्रथम दर्शन अजमेर वर्षायोग में किये, प्रथम संगोष्ठी ग्रीनपार्क दिल्ली में प्रभावना जन कल्याण परिषद के तत्वावधान में अद्वितीय रही। आचार्य श्री का साहित्य सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यग्चारित्र की त्रिवेणी है। मुनि श्री शिवानन्द जी कृत अक्षर शिल्पी अद्योपान्त पढ़कर लगा कि आचार्य श्री ने तो गागर में सागर भर दिया है।

आचार्य श्री का हिन्दी, संस्कृत, अग्रेंजी, प्राकृत, उर्दू आदि भाषाओं पर पूर्ण अधिकार है। प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग में यह देखने को मिला है।

विशाल संघ के साथ शिक्षा-दीक्षा देकर संघ एवं श्रावकों पर अपना अनुराग बनाये रहते है। आचार्य श्री का व्यक्तित्व इन 4 लाइनों पर आधारित है।

जो जल से भरा होता है, उसे सागर कहते है।
जो रत्नों से भरा होता है, उसे रत्नाकर कहते है।
जो अंधकार को भगा दे, उसे दिवाकर कहते है।
जो वात्सल्य करुणा प्रेम ज्ञान से भरे हो,
उन्हें आचार्य श्री वसुनंदी जी गुरुदेव कहते है।

50वें स्वर्ण जन्म जयंती महोत्सव पर हम सबको यह संकल्प लेना चाहिए कि-लगातार हमारा खान-पान शुद्ध हो, जब खान-पान शुद्ध रहेगा तो खान-दान शुद्ध होगा जब खान-पान और खान-दान दोनो शुद्ध होगें तब जैन संस्कृति की सुरक्षा-संरक्षक-संवर्धन होगा। जो युगों-युगों तक जीवित रहेगी।

ऐलक श्री विज्ञान सागर जी अपने आचार्य श्री वसुनंदि जी के प्रति कितने समर्पित है यह देखकर हमें भी संस्कार ग्रहण करना चाहिए।

पं. सुरेश जैन मारौरा, विशुद्ध विनत छाया,
44 भाग्य श्री कालोनी, विजय नगर इन्दौर (म.प्र.)

चारित्र और चर्या के धनी - आचार्य श्री वसुनंदी महाराज

प. पू. 108 श्री आचार्य वसुनंदी जी महाराज के चरण कमल में त्रिबार नमोस्तु 50वाँ स्वर्ण जयंती की हार्दिक बधाई, हम सभी का सौभाग्य है कि हमें इस युग में महावीर के लघु नंदन के रूप में प. पू. आचार्य श्री वसुनंदी जी के दर्शन प्राप्त हो रहे हैं, मैं अपने आप को पुण्यशाली मानता हूँ क्योंकि मैंने आचार्य श्री के दिग्दर्शन बहुत करीब से करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, मैंने आपकी ''चारित्र और चर्या'' को मुनिपद से लेकर, उपाध्याय, एलाचार्य और वर्तमान में आचार्यपद तक को देखा है, मुझे याद है, श्री दि. जैन लाल मंदिर जी के शिखर पर कलशारोहण का वो भव्य कार्यक्रम, जिसमें प. पू. आ. श्री श्वेतपिच्छाचार्य विद्यानंद जी ससंघ का सान्निध्य प्राप्त था और आ. बाहुबली जी महाराज के पट्टाचार्य श्री धर्मसेन आचार्य श्री ससंघ भी थे मैं भी उस समय कार्यक्रम में था, मैंने देखा आप गुरु के कितने करीब है, आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं था, फिर भी आप बहुत दूर से चलकर आप उस समय गुरुदर्शन को पधारे और आपने अपने स्वास्थ्य को छोड़कर धर्म के प्रति अपना समर्पण किया कई मुनिराज और श्रावक के कहने पर भी आपने विश्राम नहीं किया, और न ही औषधि का सेवन किया, और समय पर पंडाल में जाना प्रवचन करना श्रावकों को उपदेश देना ''धन्य है श्रवण चर्या'' ऐसे ही उपकार आप समाज पर देश पर और अपने भक्तों पर करते है, आप दीर्घ आयु हो आपका स्वास्थ्य उत्तम रहे, इसी भावना के साथ आपको और आपकी ''चारित्र चर्या'' तपस्या को बारम्बार-बारम्बार-बारम्बार नमोस्तु।

आपका भक्त प्रतिष्ठाचार्य
पं. दीपक जैन शास्त्री
हीरापुर (सागर वाले) कृष्णा नगर
दिल्ली, मो. 9313107957

मूलगुण धारी गुणों में दृढ़

अर्हन्तों को, भगवन्तों को, सब संतों के गुण गाऊँ
निज शीश झुकाकर, अर्घ चढ़ाकर, भक्ति गाकर हर्षाऊँ।

(श्री जिन सहस्त्र नाम विधान)

आचार्य मुनि वसुनन्दी जी महाराज ने 11 अक्टूबर 1989 का मुनि दीक्षा ग्रहण की। मुनिश्री वसुनन्दी जी ने 17 फरवरी 2002 को उपाध्याय पद ग्रहण किया। फिर सन 2009 में एलाचार्य पद से सुशोभित हुए। ऐलक श्री विज्ञानसागर जी एलाचार्य मुनि श्री वसुनन्दी जी महाराज के ही सुयोग्य शिष्य हैं। आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज ने आगम विधान सहित सैकड़ों रचनाओं का लेखन व संपादन किया है। मुनिश्री 36 मूलगुण धारी गुणों में दृढ़ और परम पुरुषार्थ करने वाले हैं। मुझे मुनि श्री का वात्सल्य और आशीर्वाद प्राप्त हुआ जिसके लिए मैं अपने आप को परम सौभाग्यशाली मानता हूँ।

दिगम्बर मुनियों का दिगम्बर वेष और उस पर नाना प्रकार के संयम उनके सम्यक चारित को अनुपम बनाते हैं। उनको देखकर दीन हीन मलीन से लेकर विभिन्न कष्ट, संताप और विपत्ति में फंसे इंसान को भी धीरज मिलता है, उनके उद्वेलित मन को, संक्लेषित कर्मों को आराम मिलता है जिससे वह कुछ धैर्य पाते हैं, आराम का मरहम लगा पाते हैं।

हम जानते ही हैं कि समाज में अनेक प्रकार की कुरीतियाँ, विकृतियाँ होती हैं। जिसके मूल में अर्थ, काम की लोलुप्सा होती है, राग द्वेष, माया, मोह, क्रोध लालच आदि विकारों से मलीन रुग्ण मन होता है। लोग डरा धमका कर दबा कर, दबंग, तरीकों को इस्तेमाल करके दीन-हीन, मलीन, कमजोर और सीधे सच्चे इंसानों के साथ छल कपट आदि व्यसनों का इस्तेमाल करके अपने स्वार्थ पूर्ति और स्वार्थी हितों में लगे रहते हैं। ऐसे में चार लोग मिलकर अपने स्वार्थ उद्देश्य के लिए किसी को परेशान कर सकते हैं, किसी को नुकसान पहुँचा सकते हैं, किसी पर भी जुल्म ढा

सकते हैं, किसी के भी कपड़े उतार सकते हैं। ऐसे में जैन दिगम्बर मुनिवेष इन स्थितियों में फंसे आदमी को एक धैर्य, धीरज प्रदान करते प्रतीत होते हैं। जिससे वह आदमी अपने बचे खुचे तिनकों से अपना घौंसला धैर्य के साथ फिर से संभाल सकता है। इन्हीं सब कारणों से दिगम्बर मुनि जैन संत हमारे समाज को एक धीरज भरी दिशा प्रदान करते हैं। इन्हीं सब कारणों से हमारे जैन धर्म के दिगम्बर मुनि महाराज सकल समाज के महारत्न है। ऐसे ही पूजनीय अभिनन्दनीय दिगम्बर वेशधारी आचार्य मुनि श्री वसुनन्दि जी महाराज को मैं अत्यन्त श्रद्धा से नमन करता हूँ।

जैन धर्म के साधू समाज अपनी अनन्य तपस्या में सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक चारित्र अपने साथ रखते हैं। अतएव निश्चय ही परमात्मा भगवान महावीर को अनन्त प्रिय हैं और जैन धर्म के साधू अपनी तपस्या से भगवान की सत्ता का यशोगान, अभिनन्दन, पूजा, ध्यान करते हैं इसलिए अन्यतम है। अपने आप में सिमटे रहकर भी इनका प्रभाव और क्षेत्र व्यापक है। सकल समाज के हित में है। इन्हीं जैन साधू समाज के अप्रतिम रत्न आचार्य श्री वसुनन्दि जी महाराज को मैं अत्यन्त श्रद्धा के साथ नमन करता हूँ।

मैंने किशोरावस्था में जैन धर्म और विज्ञान पर एक निबन्ध लिखा था जिसमें मुझे प्रथम स्थान मिला था और मुझे इनाम मिला था। मैं शुरु से ही इस मत का रहा हूँ कि यदि धर्म सत्य है तो सत्य विज्ञान सम्मत, विज्ञान ग्राह्य भी होगा। जैसे भौतिक सत्य को विज्ञान की तथ्यात्मक कसौटी पर परखा जा सकता है। वैसे ही सत्य, धर्म, अलौकिक धर्म को विज्ञान सम्मत होना होगा। इसी विज्ञान में ज्ञान भी निहित होगा। यह विज्ञान, ज्ञान सम्मत आध्यात्मिक ज्ञान का आलम्बन, सहारा बनेगा।

विज्ञान ने हमें शारीरिक संरचना उसमें कमियाँ, कमियों को दूर करती हुई दवाइयाँ प्रत्यारोपण 3-डी प्रिंटिंग से अंगों का निर्माण आदि अनेक प्रकार की खोजों द्वारा जीव द्रव्य और अजीव द्रव्य में भिन्नता, उसके आकार प्रकार, सेतू बन्ध के बारे में कुछ कहने का मौका दिया है। जीव द्रव्य जीवात्मा के गुण है, मन, विचार और भावनायें। शरीर में कार्बोहाइड्रेट

प्रोटीन तथा डीएनए, आरएनए आदि अनेक तरह के जैविक अणु होते हैं।

लेकिन यह जीवात्मा ही है जो इन जैविक अणुओं में प्राणों का संचार करती है। इन जैविक अणुओं में जीवन को प्रदान करने वाली एक लयात्मक गति को अंजाम देती है। यही जीवात्मा और शारीरिक जैविक अणुओं में सेतु बन्ध है। जब यह लयात्मक गति रुक जाती है तो व्यक्ति निष्प्राण हो जाता है और इसे ही मृत्यु कहा जा सकता है। यह बात तो सही है कि जीवित पदार्थ में लयात्मक गति होती है लेकिन क्या यह जीव द्रव्य, जीवात्मा के कारण से है या भौतिक प्रकृति प्रदत्त है, यह विज्ञान के लिए एक मूल प्रश्न है और विज्ञान सम्मत समझ के लिए जरूरी है।

आज के विज्ञान के युग में इन्हीं खोजों के कारण से व्यक्ति दुविधा में है कि आत्मा और भगवान की जरूरत है ही नहीं। धर्म पृथ्वी पर सनातम समय से है और आज आध्यात्मिक व्यक्ति को विज्ञान का सामना करके उससे पूछने की जरूरत है कि इस लयात्मक गति का स्तोत्र क्या है। अभी तक अजीव द्रव्य से जीव द्रव्य नहीं बनाया जा सका है। कम्प्यूटर पर आर्टीफिशियल इंटेलीजेन्स से दिमागी कार्य प्रणाली का प्रतिरूप तो बनाया जा सकता है लेकिन विचार और भावनायें पैदा की जा सकती हैं या नहीं और जब तक हमें विज्ञान से एक-परस्त जवाब नहीं मिलता है तब तक हमें अपने ऋषि मुनियों की बातों पर ध्यान करना चाहिए कि यह जीवात्मा ही है जो जीवन का संचार करती है।

अजीव द्रव्य, जीव द्रव्य से असंख्यात गुणा है और ऐसे सीमित जीव द्रव्य की, जीवात्माओं की मेरा मानना है कि मुनि महाराज और आर्यिका मातायें अपनी तपस्या से रक्षा करते हैं। ऐसे वन्दनीय मुनियों में श्रेष्ठ आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज को मैं अत्यन्त श्रद्धा के साथ नमन करता हूँ।

संजीव कुमार जैन (आइपीएस)
अतिरिक्त पुलिस महा निरीक्षक, गृह रक्षी एवं
उप निदेशक नागरिक सुरक्षा हरियाणा
(वर्तमान प्रवास, चण्डीगढ़)

वात्सल्य का अपार स्रोत-आचार्य श्री

श्री श्री 108 आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज ने अपने जीवन के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण किये हैं। मेरे लिये बड़े सौभाग्य की बात यह है कि वो मेरे ही गृह जिले धौलपुर की तहसील मनिया के विरौधा गांव में जन्मे हैं और उन्होंने धौलपुर के उसी महाविद्यालय से बी.कॉम की शिक्षा प्राप्त की हैं, जिससे कुछ वर्ष पूर्व मैंने भी बैचलर ऑफ साईंस की उपाधि प्राप्त की थी।

बाल्यकाल से ही जैन धर्म एवं मुनियों में रूचि रखने वाले श्री दिनेश जैन ब्रह्मचारी से लेकर मुनि श्री निर्णय सागर के रूप में दीक्षित भी हो गये और फिर जैन धर्म के सर्वोच्च पद आचार्य पद पर भी पूरे विश्व के श्रेष्ठतम गुरुवर आचार्य विद्यानंद जी द्वारा सुशोभित हुए।

अध्ययन एवं अध्यापन में गहन रूचि रखने वाले आचार्य श्री वसुनंदी जी का यह दृढ़ मत है कि अपेक्षावृत्ति प्राणी मात्र के लिये दु:ख का कारण है, जो जितनी गहरी अपेक्षा रखता है, वह उतना ही अधिक दु:खी हो जाता है, जहाँ अपेक्षावृत्तियों की उपेक्षा हो जाती है, जीवन में वहीं से सुख का मार्ग आरंभ हो जाता है।

इसी साल में अगस्त में मोक्ष सप्तमी पर सम्मेद शिखर की वंदना करने के बाद हमने पूज्य आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज के दर्शन करने का संकल्प लिया और वंदना के पश्चात् मैं, वरिष्ठ पत्रकार श्री रविन्द्र जैन, समाजसेवी प्रदीप जैन मामा और मेरे भतीजे अजय जैन के साथ सीधा दिल्ली पहुँचा। यह सत्य है कि जब मैंने आचार्य श्री के चरण स्पर्श किये तो मुझे उनके चरणों में अपने जन्म स्थान राजाखेड़ा की मिट्टी की सोंधी-सोंधी खुशबू महसूस हुई। अगले ही क्षण आचार्य श्री ने अपना हाथ मेरे सिर पर रखा, तो महसूस हुआ कि वे अपनी तपस्या से प्राप्त ज्ञान की किरणों को मेरे शरीर में प्रवाहित कर रहे हों। मैंने कई मुनि आचार्यों के दर्शन किये, लेकिन ऐसा वात्सल्य शायद ही कहीं मिला हो।

मुनि श्री निर्णय सागर जी एवं आचार्य श्री वसुनन्दी जी के बारे में काफी सुना था। जब भी गृह नगर राजाखेड़ा जाने का मौका मिला वहाँ परिजन व मित्रगण आचार्य श्री की चर्चा जरूर करते हैं। मेरे बचपन के

वरिष्ठ साथी श्री जयकुमार जी जैन ने आचार्य श्री से मुनि श्री ज्ञानानंद जी के रूप दीक्षा ली है तो मेरी आचार्य श्री और मुनि श्री ज्ञानानंद जी के दर्शन करने की इच्छा बढ़ भी गई थी। लगभग 1 घण्टे आचार्य श्री ने अपना वात्सल्य हमें दिया। इस दौरान आचार्य श्री के आदेश पर मैंने अपनी कुछ कविताएं भी सुनाई।

एक बात जो आचार्य श्री ने मुझे नहीं बताई, लेकिन मेरे मन की जिज्ञासा थी कि मुनि श्री निर्णय सागर जी से आचार्य श्री वसुनन्दी बनने की यात्रा का कथानक क्या है? जन्म के बाद पिता और दीक्षा के बाद गुरु बदलना असंभव है, लेकिन असंभव को संभव करने का नाम ही आचार्य श्री वसुनन्दी है, यह बहुत ही हिम्मत और जज्बे की बात है। पूज्य वसुनन्दी जी शायद एकमात्र साधु है जो विपरीत परिस्थिति में भी सच कहने का साहस और सलीका रखते हैं। ऐसे साधुओं के संतत्व की रक्षा ईश्वर स्वयं करता है। इसलिये पूज्य आचार्य श्री वसुनन्दी जी को पिता और गुरु के रूप में पूज्य आचार्य श्री विद्यानंद जी महामुनिराज की शरण मिली है। जब हम छोटे थे, तब सुनते और पढ़ते थे कि देश की तेज तर्राट प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी भी आचार्य विद्यानंद जी को अपना गुरु मानती है। आचार्य श्री विद्यानंद जी की सलाह इंदिरा जी के लिये आदेश होता था, जिसका पालन भी होता था। ऐसे आचार्य श्री विद्यानंद जी का शिष्य होना किसी के लिये भी गर्व और गौरव की बात हो सकती है। दिल्ली में जहाँ दिगम्बर जैन संतों का समागम होता रहता है, वहाँ संतों की भीड़ से आचार्य श्री विद्यानंद जी ने आचार्य श्री वसुनन्दी जी के रूप में हीरा छॉट लिया है और आचार्य पद देकर उन्हें अपना उत्तराधिकारी बना लिया है।

यह सुखद संयोग है कि आचार्य श्री वसुनन्दी जी में अपने गुरु आचार्य श्री विद्यानंद जी जैसा ज्ञान आचार्य श्री विद्यासागर जी जैसी तपस्या और पुराने आचार्यों जैसा वात्सल्य, तीनों एक साथ मिलते हैं। आप कह सकते हैं कि त्याग का हिमालय, शिखर सी तपस्या और वात्सल्य की मूर्ति, एक साथ देखनी हो तो आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज के दर्शन अवश्य करें। मेरी ओर से आचार्य श्री के चरणों में नमोस्तु।

विनयावत-पवन जैन, (आई.पी.एस.) भोपाल, म.प्र.

युवा पीढ़ी के मार्गदर्शक

राजस्थान की वह पावन धरा जहाँ वीरों ने अपने पराक्रम के द्वारा शत्रुओं के मान को न खंडित किया, जहाँ वीरांगनाओं ने अपने शील की रक्षा हेतु अपने प्राणों की आहुति दी। जिस चम्बल के खंडडरों के नाम को सुनकर मन कम्पायमान हो जाता हो उसी पावनधरा पर जिस मानव ने सारे दु:खी जनों को शन्ति का पाठ पढ़ाने हेतु जन्म लिया। धन्य वह मनिया की पावनभूमि जहाँ आचार्य वसुनन्दी जैसे महामानव का 50 वर्ष पूर्व अवतरण हुआ। और छोटी सी आयु में मात्र संयम के पथ को ग्रहण कर अपने मानव जीवन को सार्थक किया। पचासवें अवतरण दिवस पर हम नतमस्तक है। आचार्य श्री के चरणों में जहाँ बचपन से ही सभ्यता संस्कृति के चक्कर में पढ़कर मानव अपने आपको नियंत्रित तो कर लेता है परन्तु उसका सहज विकास रूक जाता है जितना वह भौतिक सुखों की ओर आकृष्ट होता है तनाव और विकारों के कारण व्यक्ति कुन्ठाओं में जकड़ जाता है जिसके कारण आज की पीढ़ी बहुत व्याकुल है। ऐसे समय में आचार्य वसुनन्दी जी महाराज की अमृत वाणी उन दु:खी मानवों के लिये भक्ति सुधारस का कार्य कर रही है। आचार्य श्री की वाणी में ऐसा जादू है कि मानव भोगों की अच्छी दौड़ को छोड़कर त्याग संयम के रथ पर आरुण होकर अपने मानव जीवन को सार्थक कर लेता है इसका मुख्य उदाहरण आचार्य श्री के द्वारा दीक्षित साधुओं को देखा जा सकता है अधिकांश साधु बाल ब्रह्मचारी के रूप अपनी साधना में संलग्न है। आचार्य श्री ने अपनी साधना के माध्यम से हजारों धर्म विमुख युवाओं को धर्म के पथ पर अग्रसित किया है।

अपनी लेखनी के माध्यम से कठिन से कठिन विषय को भी सरल बनाया है, मोटे-मोटे ग्रन्थों को कथानकों के माध्यम से छोटी-छोटी पुस्ताकार रूप देकर आज की नई पीढ़ी को स्वाध्याय से जोड़कर एक अनुठा कार्य आचार्य श्री द्वारा किया गया है इस कार्य के लिये समाज उनका ऋणी रहेगा। आचार्य श्री वात्सल्य के भण्डार है कोई भी पहुँच

जाय तो उसको प्रेम वात्सल्य के साथ आशीर्वाद जरूर मिलेगा कोई नया व्यक्ति हो या पुराना किसी को यह भी आभाव नहीं होता कि में पहली बार आचार्य श्री के पास आया हूँ या बहुत पहले से परिचित हूँ छोटा हो या बड़ा गरीब हो या अमीर सबके लिये उनका बरदहस्त उठता है। जयपुर में हम और डा. नलिन के. शास्त्री गये थे पता चला कि यहाँ आचार्य वसुनन्दी जी महाराज कुशल वक्ता, श्रेष्ठ लेखक, सार्थक कवि, आत्म साधक, आगम मार्गी, वात्सल्य-मूर्ति, तपस्वी आ. वसुनन्दी महाराज के चरणों में शत् शत् वन्दन।

आचार्य श्री के बारे में वर्णन करने के लिए शब्द भी पर्याप्त नहीं है। भाषाओं के ज्ञाता एवं शार्टहैण्ड एवं स्टेनोग्राफी का ज्ञान के साथ, आचार्य श्री ने 250 पुस्तकों का सम्पादन किया है साथ ही प्राकृत भाषा में विशेष मौलिक कृतियों की रचना करके जिनवाणी माता की महत्ती सेवा की है।

आपका स्वभाव नय, वाणी मधुर, बुद्धि कुशाग्र, आगमचर्या के साथ आपका मूल लक्ष्य आत्मकल्याण के साथ-साथ पर कल्याण भी है।

मनोज जैन पाटनी

आई.ए.एस. कर्नाटक

डिप्टी कमिशनर, गदग, गुलवर्गा (कर्नाटक)

दिव्य साधना दिव्य वचन से,
मीठे प्रवचन को कहते हो।
दिव्य समाये कण-कणता में,
बाईस परिषह सहते हो।।
ज्ञानी-ध्यानी आप हो गुरुवर
आत्म साधना करते हो।
जब भी चलते खुली सड़क पर
दिगम्बरत्व में रहते हो।।

–साभार 'स्वर्णोदय'

MESSAGE

I am honored to pen a few words on the occasion of celebration of 50th Birth anniversary of Param Pujya Vasunandi Ji Maharaj who is an inspiration for millions of his followers across religious lines. He is a prolific writer and has written more than 250 Granths. It is good fortune for Jains that such a brilliant orator is there to enlighten us on various aspects of Jainism and intricacies of life in general in a very simple manner which have come to be termed as Meethe Pravachan. Disciple of Muni Vidyanand Ji, he is spreading his message far and wide. Knows several languages and due to his blessings Satyarthi Media and Shri Shri Satya Bodh Masik Patrika are being published guiding the Samaj. He has blessed Meerut /Firozabad/Tundla /Mathura/ Shauripur Bateshwar to name a few in UP with Chaturmaas.

We all pray for a very long, fruitful and blessed life for Vasunandi Ji Maharaj. May he continue to guide us minimum for another half a century with his blessings. In today's troubled times there is all the more need for highly learned and pious people like him to lead us.

Arvind Kumar Jain IPS
(EX. DGP UP)
ADVISER CIRCLE UP
EAST Indus Towers

शुभकामना

परम पूज्य आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज के 50वाँ स्वर्ण जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में प्रकासित पुस्तक 'अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी' के विमोचन दिनांक 17 दिसम्बर 2017 अतिशय क्षेत्र जय शांतिसागर निकेतन मंडोला, गाजियाबाद में ऐलक श्री विज्ञानसागर जी महाराज के दीक्षा दिवस के अवसर पर की जा रही है शुभकामना सहित महाराज जी के चरणों में मेरा शत्-शत् प्रणाम है

गोरखनाथ यादव

(पुलिस इन्स्पेक्टर)

गौतमबुद्धनगर, उत्तर प्रदेश

जबसे देखा हमने गुरुवर
नहीं निगाहें हटती है।
क्या पाना है किसको पाना,
यही इरादें भरती है।
मोक्षमार्ग के पथिक आप हो,
आपसे साँसे चलती है।
आप बिना भी क्या जीना है,
आपमें साँसे पलती है।।

–साभार 'स्वर्णोदय'

वात्सल्य एवं दया की मूर्ति : आचार्यश्री

परम पूज्य आचार्य श्री जी के चरणों में बारम्बार नमोस्तु अर्पित करते हुए अपनी लेखनी का प्रारम्भ करती हूँ। इस संसार में प्रतिक्षण अनेक जीवात्मायें जन्म लेती है और सांसारिक विषय-कषायों के मोह जाल और और रागद्वेष के कीचड़ में फंस कर जीवनचक्र को पूर्ण कर इस अनमोल नरतन रतन को गंवा देती है। परंतु कुछ विरले जीव होते हैं जो इस अमूल्य धरोहर को संवार कर नर से नारायण बनने की राह अपनाते है।

निश्चित ही वे जीव महान पुण्य के धारी होते है जिनके हृदय में सांसारिक जीवन में चारों आश्रमों का पालन करना तो एक प्रकृति प्रदत्त, मशीनीकृत प्रक्रिया है। लगभग हर प्राणी जन्मोपरांत बाल्यावस्था, किशोरावस्था को पूर्ण कर विवाह कर संतानोत्पत्ति आदि चरणों को पूर्ण करता हुआ वृद्धावस्था को प्राप्त होता है परन्तु जीवनरूपी नदी की धारा को वैराग्य के पथ पर मोड़कर कठोर तपस्या ओर कठिन परिषहों को सहना साथ ही अन्य जीवों को भी मोक्ष मार्ग की ओर प्रेरित करना एक महान सौभाग्य और अनन्त जन्मों के पुण्य का फल होता है।

इस अनंतानंत पुण्य के धारी, वैराग्य, आध्यात्म एवं ज्ञान की त्रिवेणी (माता का नाम) से उत्पन्न हम मन से वंदनीय परम पूज्य 108 आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज के चरणारविंद को मेरा बारंबार नमन है। प्राणीमात्र के प्रति वात्सल्य एवं करूणा की भावना रखने वाले आचार्य श्री जी का इस धरा पर मंगल अवतरण, 30 अक्टूबर 1967, को मंगलवार के दिन धौलपुर राजस्थान की पावन धरा पर हुआ।

परंतु वे जानते थे कि इस धरा का इस धरा पर सब धरा रह जाएगा। तो जो साथ जाएगा उसे प्राप्त करने के लिए सन् 1979 में उनके हृदय मे वैराग्य के अंकुर प्रस्फुटित हुए इनके पल्लवित करने के लिए आपने मात्र 16 वर्ष की उम्र में सन् 1983 में म.प्र. की नगरी मुरैना में जब आपने आचार्य श्री विमल सागर जी के समक्ष ब्रह्मचर्य दीक्षा गहण की।

पुण्योदय में आचार्य श्री के पिताश्री आदि तीर्थंकर भगवान के नाम राशि है। आचार्य श्री जी ने भी अपने पिता के नाम को सार्थक करने हेतु प्रथम मोक्षगामी भगवान बाहुबली के पदचिन्हों पर चलते हुए अपने कठिन परिषहों का प्रारंभ भिंड में प्रथम कैशलोंच से किया। प्रथम केशलोंच भूमि का प्रभाव कुछ ऐसा हुआ कि सन् 1989 में आपकी मुनि दीक्षा भिण्ड में ही संपन्न हुई और नाम मिला 108 मुनि श्री निर्णय सागर जी।

माता-पिता का निर्णय कि बाल्यावस्था में आपका नाम दिनेश उर्फ रवि अर्थात् सूरज रखना कितना सार्थक हुआ कि आज आपकी यशकीर्ति सूरज से भी अधिक आभायमान एवं आपका तेज आदित्य में भी अनंतगुना दैदीप्यमान है।

इस तरह ब्र. दिनेश से क्षुल्लक जिनेन्द्र सागर जी से मुनि निर्णय सागर जी की यात्रा आगे बड़ी तो 2002 ई. में वसंतपंचमी के पावन अवसर पर जब पूरी वसुंधरा समृद्ध थी माँ सरस्वती आपके कंठ में जा विराजी और आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज द्वारा उपाध्याय पद प्रदान किया गया।

मात्र 34 वर्ष 4 माह की आयु में जीवन के इस पड़ाव पर पहुँचने वाले गुरु श्री की यात्रा मानो पूरे वसंत पर थी जो 30-01-2015 को मात्र 48 वर्ष की उम्र में गुरु जी को आचार्य परमेष्ठी की पदवी पर ले आई और अनेकों जीवों को भाग्योदय की राह मिल गई।

जीवों के भाग्योदय के क्रम में वर्तमान में आचार्य श्री जी द्वारा दीक्षित अनेक शिष्यगण स्वयं की आत्मा के उत्थान एवं धर्मोन्नति के मार्ग में रत है। आपके द्वारा लगभग 250 ग्रंथों का संपादन किया गया है। आपको 10 हजार गाथाऐं व श्लोक आदि मौखिक याद है।

आचार्य श्री जी के आशीर्वाद में गाजियाबाद के निकट मंडोला में ''जय शांति निकेतन क्षेत्र'' का भव्य कार्य किया जा रहा है। यह क्षेत्र त्यागी तपस्वियों की साधना का केंद्र बनकर अनेक जीवात्माओं की मोक्ष साधना एवं आत्म कल्याण में सहायक होकर धर्मोन्नति का पथ प्रशस्त करेगा।

आचार्य श्री जी की पूरी यात्रा यदि जनसामान्य के दृष्टिकोण से देखें तो अत्यंत कष्टों से भरी प्रतीत होती है परंतु जिस हृदय में शिव रमणी को प्राप्त करने की तीव्र उत्कंठा हो उसे तो राह का हर शूल-फूल ही नजर आता है।

अथक परिश्रम, मनोबल और साहस के धनी मुनिवर कुशल वक्ता, श्रेष्ठ लेखक अनेक भाषाओं, बोलियों, लिपिओं और ग्रंथों के ज्ञाता गुरुवर, कुशल लेखक, संपादक, कवि तथा दूरदर्शी व्यक्तित्व के धनी है। दिगम्बर वेष धारण कर उसके अनुरूप संयम साधना का पालन करने वाले हमारे श्री आचार्य, उपाध्याय एवं साधु परमेष्ठी जिस तरह कठोर परीषह सह कर मोक्षमार्ग की साधना में रत रहते हैं वह हम रागी द्वेषी संसारी जीवों को प्रेरणा एवं पुरूषार्थ की राह दिखाता है। ऐसे महासंयमी, तपस्वी वात्सल्य एवं दया की प्रतिमूर्ति महान आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज युगों-युगों तक हमे आशीष देवें ऐसी हम समस्त जीवों की कामना है एवं समस्त तीन कम नौ करोड़ मुनिराज, आर्यिका मातायें, ऐलक, क्षुल्लक-क्षुल्लिकायें, प्रतिमाधारी व्रती भाई-बहनें, त्यागीव्रती श्रावक-श्राविकायें निरंतर आरोग्यपूर्णता के साथ आहार-विहार-निहार की अनुकूलताओं में निरंतर निष्कंटक होकर मोक्षमार्ग पर बढ़ते रहें। ऐसी हम सबकी भावना है, कामना है।

सूबेदार मोनिका जैन
जूनियर रिजर्व इंस्पेक्टर
गुना (म.प्र.)

क्या कहती है आपकी जन्म कुण्डली

जन-जन के संत, राष्ट्र संत परम पूज्य आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी महामुनिराज के पावन चरणों में रवि जैन गुरुजी के द्वारा शब्दरूपी पुष्पांजलि एवं नमोस्तु।

सूर्योदय की किरणों की पावनता, पूर्णिमा की चाँदनी की शीतलता, गंगोत्री से निकलते जल की पवित्रता, जिस प्रकार मन को आनंदित करती है। कुछ ऐसे ही आचार्य श्री वसुनंदी जी महामुनिराज की मुद्राचर्या सभी को परम आनंदित करती है। संयम इस मनुष्य पर्याय की अनमोल चर्या है। जो सिर्फ और सिर्फ मनुष्य पर्याय में ही धारण की जा सकती है। आचार्य श्री वसुनंदी जी, मुनिव्रत का संयम धारण करके आत्मोद्धार के साथ जन-जन का कल्याण कर रहे हैं।

परम पूज्य करुणा के अगम्य सिंधु, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, वात्सल्य रत्नाकर आचार्य 108 श्री वसुनंदी जी महामुनिराज दिगम्बर जैन परंपरा के ऐसे महान संत हैं जो सही मायने में साधना, ज्ञान, ध्यान व तपस्यारत होकर आत्मकल्याण के साथ-साथ प्राणी मात्र के कल्याण के मार्ग पर अग्रसर है। वे पंचमकाल में चतुर्थकाल सम संत हैं। आचार्यश्री वसुनंदी जी महामुनिराज की तपस्तेज सम्पन्न एवं प्रसन्न मुख मुद्रा प्रायः सभी का मन मोह लेती है। आचार्य श्री के कंठ में भी अपने गुरु श्री 108 विद्यानंद जी महामुनिराज के समान ही सरस्वती का वास है।

आचार्य श्री की पावन वाणी सत्यं शिवं सुन्दरम् की विराट अभिव्यक्ति मुक्ति द्वार खोलने में सर्वथा सक्षम है, जिन्होंने अपनी अनवरत साधना से जीवन की कलात्मकता का भारतीय संस्कृति के अनुरूप अभिव्यक्त किया है। परंपरागत धार्मिक व सांस्कृतिक धारणाओं में व्याप्त कुरीतियों एवं विघटन को समझकर व उन्हें हटा देने को व्याकुल हैं। पूज्य आचार्य श्री के उपदेश और साहित्य हमेशा जीवन-समस्याओं की गहनतम गुत्थियों के मर्म का स्पर्श करते हैं। जीवन को उनकी समग्रता में जानने और समझने की कला से परिचित कराते हैं। आचार्य श्री के साधनामय तेजस्वी जीवन

को शब्दों की परिधि में बाँधना सम्भव नहीं है।

आचार्य श्री वसुनन्दी जी ने अपने साहित्य मीठे प्रवचन की कृति ''दृश्य अंतर का'' में एक जगह लिखा है कि **जिसको मानो उसकी मानो भी तो** जिन प्रभु परमात्मा, आदिनाथ भगवान्, महावीर भगवान्, राम, हनुमान, बुद्ध, ब्रह्मा, कुन्दकुन्दाचार्य, यतिवृषभाचार्य, समन्तभद्र स्वामी, उमास्वामी, शिवकोटि आचार्य, पूज्यपाद स्वामी, देवनंदि, अकलंक स्वामी, वीरसेन स्वामी, जिनसेन स्वामी, तुलसी, वाल्मीकि, स्थूलभद्र, रहीम, कबीर, रसखान, एकनाथ आदि को यथार्थ मानना तभी सार्थक है, जब हम उक्त संत, अरिहंत भगवंत की वाणी को भी मानें। इनकी बात न मानने का अभिनय खुद के साथ बेईमानी है और खुदा को धोखा देना तथा समाज के साथ भी बेईमानी है, नाइंसाफी है। अतः कल्याण तभी संभव है, जब आप भी इन महापुरुषों की बात मानें।

इस सोच से ही पता चलता है कि आचार्य श्री 108 वसुनंदी जी महाराज जैनों ही नहीं अपितु जन-जन के संत हैं।

चूँकि मैं स्वयं ज्योतिष का विद्यार्थी हूँ तो इसलिए आचार्य श्री वसनंदी जी महामुनिराज की जन्म पत्रिका की चर्चा करना भी जरूरी हो जाता है। आचार्य श्री वसुनन्दी जी की जन्म तारीख 3 अक्टूबर 1969, जन्म समय 10:30 रात्रि व जन्म स्थान ग्राम विरोंधा, तहसील-मनियाँ, जिला धौलपुर (राजस्थान) है।

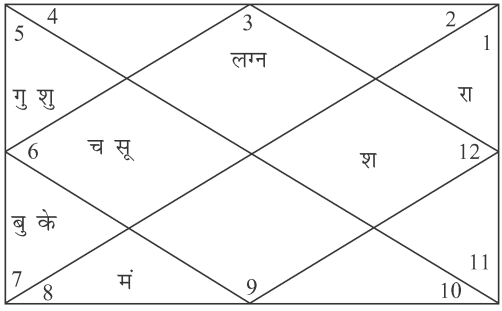

आचार्य श्री की मिथुन लग्न की कुंडली बनती है। उसमें उनकी जन्म राशि कन्या होती है। कुंडली में लग्नेश बुध के साथ केतु विराजमान हैं

जो हमेशा धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए जातक को आगे रखता हैं कुंडली के छटवों भाव जो रोग, ऋण, शत्रु का होता है उसमें स्वग्रही मंगल का विराजमान होना यह दर्शाता है कि जातक अपने सबसे बड़े शत्रु काम, क्रोध, मान, माया, लोभ आदि पर विजय प्राप्त करेगा। कुंडली में गुरू के साथ शुक्र का बैठा होना इस बात की ओर इशारा करता है कि जातक भोग विलास से दूर ही रहेगा। कुंडली के सप्तम भाव पर दशम भाव में बैठे शनि और एकादश भाव में विराजमान राहु की दृष्टि वैवाहिक जीवन से दूर ले जाने का काम करती है। तृतीयेश सूर्य का चतुर्थ भाव में बैठा होना जातक के नेम फेम प्रसिद्धि की गारन्टी बन जाता है। वैराग्य के लिए सबसे जिम्मेदार राहु ग्रह की महादशा और शनि की अर्न्तदशा मात्र 21 वर्ष की आयु में आचार्य श्री वसुनन्दी जी को क्षुल्लक दीक्षा दिलवाने में सहायक रही। मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाने के पश्चात राहु में बुध की अंतर्दशा में मुनि दीक्षा का सौभाग्य मिला। 17 फरवरी 2002 में ज्ञान के कारक गुरु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही थी। उसी समय आचार्य श्री को उपाध्याय पद से अलंकृत किया गया। मिथुन लग्न और कन्या राशि होने के कारण स्वभाव से सौम्य आचार्य श्री को 1 अप्रैल 2009 को कुंडली में मोछ-भाव के स्वामी शुक्र की अंतर्दशा में एलाचार्य पद से नवाजा गया। एक बार पुनः गुरु की महादशा और राहु की अन्तर्दशा में मात्र 48 वष्र की आयु में आपको वयोवृद्ध आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज द्वारा आपको आचार्य पद से सुशोभित किया गया।

सिद्धहस्त लेखक, सरस्वती पुत्र, कवि हृदय ऐलक श्री 105 विज्ञानसागर जी महाराज द्वारा आचार्य श्री वसुनंदी जी के 50वां स्वर्ण जयंती महोत्सव के पावन अवसर पर पुस्तिका में भारत व देश विदेश के 50 विद्वानों से ''विद्वानों की दृष्टि में आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज'' के जीवन चरित्र व प्रेरणादायी प्रसंगों को प्रकाशित कराने का निर्णय निश्चित रूप से अपने गुरु के चरणों में सच्ची विनयांजलि है।

मैं **पारस चैनल फेम** रवि जैन गुरुजी (विख्यात जैन ज्योतिषाचार्य एवं हस्त रेखा विशेषज्ञ) द्वारा आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज के जीवन चरित्र के संबंध में लिखते हुए मुझे ऐसा प्रतीत होता है जैसे कोई दीपक

दिन के उजाले में सूर्य की तेजस्वी उपस्थिति का वर्णन करे। आचार्य श्री वसुनंदी जी के लिए दो लाइनें लिखकर अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

यह धन्य आपकी जिन मुद्रा, यह धन्य-धन्य है निर्ग्रन्थ दशा।
मुनि नाम अलौकिक जिनचर्या, जो प्रकटाती है अरिहंत दशा॥

पारस चैनल फेम रवि जैन गुरुजी
विख्यात जैन ज्योतिषाचार्य एवं हस्तरेखा विशेषज्ञ, दिल्ली

युवा को शक्ति कहते गुरुवर
संस्कार जगाने आये हो।
इतिहासों में नाम लिखेगा,
इतिहास बताने आये हो।
धर्म जागृति का नारा लेकर,
आपने सूत्र बताये है
सोती हुई मानवता को मानो
आप जगाने आये हो॥

–साभार 'स्वर्णोदय'

श्रमण संस्कृति उद्‌गाता : आचार्यश्री 108 वसुनंदी जी महाराज

श्रमण परम्परा के समर्थ सार्थवाह : परम पूज्य आचार्यश्री

इस देश के आध्यात्मिक क्षितिज पर आविर्भूत निर्विकार, निर्द्वंद, नि:शंक और जाज्वल्यमान साधक के प्रशस्त रूप में आविर्भूत अप्रतिम, साधनाशील और अमिट हस्ताक्षर हैं; पूज्यपाद आचार्यश्री वसुनंदी जी महाराज, जो जन-जन के श्रद्धा केन्द्र बन कर उभरे हैं उफ्रूत, सम्यक्त्व चिंतन के सत्यान्वेषी नक्षत्र के रूप में। मानवता की मुंडेर पर छाए अँधियारे को दूर भगाती, अकम्प, चैतन्य दीपशिखा का प्रेरणादायक और वात्सल्यमयी इस नाम को इस युग ने पूजित किया है; परम पूज्य आचार्यश्री वसुनंदी जी महाराज के रूप में। उनकी जैनेश्वरी तपस्या के उषप से प्रर्वतित सस्कार-प्रसत्ति के प्राखर्य से, जन-जन के जीवन का स्मार्य-प्राग्रय दीप्त है और नवोन्मेषी सद्गुणों से ऊर्जस्वित हो, वे प्रेरणास्रोत बन गए हैं उस ऊर्जस्वी और मनस्वी सामाजिक-आध्यात्मिक शक्ति के सुमंगलकारी रूप के, जो पर्याय है- जैन अस्मिता का। जैन संस्कृति के बहुमुखी विकास के अतिरिक्त, मनुष्य की मनुजत्व संप्राप्ति की यात्र को समर्पित पूज्य आचार्यश्री के त्याग-संयम, आचार-विचार, आगम-सम्बोधि-प्रसार, बौद्धिक प्राखर्य, शुचिता-समर्पित जीवन, नैतिकता - केंद्रित चिंतन-बोध, सहअस्तित्वमयी सहिष्णु जीवन शैली तथा साधर्मी वात्सल्य के संवर्धन के निमित्त किये जा रहे प्रबोधनों ने काल के अपरितमित, अनवरत प्रवाह के अनहद नाद को सामाजिक नव-स्पंदनों की नव-ऊर्जा से सदैव स्फूर्त किया है। युगपत चिंतन के परिष्कार से समस्त मानवीय चेतना को प्रभावित करते हुए आपने समता, स्वतंत्रता, अहिंसा और अनेकांत के दार्शनिक अवबोधों की सफल, सहज और सुखद अनुभूति जन-मानस को कराई है। मंदाकिनी की अजस्रधार जैसी अविकल सम्पूर्णता में। आपके साधनाशील सम्यक्त्वमयी जीवन से निकलते सहज

प्रेरणा के स्वर लोकमय हैं, धर्ममय हैं, जो प्रत्येक मन को अक्रोध, क्षमा, दया, शान्ति, अनुद्वेगशीलता, पारस्परिक प्रेम, निर्लिप्तता, निःशंकता, निर्द्वंदता, मृदुता, श्रद्धाशीलता, ज्ञानशीलता और आचरणशीलता की ओर अभिप्रेरित करते हुए करते हैं संचार; नवचैतन्य का।

महातपस्वी, महामनस्वी, परम पूज्य आचार्यश्री 108 वसुनंदी जी महाराज के जीवन में काव्य सी सरसता है, वाणी में संगीत के स्वरों सी सुरीली, सुमधुर मंदाकिनी का सा तेजोमय प्रवाह है, प्रबोधन में वीतराग ईश्वर का संदर्शन है, साधनामय तपोनिष्ठ जीवन में नंदन वन का पावन पवित्रत्व है, चर्या में गंगा की सी पतित-पावनी पवित्रता है, मौन में ध्यान का गीत है, आत्म-साधना का संगीत है और आपकी रत्नत्रयी साधना का नवनीत - विचार, भाषा, आचार और व्यवहार में समन्वय की उदात्त वर्णमाला रचते हुए आत्म-अवगाहन की संप्रेरणा देता है-अहर्निश, प्रतिपल। आपकी करुणा और अनुकम्पा की स्निग्धता कमलपत्रों पर तैरती ओस बूंदों की दीप्ति के साथ मानव जीवन के हर कोने से तम को हरती है तथा गुणग्राहकता, ग्रहणशीलता और विनम्रता की त्रिपदी का युगपत अनुभव कराती है। पूज्यश्री के परिणामों की उत्कृष्ट भाव-विशुद्धि एवं मुख मण्डल से निकलता संयमी जीवन का तेजोमय प्रकाश उनकी आत्मा में विराजित देव, शास्त्र और गुरु के प्रति उनके अक्षुण्ण श्रद्धान को सदैव रेखांकित करता रहता है और देता है प्रेरणा भी; आत्मा की विशुद्धि और कर्मों की निर्जरा की।

काल के कपाल पर उदय एक अभ्रथ साधक का

पूज्यपाद आचार्यश्री वसुनंदी जी महाराज का राजस्थान की वीर प्रसवनी धरती पर उदय, आत्मविश्वास, रत्नत्रयी-साधना-उन्मुख श्रेष्ठ प्रयत्न, वीतरागी समर्पण और तेजस्वी संकल्पों की समन्वित युति को रेखांकित करता है। विरोंधा (मनिया)-धौलपुर की आध्यात्म स्पंदित भूमि पर 03 अक्टूबर 1967 को जैन समाज के श्रेष्ठिवर श्री ऋषभचन्द्र जी जैन एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती त्रिवेणी देवी जी के घर-आँगन में पुत्र रत्न

का फूल खिला और यह संस्कारी जैन परिवार प्रमुदित होता रहा; बालक के चेहरे पर व्याप्त तेजोमय कान्ति के संदर्शन से। मैया हमेशा निहारती रहती और किसी की भी बुरी नज़र से बचाने के लिए डिठौना लगाती। माता-पिता की लाड़ले दिनेश स्कूल जाने लगे और प्राप्त करने लगे अपनी प्रारम्भिक शिक्षा; अपने कस्बे में। कुशाग्र बुद्धि का यह बालक शास्त्रों के पारायण में पारंगत था पर उसका चित्त अन्य सहपाठियों से भिन्न था; देव दर्शन और स्वाध्याय एवं आत्म-चिंतन की अभ्यासी वह बन रहा था - साधनाशीलता के गुण उसमें प्रकट हो रहे थे; जो माता-पिता के अतिरिक्त समस्त परिवार जनों को एवं शिक्षकों को भी विस्मित कर देते थे। धौलपुर के शासकीय महाविद्यालय से उसने वाणिज्य विषय में स्नातक की उपाधि भी प्राप्त कर ली- माता-पिता की अभिलाषा का सम्मान करने हेतु; पर उसका अंतर्मन तो जैन विद्या के विशाल रत्नाकर में अवगाहन करने हिलोड़ें ले रहा था। वह तो छोटी सी उम्र में ही समझने तथा समझाने भी लगा; आत्मा के गूढ़ रहस्यों को, पुद्गल की नश्वरता को, जड़ में व्याप्त मोह की निस्सारता को।

समय बीतता रहा, दिन, हफ्ते, महीने और साल भी-युवा दिनेश के चेहरे पर अभिव्याप्त कान्ति और ब्रहमचर्य की साधना से दीपित उसकी उर्जस्विता, उसके यौवन को जहां एक ओर परिपूर्ण कर रही थी; वहीं दूसरी ओर उसका आतंरिक व्यक्तित्व मनस्विता और महनीयता की तेजोमय प्रस्तुति बन रहा था। उसका मानस, मात्र सैद्धांतिक ज्ञान को आत्मसात करने के लिए उन्मुख नहीं था; बल्कि वह तो वीतराग विज्ञान की प्रयोगशाला में आत्मा की शुद्धि के अभीष्ट की प्राप्ति हेतु निरंतर शोधन के प्रयोग करना चाहता था। फ़क़ीरी में रचा-बसा युवा मन, हो गया प्रवृत्त वैराग्य की ओर जनवरी 1979 में और शनैः-शनैः व्रतों के अंगीकरण के अभ्यास ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत (1983), ब्रह्मचारी दीक्षा (ज्येष्ठ वदी 14,14 मई, 1988-अतिशय क्षेत्र सिंहोनिया जी जिला मुरैना) दो प्रतिमा व्रत (राजखेडा धौलपुर, राजस्थान में आचार्य श्री सुमति सागरजी महाराज से), सात प्रतिमा व्रत (जुलाई 1988; अतिशय शेत्र

बरही -भिंड,म .प्र.) ग्रहण किये और अपने मानस का परिशोधन किया; जिससे हो गया चित्त का संप्रवर्तन - अगले पड़ाव के लिए। 20 साल की छोटी सी वय में, बड़ा सा काम हुआ - जब ब्रह्मचारी दिनेश का रूपांतरण हुआ क्षुल्लक श्री जिनेन्द्र सागरजी महाराज के रूप में, 16नवम्बर 1988, तदनुसार कार्तिक वदी 7 वि.संवत 2045, बुधवार को अतिशय क्षेत्र बरासों जिला भिंड (म .प्र.) में। संसार की असारता का अभिज्ञान होता रहा और आत्मोत्कर्ष की साधना करती रही प्रतिपल साधक को, परिपक्व भी। साधक को कहाँ था विश्राम; वह तो था मोक्षमार्ग का पथिक और युवा मन, युवा तन के साथ सम्यक युति रख; बढ़ गया निर्ग्रन्थ मुनि स्वरूप में 11 अक्टूबर 1989; तदनुसार आश्विन सुदी 11 वि.संवत 2046, बुधवार को भिंड (म .प्र.)श्री दिगम्बर जैन मंदिर,नसिया जी में- श्री 108 निर्णय सागर जी मुनिराज के आराध्य स्वरुप में। उपाध्याय पद 17 फरवरी 2002, बसंत पंचमी के शुभ्र दिन सम्प्राप्त हुआ और फिर 01अप्रैल 2009, तदनुसार चैत्र सुदी 6 बुधवार, वि.संवत 2066 को एलाचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज का आविर्भाव हुआ। मोक्ष मार्ग का अविरामी पथिक बनने की साधना वृद्धिंगत हुई और एक अप्रतिम श्रमण साधक, अपने अविरामी साधना पथ पर अग्रसर होता रहा। शुचितापूर्ण रत्नत्रयी साधना प्रखर होने लगी-प्रतिपल, एकांत में लम्बी साधना गतिमान होने लगी और आप करने लगे विस्तीर्ण - सूक्ष्मता से अहिंसक जीवन जीने के प्रयोगों को; जन-जन के बीच अपने उपदेशों के माध्यम से और उससे भी ज्यादा अपनी साधना के उषप द्वारा। एलाचार्यश्री को आचार्य पद पर आसीन किया इस युग के महान संत आचार्यश्री विद्यानंद जी महाराज ने, 03 जनवरी 2015, शनिवार, तदनुसार पौष शुक्ल 13, वि. सं.2071 को और कुन्दकुन्द भारती परिसर में उपस्थित विशाल जनमेदिनी ने की समवेत स्वर में अनुमोदना भी।

प्रेरक संबोध : संस्कारों का परिशोधन

परम पूज्य आचार्यश्री वसुनंदि जी महाराज विहारचर्या इसिणम पसत्था के आगमिक मन्त्र को चरितार्थ करते हुए जन कल्याण और जग कल्याण के निमित्त गांवों, कस्बों, नगरों और महानगरों में पदयात्रा कर नवचेतना

का संचार करने लगे; जन - जन के बीच संस्कारों के जागरण का शंखनाद करने लगे। अब तक पचास हज़ार किलोमीटर से अधिक की पद-यात्रा कर, आपने कर्मों की निर्जरा में स्वयं को तो अभिप्रवृत्त किया ही है; जनसामान्य को भी अपने संबोध से सम्यक दिशाबोध दिया है और किया है प्रबोधित भी। पूज्य आचार्यश्री ने जिन स्थानों पर अपने वर्षायोग संपन्ना किये उनमें अतिशय क्षेत्र बरासों भिंड (म .प्र.- 1988:), अतिशय क्षेत्र भिंड (म .प्र.; 1989), टीकमगढ़ (म .प्र.; 1990), अतिशय क्षेत्र श्रेयांसगिरि (म .प्र.; 1991), सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि (म .प्र.; 1992), अतिशय क्षेत्र श्रेयांसगिरि (म .प्र.; 1993), सागर (म .प्र.; 1994), अतिशय क्षेत्र ललितपुर (उ .प्र.; 1995), दमोह (म .प्र.; 1996), गढाकोटा (म .प्र.; 1997), अतिशय क्षेत्र श्रेयांसगिरि (म .प्र.; 1998), फिरोजाबाद (उ .प्र.; 1999), टूंडला (उ .प्र.; 2000), ग्रीन पार्क (दिल्ली; 2001), सदर बाज़ार (मेरठ,उ .प्र.; 2002), शास्त्री नगर (मेरठ,उ .प्र.; 2003), कृष्णा नगर (दिल्ली; 2004), सिद्धक्षेत्र शौरीपुर बटेश्वर (उ .प्र.; 2005), अतिशय क्षेत्र तिजारा (राजस्थान; 2006), सिद्धक्षेत्र मथुरा चौरासी (उ .प्र.; 2007), अतिशय क्षेत्र तिजारा (राजस्थान; 2008), महावीर जयंती भवन (मेरठ,उ .प्र.; 2009), अतिशय क्षेत्र जम्बूस्वामी जी(तपोस्थली-बोलखेडा-राजस्थान; 2010),अतिशय क्षेत्र हस्तिनापुर (उ.प्र.; 2011), जैन नगर, छदामी लाल मंदिर, फिरोजाबाद (उ.प्र; 2012), श्री जम्बूस्वामी तपोस्थली, बौलखेड़ा, (राजस्थान-2013), श्री जैसवाल दिगम्बर जैन मंदिर, केसरगंज, अजमेर (राज.; 2014), मीरा मार्ग, मानसरोवर, जयपुर (राज.; 2015), बोलखेडा(2016) तथा दिल्ली (2017) शामिल हैं । वर्षायोगों में मुखरित उनकी देशना के बहुआयामी बिम्ब आगम के संबल से उर्जित हो, साधनाशील जीवन की आत्यंतिक गहराइयों, अनुभूतियों और वात्सल्य के संचार से मानवीय चिंतन का परिष्कार करते हैं और जन - जन के जीवन को उस सहज, सरल और सुबोध महाकाव्य की सरसता के साथ सम्बोधित कर देते हैं, जिसमें गोमुख से निकली गंगा के पवित्र-पावन

नीर-क्षीर सा समवाय है। एक जीवन सर्जक और आचारनिष्ठ साधक के रूप में आगम-प्रामाण्य से स्फूर्त, निर्मल ज्ञान की परम्परा को विश्वमंच पर संस्थापित करने वाले, इस श्रुतधर साधक ने अपनी तपस्या, ज्ञानाराधना, शास्त्रानुशासन और रत्नत्रयी अंतर्यात्र के समेकन से संकल्पशील आत्मसाधना को स्फूर्त किया है, जिससे हुआ है जन-जन स्फुरित भी।

पूज्य आचार्यश्री अपनी सीधी-सादी, शांत, मृदु और गंभीर शैली में श्रोताओं के मन तक पहुँच जाने की कला जानते हैं, स्वाभाविकता में जीने का आनंद सिखाने का मन्त्र समझाते हैं और सिखाते हैं - प्रेममय जीवन, स्वाभाविकता के साथ जीने का सिद्धांत भी; जिससे उनकी बातें और निर्देश सहज ही ऋदय-ग्राह्य हो जाते हैं। पूज्य श्री ने अपने मीठे और वात्सल्यसिक्त प्रवचनों के माध्यम से आध्यात्म का अर्थ समझाया है- अध्ययन करना आत्मा का, स्वयं का, देह और विदेह के बीच फर्क समझ कर-ताकि परमात्मा का पता चल सके! पूज्य श्री मानते हैं कि जो आपका उत्थान करे वह आध्यात्मिकता है! उनके दृष्टि-पथ में आध्यात्मिकता अपने भीतर की यात्रा है!! उनका चिंतन अभिप्रेत है कि न तो हम शरीर हैं और न मन या बुद्धि। हमारी पहचान तो विशुद्ध चेतना है, जो हमारी आत्मिक पहचान भी है। हमें उस अवस्था को संबोधित करना है जहां शुद्ध चैतन्य है। सम्यक्त्व की अराधना से जब हम अपने भीतर जाएंगे और आत्मा से साक्षात्कार करेंगे तो सच्चे अध्यात्म की अनुभूति होगी। पूज्यश्री के शब्द-शब्द में क्रांति है, नींद से उठने का आह्वानन है, बाह्य जगत की उहा-पोह से उठ कर अंतर्जगत में आत्मस्वरूप के अनुचिंतन का फलसफा रचा-बसा है। जीवन के किसी भी पहलू में आचार्यश्री आत्मा के वास्तविक स्वरूप पर पड़े हर आवरण को हटाने की प्रेरणा देते हैं सहजता के साथ; पाखंड को आने नहीं देते। उनके शब्दों में तटस्थता के साथ एक नैसर्गिक मिठास है, जो बिना किसी का पक्ष लिये तन्द्रा में आपाद मस्तक डूबे मनुज को झिंझोड़ती हैं और कर देती है संचार मुर्दे में भी जीवन का। सत्य तो यह है कि पूजयपाद गुरुदेव की देशना का हर अक्षर, हर शब्द और हर वाक्य ही सूक्ति बन गया है। जन-जीवन के उत्थान हेतु

और उसमें शुचिता की संस्थापना के निमित्त उन्होंने यह प्रतिष्ठापित किया है कि आध्यात्मिक चेतना का सार, शुद्ध चैतन्य के संदर्शन में है। उनकी प्रस्तुति का भावपक्ष जितना धवलधारा सा स्वच्छ है, द्रव्य पक्ष भी कोमल भावनाओ से आच्छादित, पूर्णमासी के चन्द्र सा श्वेत है। उनके वक्तव्यों से उनकी साधना मुखरित होती है, ज्ञान-आचार और साधना का विषद अनुभव गुंजित होता है और जीवन सत्य अनुभूत होते हैं -आगम के प्रामाण्य-सम्बल से उर्जित हो। पूज्यवर ने आगम के तत्व-ज्ञान को आत्मसात कर पुरुषार्थ और कर्म की साधना के चितेरे के रूप में आविर्भूत किया है स्वयं को और किया है प्रतिष्ठापित भी कि व्यक्ति जन्म से नहीं बल्कि कर्म से महान बनता है। उन्होंने प्रबोधित किया है कि केवल सिर मुड़ाने से कोई श्रमण नहीं हो जाता। सिर्फ हरिनाम जपने से ही कोई ब्राह्मण नहीं बन जाता। जंगल में रहने मात्र से ही कोई ऋषि नहीं बन जाता। कुश या चीवर धारण कर लेने से ही कोई तपस्वी नहीं बन जाता। बल्कि इंसान समता से श्रमण बनता है। ब्रह्मचर्य से ब्राह्मण बनता है। ज्ञान से ऋषि बनता है और तप करने से ही तपस्वी बन पाता है। ये गुण ही हैं जो मनुष्य को साधु बनाते हैं और अवगुण उसी को असाधु बना देते हैं। उन्होंने गुणों की पूजा को महत्त्व दिया है और प्रेरणा दी है कि स्वाध्याय, भक्ति की अराधना और आत्म चिंतन के त्रिकोण की साधना की।

गुणी शिष्यों की प्रलम्ब तालिका : एक समर्थ आचार्य का श्रमण परम्परा को अवदान

आचार्य की एक समर्थ भूमिका का निर्वहन करते हुए आपने सीमित संख्या में गुणों की प्रखरता की परख कर, जिन दीक्षाओं का सफल प्रवर्तन किया है, उससे उनकी शिष्य परम्परा की जीवंतता को नई ऊंचाइयां मिली हैं। मुनि श्री ज्ञानानन्दजी मुनिराज, मुनि श्री सर्वानंदजी मुनिराज, मुनि श्री जिनानंद जी मुनिराज, मुनि श्री आत्मानंद मुनिराज, मुनि श्री निजानंद जी मुनिराज, मुनि श्री सहजानंद जी मुनिराज, मुनि श्री संयमानन्द जी मुनिराज, मुनि श्री प्रज्ञानंद जी मुनिराज, मुनि श्री ध्यानानंद जी मुनिराज, मुनि श्री

श्रद्धानन्द जी मुनिराज, मुनि श्री शिवानंद जी मुनिराज, मुनि श्री प्रशमानन्द जी मुनिराज, मुनि श्री पवित्रानन्द जी मुनिराज, गणिनी आर्यिका श्री गुरुनंदनी माताजी, आर्यिका श्री ब्रह्मनंदनी माताजी, आर्यिका श्री श्रीनंदनी माताजी, आर्यिका श्री सौम्यनंदनी माताजी, आर्यिका श्री पद्मनंदनी माताजी, आर्यिका श्री वीरनंदिनी माताजी, आर्यिका श्री वर्धस्वनंदनी माताजी, आर्यिका श्री वर्चस्वनंदनी माताजी, आर्यिका श्री श्रेयनंदनी माताजी, आर्यिका श्री प्रबोधनंदनी माताजी, आर्यिका श्री सुरम्यनंदनी माताजी, आर्यिका श्री यशोनंदनी माताजी, आर्यिका श्री सुयोग्यनंदनी माताजी, आर्यिका श्री प्रकाम्यनंदनी माताजी, आर्यिका श्री देवनंदनी माताजी, आर्यिका श्री प्रभानंदनी माताजी, ऐलक श्री विज्ञानसागरजी महाराज, क्षुल्लक श्री विशंकसागरजी महाराज, क्षुल्लक श्री नित्यानंदजी महाराज, क्षुल्लिका सुभद्रनंदनी माताजी, देवऋषि वर्णी जी (दशम प्रतिमाधारी) शामिल हैं। समाधिस्थ शिष्यों में मुनि श्री विसर्ग सागर जी(1994), आर्यिका श्री विसर्जनमति जी (1995), क्षुल्लक श्री विदेह सागर जी (1996), आर्यिका श्री सुमतिमति माताजी (2004), आर्यिका श्री विजयनंदनी माताजी (2006), मुनि श्री परमानन्द जी मुनिराज (2009), क्षुल्लिका श्री मोक्षनंदनी माताजी (2010), मुनि श्री सुज्ञान सागर जी (2012), आर्यिका श्री सिद्धनंदिनी माताजी (2012), क्षुल्लिका निर्वाण नंदी जी (2016) अंकित हैं। आपकी चेतन श्रमण कृतियों की जीवंत प्रस्तुतियाँ, समस्त श्रमण चिंतन धारा को स्फुरित कर रही हैं।

वन्दना : सत्वेषु मैत्री की समत्वमयी मंगल ध्वनि की

समय की करवटों के बदलने के साथ ही परम पूज्य आचार्य श्री ने अपने दीक्षा काल में लगभग तीन दशक व्यतीत किये हैं। देह के प्रति न कोई ममत्व का भाव है और न ही है कोई भावना हिंसक निष्ठुरता की - वे तो सिर्फ काल के प्रवाह को देखने की आदी हो चुके हैं; सम्यक्त्व की साधना पर दृष्टि को केंद्रित करते हुए।

पूज्य आचार्यश्री का जीवन आत्म-स्वातंत्र्यबोध-जन्य क्रान्ति का

श्लोक है, साधना से मुक्ति का दिव्य चाँद है तथा है; मानवीय मूल्यों की वंदना एवं मानसिक ऐश्वर्य के विकास का वह भागीरथ प्रयत्न, जो स्तुत्य है, वन्दनीय है और है जाति, धर्म, वर्ग, सम्प्रदाय भेद से दूर; पूरी इंसानी जमात की बेहतरी एवं उसके आत्म-उत्कर्ष की भाव-भूमि की स्थापना को समर्पित एक सशक्त कदम। पूज्यपाद आचार्यश्री तो वीतराग साधना पथ के पथिक हैं, निरामय हैं, निर्ग्रन्थ हैं, दर्शन, ज्ञान और आचार की त्रिवेणी हैं, क्रान्तिद्रष्टा हैं और हैं परिष्कृत विचारों के प्रणेता भी। महाव्रतों की साधना में रचे-बसे पूज्यवर की देशना मानव-मन की गुत्थियों को सहजता के साथ खोलती है और तंद्रा में डूबे मनुज को आपाद-मस्तक झिंझोड़ने की ताकत रखती है। पूज्य आचार्यश्री वसुनंदि जी महाराज के विचारों का नवनीत युगों-युगों तक सम्पूर्ण मानवता का मार्गदर्शन करे, हमारी प्रमाद-मूर्छा को तोड़े, हमें अन्धकार से दूर प्रकाश के उत्स की ओर जाने का मार्ग बताता रहे, हमारी जड़ता की इति कर हमें सकारात्मक रूप से गतिशील बनाता रहे, हमें प्रतिपल अधिक चैतन्य, जागरूक सभ्य और शालीन बनाता रहे; यही हमारे मंगलभाव हैं और है हमारे चित्त की अभिव्यक्ति भी प्रार्थना के, अर्चना के और अभिवन्दना के स्वरों के साथ।

-प्रो. नलिन के. शास्त्री

कुलसचिव, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया (बिहार)

संवाद-एक संत का

मृत्यु की पहुँच तो इस पंचतत्व से बने हुये शरीर तक है। शरीर के आगे तो बोध की लक्ष्मण रेखा खिंची रहती है। यौवन इस शरीर में तो पूर्णिमा है जिसके बाद यौवन का चांद छटने लगता है और एक दिन अमावस् के घोर अंधेरे में विलुप्त हो जाता है। इस नश्वर शरीर और बोध की परि सीमा से परे होता है एक सच्चे संत का प्राकट्य, जो अपने कृतित्व और संवाद से समाज, देश और विश्व को आलोकित करता है। संत का संवाद जब प्रस्फुटित होता है तभी यह मानव सच्चे अर्थ में बनता है, संवरता है और बढ़ता है मनुष्यता की प्रवृत्ति एवं निवृत्ति की ओर है।

गुरु की महिमा तो अनन्त है। वह तो वो प्रकृतिरथ होते हैं जिनके दर्शन, सान्निध्य और सत्संग से, और कभी-कभी उनके मौन से भी, न जाने कितने जीवों का उद्धार हो जाता है।

आज की इस दौड़ती भागती जिन्दगी में जब सच्चे गुरु या संत के दर्शन नहीं हो पाते है तो उनका साहित्य उनका संवाद बनकर संसार भर में अलख लगाता है, करोड़ों भटकते हुये लोगों को राह दिखाता है। ऐसे ही संत है परम पूज्य आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज। इनके पवित्र सान्निध्य और दर्शन का अवसर हमें दुर्भाग्यवश नहीं मिला। किन्तु सुनाम धन्य पूज्य ऐलक श्री विज्ञान सागर जी की अनुकम्पा से हमें पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज का साहित्य पढ़ने को मिला। इसी साहित्य में सनिहित संवाद हमें बहुत प्रभावित किया है। इन सरल सी दिखने वाली पुस्तकों में उल्लखित वाक्यांश सच्चे अर्थों में एक संत का वही प्रभावशाली संवाद है जो जीवन को नई दिशा प्रदान करता है। आचार्य श्री के साहित्य से ही कुछ संवाद सुमन चुनकर प्रस्तुत किये जा रहे है जो बड़े जीवन्त और अनुकरणीय हैं।

मन और माहौल को संभालने वाला कभी दुखी नहीं होता।

मौन को लेने के साथ-साथ मुस्कायें तथा बोलने के साथ-साथ मिठास का संकल्प ले।

बीज में वृक्ष, कंकर में शंकर, बिन्दु में सिन्धु, आत्मा में परमात्मा, अणु में विराट सत्ता एवं किरण में समग्र ज्योति के दर्शन कर लेने वाला महान

बुद्धिमान ही हो सकता है। एक अंश की उपेक्षा किसी रूप में समग्र की उपेक्षा ही है।

धर्मात्मा की स्वीकारोक्ति ही परमात्मा के मार्ग पर बढ़ने का टिकिट है।

संघर्षों का सामना जो समतापूर्वक करता है तथा जीवन प्रत्येक चुनौती को स्वाभिमान के साथ स्वीकार करता है वही व्यक्ति अपनी चेतना की समग्र शक्तियों को उद्घाटित करने में समर्थ होता है।

दिगम्बर संत की नग्नता विकार-विहीन छोटे बालक की तरह है। वह प्राकृतिक रूप की प्रतीक है, बुद्धि के विकार की नहीं।

देखो सागर, नदी, पर्वत, पृथ्वी, सूर्य, चन्द्र, गृह, नक्षत्र, तारे, वृक्ष, पशु-पक्षी सभी तो नग्न है। प्रकृति नग्न है, अपने में मग्न है, परहित में संलग्न है। दिगम्बर संत भी धरती के देवता हैं विकृतियों से परे प्राकृतिक दशा के अधिकारी है।

यदि जीवन में सत्य आनन्द का अनुभव करना चाहते हो तो वह प्रतिष्ठा में नहीं, मान-सम्मान में नहीं, तप, त्याग, खाने-पीने, चलने, उठने, बैठने में नहीं बल्कि किसी निरीह अपराधी को क्षमा करने में है। अंतरंग विशुद्धि से युक्त क्षमा के महार्णव में अवगाहन करने में है।

तुम किसी का कुछ मत बिगाड़ना, मैं तुम्हारा कुछ भी बिगड़ने नहीं दूँगा।

एक ही चौखठ पर सर झुके तो सुकुन मिलता है, भटक जाते हैं वे लोग जिनके हजारों खुदा होते है।

मौन होना साधना और बोलना कला है।

मौन सकल कर्मों की सिद्धि करने वाला हैं। समस्त द्वन्द, कलह, अशान्ति, संक्लेशता का परिहारक भी है। मौन रहने वाले को भले ही लोग मूर्ख कह दे, किन्तु वह विद्वानों का भी शिरोमणि माना जाता है।

जो मानव संकल्प के धनी एवं नि:स्वार्थ समर्पण करने वाले होते हैं, नि:संदेह वे अपनी मंजिल को प्राप्त करने में भी सफल हो जाते हैं।

यह बात निश्चित है कि जीवन में बिना क्रांति के शाश्वत शान्ति की प्राप्ति असंभव ही है।

जिसने जीवन को वरदान मानकर जिया हो उसकी मौत भी महोत्सव

बन जाती है।

जो अपने अंतरंग का विस्तार करते हैं वे ही कर्मों से मुक्ति पा सकते हैं।

जो अच्छाई और बुराई से ऊपर उठ गये है, जो आत्मा में लीन है, परब्रह्म से साक्षात्कार करने वाले हैं, वे परमहंस कहलाते है।

प्रायश्चित अतीत के पापों का शोधक है।

अहंकार का अंधकार सबसे ज्यादा भयानक व खतरनाक होता है।

अहिंसा ही परमधर्म है, अहिंसा ही परम ज्ञान है, अहिंसा ही परम तप है, अहिंसा ही परम ध्यान है, अहिंसा ही परम ज्योति है, अहिंसा ही परम मैत्री है, अहिंसा ही परम प्रेम है, अहिंसा ही संतत्व है, इतना ही नहीं अहिंसा परमात्मा का दूसरा नाम है।

नई खूबी, नयी रंगत, नये अरमान पैदा कर, गर तू इंसान है, तो इस खाक के पुतले में भगवान पैदाकर।

उपरोक्त उद्धरण एक तपे हुये संत के संवाद की एक संक्षिप्त प्रस्तुति है जो सीधी मानव हृदय में पैठ करती है। वो हृदय चाहे पुरुष का हो या नारी का, बालक का हो अथवा किशोर का, प्रौढ़ का हो या फिर वृद्ध का और साधक का हो अथवा गृहस्थ का। यह संवाद सबके लिये है। इस संवाद की व्याख्या बड़े विस्तार से की जा सकती है,जो इस संक्षिप्त आलेख में संभव नहीं है।

अस्तु, प. पू. आचार्य 108 श्री वसुनन्दी जी मुनिराज के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के अवसर पर हम उनके श्री चरणों में अपने इन अबोध शब्दों के माध्यम से अपने भाव-सुमन अर्पित करते हैं। निश्चित ही पूज्य महाराज श्री का महान व्यक्तित्व एवं कृतित्व हमारे इन अल्प शब्दों से उल्लखित नहीं किया जा सकता।

इस अवसर पर हम सभी मिलकर अपने पूज्य गुरुवर के दीर्घआयु एवं स्वस्थ जीवन के लिये अपनी प्रार्थनायें करते हैं तथा उनके श्री चरणों में उनके अनवरत संवाद एवं आशीर्वाद की कामना करते हैं।

प्रो. आर. आर. आजाद,
डायरैक्टर एडमिनिस्ट्रेशन, गैलैक्सी ग्लोबल ग्रुप आफ इन्स्टीट्यूशंस,
दीनारपुर, अम्बाला (हरियाणा)

संत परंपरा का दैदीप्यमान नक्षत्र : आचार्य वसुनंदी जी महाराज

परम पूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज का 50वाँ जन्म जयंति समारोह ''स्वर्ण जयंति'' के रूप में मनाये जाने का जो निर्णय जयशांति सागर निकेतन मंडौला-गाजियाबाद के मुनि भक्तों ने लिया है यह एक सार्थक एवं स्वागत योग्य पहल है। आचार्य वसुनंदी जी इस धरती के एक ऐसे संत हैं जिन्होंने अपनी अमृतमयी वाणी के अविरल प्रवाह से जन-जन को अभिसिंचित किया है। उनकी वाणी का तिलरग इतना जबरदस्त है कि श्रावक बरबस ही आकृष्ट होकर भक्ति के रस में डुबकी लगाने के लिए विवश हो जाता है। कहा जाता है कि भावों की अभिव्यक्ति के लिए सशक्त माध्यम भाषा होती है, आचार्यश्री को हिंदी भाषा ही नहीं अपितु संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, मराठी, गुजराती, तमिल, पंजाबी, बुंदेली भाषा का श्रावक उनके अन्तर्मन के मूलभावों को भली-भांति समझ सकता है। आचार्यश्री ने 'आगम' के गूढ़तम रहस्यों को अत्यंत सरल भाषा में टीकायें लिखकर सरस्वती के भण्डार को भरे जाने का जो अपिरिमित कार्य किया है, उसे इस सदी के सच्चे श्रावक कभी विस्मृत नहीं कर पायेंगे। कहा जाता है कि वाणी की मिठास इतनी बलवती होती है कि व्यक्ति अपने आप आकर्षित होता चला आता है। हम जानते हैं कि प्रत्येक क्षेत्र में विसंगतियों का साम्राज्य फैला हुआ है पर उन विसंगतियों में से भी संगतियों की खोज कर पाना सकारात्मक सोच का ही पर्याय हैं आचार्य श्री के 'मीठे प्रवचन' इसी सोच की पर्याय हैं आधुनिक युग के बहुचर्चित महाकाव्य 'कामायनी' में जयशंकर प्रसाद जी ने एकाध स्थान पर लिखा था ''काम मंगल का मण्डित श्रेय सर्ग इच्छा का है परिणाम।'' अर्थात् यह संसार मानव के द्वारा श्रेष्ठ कार्य करने के लिए बनाया गया है। श्रेष्ठ कार्य ही हमारे जीवन में शुचिता को लाते हैं। यह शुचिता ही हमारे जीवन को मूल्यवान बनाती है। आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज ने जीवन को सार्थक बनाने के लिए इन्हीं शुचितापूर्ण विचारों का आह्वान किया है। 'मीठे प्रवचन' हमारे सोच और चिंतन को बदलने के लिए एक सार्थक भूमिका का निर्वाह करते हैं सुधीजन इस पुस्तक का पारायण करेंगे तो उनसे अपरिमित लाभ होगा।

आचार्य श्री ने सुधी श्रावकों को एक सूत्र दिया है कि ''जीवन का प्रयोग करो, जो भोग करते हैं। वे नष्ट हो जाते हैं और जो प्रयोग करते हैं वे इतिहास के पन्नों पर अमिट होकर अमर हो जाते हैं। जीवन को सार्थक बनाने के लिए आचार्य श्री के प्रवचनों में जो सूत्र दिये हैं वे ऐसे अमूल्य रत्न हैं जो व्यक्ति के जीवन की धारा को ही परिवर्तित कर देते हैं।

आचार्य श्री के चिंतन, मनन, अध्यात्म, दर्शन और अनुभवों का क्षेत्र अत्यंत विशाल एवं असीम है। आचार्यश्री ने सांसारिक परिस्थितियों को भलीभांति जांचा, परखा और फिर उसे विशुद्ध धर्मनिष्ठ परिप्रेक्ष्य में उद्घाटित किया। उन्होंने लोक कल्याण की दृष्टि से 'प्राचीन का गमन' और 'नवीन का आगमन' की विधा के अनुसार जिस कौशल के साथ अपने प्रवचनों में प्रणयन किया है, वह महान होने के साथ-साथ आश्चर्यजनक भी है।

शब्दों के शंख बजाने वाले आचार्य श्री जीवंत अनुभूतियों के प्रस्तोता हैं। साधु की सच्ची पहचान उसकी निर्भीकता और भाषा की जीवंतता में है। आचार्य श्री के प्रवचनों में सत्य की वह पावन ज्योति है जो अपने प्रकाश से अज्ञान के अंधकार को विनष्ट कर जीवन के शाश्वत पल से साक्षात्कार करा सके। इसीलिए इन प्रवचनों की भाषा सर्वत्र रसमयी, जीवन्त और प्रवचनकार दिखाई देती है।

आचार्य श्री वसुनंदी जी इस युग के एक ऐसे संत हैं जिनकी वात्सल्य अविरल धारा में जिन-जिन श्रावकों ने डुबकी लगाई है उनका जीवन धन्य हो गया है। आ.श्री जहाँ-जहाँ भी पहुँचे श्रावकों ने उनका पलक पाँवड़े बिछाकर अन्तर्मन से स्वागत किया है। संत तो वैसे भी चलते-फिरते तीर्थ होते हैं। उनकी शरण में जो भी आता है उसका जीवन धन्य हो जाता है।

मेरी भावना है कि 'मीठे प्रवचन' जन-जन तक पहुँचे तथा इनके द्वारा व्यक्ति के जीवन का कल्याण हो। सच्चा संत वही है जिसके जीवन में सरलता का कोई अंत न हो। आचार्य श्री वसुनंदी जी इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। मैं उनके पावन चरणों में त्रय बार नमोस्तु करता हुआ उनके अशेष आशीष की कामना के साथ.....

विनयावत्

डॉ. के.एल. जैन, टीकमगढ़ (म.प्र.)

लेख

मान्यवर, आपके द्वारा प्रेषित पत्र मिला। पढ़कर प्रसन्ता हुई। परमपूज्य सिद्धांत चक्रवर्ती आचार्यश्री विद्यानंदजी मुनिराज के सुयोग्य शिष्य परम पूज्य आचार्यश्री वसुनन्दीजी महाराजश्री का 50वाँ जन्मजयंती पर्व को राजधानी दिल्ली के ग्रीनपार्क में 'स्वर्णजयंती महोत्सव' के रुप में मनाने का संकल्प सार्थक एवं लोकमंगलकारी स्तुत्य उपक्रम है।

उक्त समारोह के पावन प्रसंग पर एक अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशित करने का सार्थक प्रयास पूजय ऐलकश्री विज्ञानसागरजी महाराज ने सजग शिष्य होने का दायित्व पूर्ण कर रहे हैं। जो प्रशंसनीय है।

इस पत्र के साथ मेरी अपनी विनयाञ्जलि पर आलेख संलग्न है। जिसको आपने प्रकाशनार्थ मुझसे आहूत की है। समारोह की सफलता हेतु हार्दिक मंगलकामना करता हूँ। योग्य नामकरण के साथ एक अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशित करने हेतु संपादक एवं प्रकाशकों को विनम्र अनुमोदना संस्तुत करता हूँ।

अंत में पूज्य गुरुदेवश्री के, संघस्थ त्यागियों के एवं ग्रंथ संकलक ऐलकश्री विज्ञानसागर जी के चरणों में सविनय वंदन करता हूँ।

जिनशासक प्रभावक - आचार्य श्री वसुनंदी महाराज

आचार का लक्षण

मुक्तिमहल में प्रवेश करने का मुख्य द्वार आचार है। सभी मानवों में ज्ञानी मानव श्रेष्ठ होता है। सभी ज्ञानियों में आचारवान श्रमण श्रेष्ठ होता है। विचार की जन्मभूमि आचार है, राष्ट्र, समाज एवं व्यक्ति के सर्वांगीण उन्नति का मूल आधार आचार है। सदाचार एक ऐसा सार्वभौमक तत्व है कि जिसे देश एवं काल की सीमा में बाध नहीं सकते हैं। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश सभी के लिए उपयोगी है, वैसे ही सदाचार सभी के लिए उपयोगी एवं आवश्यक है।

महाकाव्य ने अनुशासन पर्व में साधुओं का जो आचरण है उसी को

आचार कहा है

आचारलक्षणों धर्मः सन्तश्चारित्रलक्षणाः।
साधूनां च यथावृत्तमेतदाचार लक्षणम्॥104-9॥

उक्त छन्द में आचार के लक्षण को घटित कर स्पष्ट किया है कि जहाँ पर सदाचार के लक्षण प्रकट होते है, वहीं प्रशस्त धर्म है। शास्त्रों के कथनानुसार जिनका आचरण है वे सच्चे साधु हैं। आगमों में बताये हुए लक्षणों का परिपालन करने वाला ही वास्तविक सन्त है।

तप का प्रभाव

आचार्य देवसेन के शब्द भावसंग्रह ग्रंथ में ध्यान से पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं

विरस-सहस्सेण पुरां जं कम्मं हणई तेण काएण।
तं संपहि वरिसेण हु णिज्जर यइ हीण संहणणे॥

पूर्वकाल (चतुर्थकाल) में हजार वर्ष तप करने पर जितने कर्मों का नाश होता है वह आज पंचमकाल (कलिकाल) में हीन संहनन (शक्ति) से एक वर्ष के तप करने से उतने कर्मों का नाश होता है। कमजोर शरीर से तप करने के लिए अलौकिक मनोबल की आवश्यकता है।

विषय काल में चित्त की प्रवृत्ति में अपार अस्थिरता रहती है। धीर वीर मनस्वी महापुरुष ही महाव्रत धारण करने के लिए उत्साहित होते हैं। कालजयी व्यक्तित्व के धनी भव्यात्मा ही श्रमण धर्म को अंगीकार करते हैं।

श्रमणाचार यात्रा

परमपूज्य प्रातः स्मरणीय अभीक्ष्णज्ञानोपयोगी निर्मल ज्ञान के अनुपम निधि, संयम साधना के शिखर संत, उग्रतप साधना में निरन्तरलीन निर्ग्रंथ, आचार्यश्री वसुनन्दी जी महाराजश्री ने मानव पर्याय को प्राप्त कर 50 वसन्त पूर्ण कर लिए हैं। आपने 21 वर्ष की भरी जवानी में वैराग्य को धारण कर इस मनुष्य जन्म को सार्थक किया है। इस जन्म के भाग्योदय का वह मौलिक क्षण था, जिस समय आपने ब्रह्मचर्यव्रत, क्षुल्लकव्रत एवं मुनिधर्मव्रत को धारण कर निज कल्याण के साथ लोककल्याण के पथ पर अग्रसर हुए हैं। आपने 21 उम्र से 35 उम्र तक चौदह साल के मध्य

सतत अध्ययन, मनन, चिन्तन करते हुए, आध्यात्मिक जागरण के प्रहरी बनकर, मोक्षमार्ग के पथिक होकर शासननायक वर्धमान महावीर भगवान के अहिंसामयी जिनधर्म को जनमानस तक पहुँचाया है।

गुरु से योग्यता प्राप्त कर जिनशासन के परमेष्ठी पदों पर प्रतिष्ठित होना

पूर्व भव में संचित अपार सुकृत पुण्यफल ने आपके भाग्य को सौभाग्य में परिवर्तित किया है। राजधानी दिल्ली में विराजमान परमपूज्य राष्ट्रसंत सिद्धांतचक्रवर्ती ज्ञानवृद्ध तपवृद्ध आचार्यश्री विद्यानंद मुनिराज के पावन करकमलों से उपाध्यायपद, एलाचार्यपद एवं आचार्यपद से विभूषित हुए। गौरवशाली श्रमण परम्परा के जिनशासन प्रभावक दैदीप्यमान उज्ज्वल नक्षत्र बनकर उभरे हैं।

ग्रीनपार्क दिगंबर जैन मंदिर नई दिल्ली में आचार्यश्री वसुनंदी जी महाराज जी का 2017 का वर्षायोग स्थापित हुआ। यह मेरे जीवन का स्वर्णिम अवसर था। मैंने अधिकांश प्रतिदिन प्रातःकालीन स्वाध्याय में एक जिज्ञासु श्रोता बनकर आचार्यश्री जी की सभा में उपस्थित होने लगा। आचार्य कुलभद्र स्वामी द्वारा संस्कृत भाषा में विरचित सारसमुच्चय ग्रंथ का प्रातः 8-9 बजे तक वाचना करवा रहे थे। पूज्य आचार्यश्री जी के श्रीमुख से प्रवचन करने का लाभ विशाल जन समुदाय को प्राप्त हो रहा था।

सारस्वत साधना से उपाध्याय पद की सार्थकता

आचार्यश्री जी ने शास्त्रसभा के मध्य अपने अधीत ज्ञान-विज्ञान के गंभीर विषयों को लेकर स्वाध्याय कराते हैं। उस समय जो प्रसंग मैंने अवलोकन किया, वह अत्यन्त मार्मिक है। वे शास्त्रीय परंपरा का अनुपालन अत्यंत निपुणता से करते हैं। धर्मसभा में अपने संघ के साधुओं को एक साथ उपस्थित रखना। सभी त्यागीगण मौन होकर एक चित्त से शास्त्र को सुनने में तत्पर रहना। धर्मसभा के आरंभ में शास्त्रीय मंगलाचरण किसी विद्वान से करवाना। मंगलाचरण मूलक ग्रंथ का प्रारंभ करना। जिनवाणी के प्रति विनय प्रकट करते हुए स्तुति पूर्वक वंदना करना। धर्मसभा में पिन ड्रॉप साइलेंस होना। णमोकार मंत्र के 9 बार जाप करवाना। श्रोताओं को

सचेत कर, रीढ़ को सीधा करवाकर, सुखासन में बिठाकर, सावधान मुद्रा में उपस्थित कर, भव्यात्माओं को कोमल वचनों से संबोधित कर, बारंबार छंदों का शुद्ध पाठ करवाना। एक घंटे के स्वाध्याय में मात्र एक ही छंद का विस्तार से विवेचन करना। जैन पारिभाषिक कठिन पदावलियों का विशेष अर्थ मूलक सामान्य जनता को सुलभ अर्थ में समझाना। यह अध्यापन परंपरा उच्चस्तरीय शिक्षण संस्थानों के माप-दण्डों पर खरा उतरता है।

शास्त्रीय परंपरा का निर्वाह करते हुए एलाचार्य पद की गंभीरता

पाठ्य ग्रंथ के संदर्भ का स्पष्टीकरण करना। प्रत्येक छंद का सार्थक प्रस्तुत करना। लयबद्ध तरीके से छंदपाठ करवाना। व्याकरण मूलक अन्वय बनाना। कठिन शब्दों का भावार्थ करना। शास्त्रीय टिप्पणी, ऐतिहासिक टिप्पणी, सांस्कृतिक टिप्पणी मूलक गंभीर विषय को सहजता से प्रस्तुत करना। समय-समय पर पूर्वाचार्यों के मौलिक ग्रंथों का संदर्भ प्रस्तुत करना, समानान्तर विषयों पर तुलनात्मक विवेचन करना, गुण-दोषों का सटीक परिचय देना, लोकजीवन में व्याप्त आधुनिक कवियों के विभिन्न भाषाओं में निबद्धसंस्मरण को उदाहरण के साथ घटित करना। अपने सुदीर्घ अध्ययन से प्राप्त व्यापक अनुभवों का सांगोपांग कथन करना। पूर्वापर छंदों में संबंध स्थापित करना। विषय का विवेचन गूढ़ता से सहजता की ओर ले जाना। मध्य में रोचक प्रसंगों को उद्घाटित कर चित्त की एकाग्रता को बढ़ाना। चारों अनुयोगों का यथासमय व्याख्या करते हुए विषय को पुष्ट एवं स्पष्ट करना।

समय-समय पर श्रोताओं के मन में आये हुए जिज्ञासाओं का सटीक उदाहरण के साथ समाधान करना। अत्यन्त सजगता से धर्मसभा में अनुशासन का परिपालन करना। विषय से हटकर आवान्तर चर्चा कभी नहीं करना। आगम, सिद्धांत, नय, निक्षेप, स्याद्वाद, अनेकान्तवाद के आधार पर शास्त्रसम्मत कथन करना, कटु-निष्ठुर-अनुचित दोषयुक्त पदावलियों का कभी भी प्रयोग नहीं करना। सभी श्रोताओं के प्रति करुणा भाव को बनाये रखना। अपने निर्मल ज्ञान से, क्षोभ रहित होकर कल्याण की भावना से उपदेश देना। ऐसे अनेक सद्गुणों के द्वारा अनुपम, उत्कृष्ट,

महिमायुक्त, प्रभावक शैली में आप प्रवचन देते हैं।

साहित्यशास्त्र के विभिन्न आयामों का सहजता से प्रयोग करते हुए रस-योजना, रीति-विवेचन, छंद-प्रयोग, अलंकार-निर्देशन, उत्कृष्ट-भाषा शैली, गुण-निरूपण के द्वारा श्रोताओं के हृदय को आल्हादित करने का प्रसंग प्रशंसनीय है।

निरतिचार चारित्र के परिपालक आचार्य परमेष्ठी

दीन-दु:खी, पीड़ित प्राणियों के उत्थान के प्रति आप सतत सजग हैं। संघस्थ साधुओं के प्रति परम-कल्याण की भावना से ओत-प्रोत हैं। निरतिचार चारित्र के परिपालन करने में सदैव तत्पर हैं। सिद्धहस्त यशस्वी लेखक हैं। प्रतिभा सम्पन्न उद्भट वाग्मि हैं। श्रमण संस्कृति के विविध आयामों के द्वारा समाज के हर वर्ग को लाभान्वित करने का कुशल नेतृत्व आप में है। सदाचार सम्पन्न राष्ट्र निर्माण के प्रति सदैव सचेष्ट हैं। श्रावकों के आध्यात्मिक उत्थान हेतु व्रताचरण, सदाचरण पर विशेष बल देते हैं। पर्व, उत्सव मनाने के लिए यथासमय प्रशस्त मार्गदर्शन देते हैं। सामाजिक व्यवस्था को सुसंगठित करने के लिए उदात्त चिन्तन रखते हैं। कलियुग में संघ शक्ति का महत्त्व युवाशक्ति को समझाकर धर्म की ओर उन्हें आकर्षित कर प्रेरित करते हैं। इस तरह आपके यहाँ मनोज्ञमुनि के लक्षण विद्यमान हैं।

आचार्य इन्द्रनन्दि ने स्पष्ट लिखा है कि

नूतनस्याग्र शिष्यस्य, क्षमाध्ययन शालिनः।
मुखशुद्धयादिकं नैव, यावन्न गुरुणोच्यते॥

शिष्य का स्वरूप क्षमाशील और अध्ययनशील नवदीक्षित शिष्य की वाग्दीक्षा (मुखशुद्धि) जब तक न हो और जब तक गुरु की आज्ञा प्राप्त न हो। तब तक शिष्य प्रवचन नहीं दे सकते हैं। इस प्रकार के गुरुदेव के द्वारा वाग्दीक्षा को प्राप्त कर अपने पद की गरिमा को गौरवान्वित किया है।

उपसंहार

गुरुदेव आचार्यश्री विद्यानंद जी मुनिराज ने दीक्षा देने से पहले अनुशासन के तीन तथ्य बड़े शालीनता से प्रस्तुत की है। पहले शिक्षा, बाद में दीक्षा,

अनन्तर भिक्षा विधि को क्रम से प्राप्त करना आवश्यक है। ये तीनों तथ्य आपको प्राप्त हैं।

आचार्य पद की सार्थकता

तरुमूलयोगयुक्ता - नवकाशातापयोगराग सनाथान्।
बहुजनहितकर चर्या - नभयाननघान्महानुभाव विधानान्॥7॥

जो साधु वर्षाकाल में वृक्ष के नीचे ध्यान करते हैं, शीतकाल में खुले आकाश में योग धारण करते हैं, ग्रीष्मकाल में सूर्य के सामने खड़े होकर ध्यान करते हैं। ऐसे तरुमूलयोग, अभ्रावकाशयोग और आतापनयोग के राग से सहित हैं, जिनकी चर्या अनेक जनों का हित करने वाली है, जो सात प्रकार के भयों से रहित हैं, जो पापों से विरत हैं, जो बहुत भारी प्रभावना से युक्त हैं। जो महानुभाव हैं। समस्त साधु के विधियों के परिपालन में दक्ष हैं।

इसी वर्षायोग में आपके लेखनी द्वारा प्राकृतभाषा में रचित अनेक ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं। उन शौरसेनी साहित्य के ग्रंथों के अध्ययन से जैन समाज को एक भारतीय साहित्य प्रेमियों को ऐतिहासिक तथ्यों का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त होगा। इस लोकोपयोगी साहित्य सृजन की दिशा में आपको साहस श्लाघनीय है। प्राचीन प्राकृतभाषा के सर्वांगीण उन्नयन, संरक्षण एवं शिष्य वर्गों को प्रशिक्षण देने का जो सपना आचार्यश्री विद्यानंदजी मुनिराज ने देखा था, उस महान कार्य की सफलता आपके द्वारा पूर्णता को प्राप्त हो रहा है। उन आदर्श आचार्य परमेष्ठी को मैं श्रद्धापूर्वक नमन करते हुए स्वर्णजयंती महोत्सव के पावनपर्व पर विनयाञ्जलि अर्पण करता हूँ। आपकी रत्नत्रय आराधना सफल हो तथा जिनशासन की अपार प्रभावना हो, ऐसी हार्दिक मंगल भावना आपके चरणकमलों में सादर समर्पित करता हूँ।

उत्तम त्याग धर्म — विनीत गुरुभक्त

3 सितम्बर, 2017 (उत्तम त्यागधर्म) — **डॉ. प्रो. जयकुमार उपाध्ये**

प्रोफेसर एवं प्राकृत भाषा विषय प्रमुख
श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली
बी-4, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-16

शब्दवाहिनी-
अविरल प्रेमभाव से पल्लवित

भारतीय संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु सर्वाच्च सत्ता की अनुकम्पा से भारत-भूमि पर संतो, ऋषियों और मुनियों का आगमन होता रहा है। इसी श्रंखला में मैं परम पूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज के चरणों में कोटिशः नमन करता हूँ। अपने प्रांजुल भावों को शब्दों की पोशाक से अलंकृत कर, लेखनी का अवलम्बन लेकर अभिव्यक्त का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। किसी भी धर्म में विश्वास के अनुरुप शायद यह शुभावसर मेरे लिए 'प्रसाद' स्वरुप ही है। इस कार्य हेतु मैं ऐलक श्री 105 विज्ञान सागर जी महाराज के प्रति आभारी हूँ। परिवर्तन के शाश्वत नियमानुसार हमें आत्मविश्वासी होने के साथ अपने विचारों और शब्दों को नियन्त्रित करना सीखना होगा। जब यह शान्ति विकसित हो जाती है तो विश्व-आदर्श के प्रतीक के रुप में पहचान बनती है। ऐसा ही प्रतीक मैंने देखा है-''परम पूज्य आचार्य श्री 108 वसुनंदी जी महाराज के आशीर्वाद से ऐलक श्री 105 विज्ञान सागर जी महाराज के निर्देशन में चल रहा-''अतिशय क्षेत्र, जयशान्तिसागर निकेतन, मंडौला (गाजियाबाद)। आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज की ओंट में एक सूर्य का उदय हुआ परम पूज्य आचार्य श्री 108 वसुनंदी जी महाराज के रुप में हुआ, जिनका नाम सर्वविख्यात, साधक एवं संतों की श्रेणी में अद्वितीय है। ये वास्सल्य के महाराज, आगम के वेत्ता, भाषाओं के ज्ञाता, समता क्षमता एवं प्रभावना के परिचायक है। मैं आचार्य श्री 108 वसुनंदी जी महाराज रुपी सागर की कुछ अमूल्य बूँदों को पन्ने पर आकृति देने का प्रयास कर रहा हूँः- आपके द्वारा 250 ग्रन्थों का सम्पादन हुआ, जिनमें 'रयणकंदों' (प्राकृत सूक्तिकोश), रट्ठ संति महाजग्गो (राष्ट्र शांति महायज्ञ), अज्ज संक्किदी (आर्य संस्कृति), जदि किदिकम्मं (यति कृति कर्म), धम्मस्स सुत्ति संग्गहो (सूक्तियाँ), तच्च वियार सारो, णंदिणंद सुत्तं, विज्जा वसु

साव गायारो, अन्ते समाही मरणं, गिग्गंथ थुदी, णमोकार महत्यं, जिणवर थुदी इत्यादि प्राकृत भाषा में विशेष मौलिक कृतियाँ है।

आपकी प्रेरणा से ही 'श्री सत्यार्थी मीडिया' एवं 'श्री श्री सत्यबोध' मासिक पत्रिका निकलती है। आपकी कार्यकुशलता से प्रसन्न होकर ही आचार्य श्री विद्यानन्द जी महाराज ने आपको आचार्य वसुनंदी बनाया है। **एक आशा, एक मनसा, एक ही विश्वास। जहाँ गुरु के चरण हो, वहीं हो मेरा वास।।** कुछ ऐसा ही आचार्य श्री जी ने अपने 'रयणकंडो' (प्राकृत सूक्ति कोश) के मंगलाचरण में लिखा है:- विज्जाणंदं महासाहु, जं मम हिय-वासिदं। वोच्छे रयणकडं हं, भव्वाणं सुह-कारणं।। मेरे हृदय में वास करने वाले महासाधु श्री विद्यानंद आचार्य को नमस्कार करके भव्यों के सुख के लिए 'रयणकंडो' कहता हूँ। 'रयणकंडों में 3333 सूक्तियाँ है। सूक्ति का अर्थ है-अच्छी उक्ति, यानि सुन्दर ढंग से कहीं गई 'बहुत अच्छी बात'। 'गागर में सागर' भर देने की कला से आप सुशोभित है, जो चिंतन की गहराईयों में से समाधान के मोती प्रदान करती है। 'रयणकंडो' में श्री वसुनंदी जी महाराज ने दैनिक जीवन की उपयोगी एवं व्यावहारिक विषयों के अतिरिक्त ज्योतिष, वास्तु, आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक, राजनैतिक जैसे विषयों को भी उजागर किया है:-जैसे-मंगलाचरण, अँकुर, अज्ञान, आर्य, अति, अभ्यास, अपरिग्रह, अहिंसा आकांक्षा, आनन्द, आरोग्य, ईश्वर, इच्छा, उत्साह, उपयोग, उपवास, औषधि, कर्तव्य, कला, काव्या, क्रिया, जीवन, जीविका, परोपकार, तृष्णा, तीर्थ, चरित्र, गुरुभक्ति, त्याग, सहयोग, परिश्रम, वाणी, स्वभाव, स्वाध्याय, प्रतिज्ञा और सेवा इत्यादि। मैं 'किसी से' बेहतर करुँ, क्या फर्क पड़ता है। मैं 'किसी का' बेहतर करुँ, बहुत फर्क पड़ता है।। आचार्य श्री 108 वसुनंदी जी परिणामस्वरुप आपको आज भी लगभग 10 हजार गाथाएँ व श्लोक मौखिक याद है। आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज की लेखन क्षमता अवर्णनीय है। आपने 'अज्जन्संक्किदी' ग्रन्थ का लेखन 57 श्लोकों सहित मात्र तीन घंटों में किया। आप स्वयं की उपलब्धियों का श्रेय सदैव अपने पूज्यनीय गुरु आचार्य श्री विद्यानन्द जी चरणों में समर्पित करते रहें है। यह ग्रन्थ

व्यवहार में जीवन जीने की कला प्रदान करता है। इसमें आर्यों की संस्कृति का सौन्दर्यात्मक विधि से वर्णन किया है। आर्य का अर्थ है:-श्रेष्ठ और उत्तम पुरुष। आर्य निश्चय से त्यागी, दया व क्षमा से युक्त, उपकारी, गुणी तथा मर्यादा का सुरक्षक होता है। आर्यों की संस्कृति लेने की नहीं देने की रहीं है, समर्पण की रहीं है:- 'महान वह नहीं, जो विपत्ति रुपी हथौड़े के प्रहार से काँच के समान चकनाचूर हो जाये, अपितु महान वह है, जो विपत्ति के प्रहार से सोने के समान दमक उठें। आचार्य श्री 108 वसुनंदी जी जिस समाज, राज्य और राष्ट्र के लोग श्रेष्ठ हों वही समाज और राष्ट्र विश्व में अपना आदर्श स्थान स्थापित कर सकता है। इसी आर्य संस्कृति के कारण भारत देश 'विश्वगुरु' की उपाधि से सुशोभित हुआ। जिसके कारण ही भारतीय संस्कृति पूज्य एवं आदर्श मानी गयी। उसी को चरितार्थ करते हुए आचार्य श्री ने 'अज्जसंक्किदी' अर्थात 'आर्य संस्कृति' नामक ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ के अन्तर्गत आचार्य श्री ने नवीन पीढ़ी के जीर्णो)ार हेतु धर्म, सदाचार, दया, वास्सल्य, जीव रक्षा, दिन में भोजन करना, मर्यादा संयम, अतिथि देवो भव: जैसे आर्य संस्कृति के तत्वों का विवेचन है साथ ही इष्ट-वंदन, पर्व -त्यौहार, प्रीति भोज, सेवा करना, आभूषणादि को भी सम्मिलित किया गया है। वसुनंदी जी ने नारी शिक्षा को जीवन में महत्वपूर्ण माना है।

संजुदा धम्म-सिक्खाए, सुह-संतीई कारणं।

सिक्खा-संक्कार-हीणा जा, सा त्थी दुहस्सकारणं।।

कि सुशिक्षित नारी सम्पूर्ण नारी सम्पूर्ण समाज को सुशिक्षित बना सकती है। उत्त व्यक्तित्व का निर्माण सुसंस्कृत नारी (माँ) से होता है। कहा भी है बीज के अनुसार वृक्ष और वृक्ष के अनुसार फल आता है। मूल को सींचने से जिस प्रकार वृक्ष पुष्पित पल्लवित होता है उसी प्रकार नारी समाज को सुसंस्कृत करने से पल्लवित-पुष्पित समाज का निमार्ण होता है। जिसें हम शास्त्रों में भी पढ़ते है कि:- यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता:। यत्रतास्तु न पूज्यन्ते सर्वोस्तत्रफला: क्रिया।। ''इनके चार आयमा

है-1. बाल्यावस्था में विद्या अर्जन करना चाहिए। 2. यौवनावस्था में धन अर्जन करना चाहिए 3. वृद्धावस्था में पुण्य का अर्जन करना चाहिए 4. ध्यान के द्वारा देह को त्यागना चाहिए'' इसी प्रकार 'जदि-किदिकम्मं' श्री जी द्वारा रचित प्राकृत ग्रंथ है। इसमें मुनियों के 28 मूलगुण, 34 उत्तरगुणों के साथ नित्य एवं नैयित्तिक कृतिकमों का वर्णन किया है।

''सफल और असफल व्यक्ति में बस इतना ही अंतर होता है। सफल व्यक्ति पत्थरों के ढेर को सीढ़ी बनाकर उनका सदुपयोग कर आगे बढ़ता है।'' ''काक चेष्टा बको ध्यानं श्वान निद्रा तथैव च अल्पाहारी गृहत्यागी विद्यार्थीना पंचलक्षणं। गुरु और शिष्य के बीच केवल शाब्दिक ज्ञान का ही आदान प्रदान नहीं होता, बल्कि गुरु अपने शिष्य के संरक्षक के रुप में भी कार्य करता है। यही विश्वास गुरु के प्रति उसकी अगाध श्रद्धा और समर्पन बन जाता है।''

प्रो0 वीरेन्द्र सिंह
दिगम्बर जैन कॉलिज, बड़ौत (बागपत) उ.प्र.

गुरुदेव आपका क्या कहना
आप तो चलते-फिरते तीरथ हो।
जब भी बैठते ध्यान लगाकर,
मानों सिद्धों की सूरत हों।
जिनवाणी के वरद पुत्र हो,
ध्यानों में शुभ ध्यानी हो।
वाक्य निकलते मोती सम्
मानो वो जिनवाणी हो।

-साभार 'स्वर्णोदय'

माँ त्रिवेणी के लाल, जग को कर दिया निहाल

रत्नगर्भा यह भारत वसुन्धरा चिरकाल से ही ऋषि मुनियों के प्रवचनामृतों अभिसिंचित होती रही है। इसी कारण भारत को विश्व के धर्मगुरु कहलाते का सौभाग्य प्राप्त है। निर्ग्रन्थ सन्तों की पुनीत श्रृंखला में अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, अक्षर शिल्पी, पंचाक्षमल्लसज्जेता, अनुपम अनुशासन व चारित्र साधक, महान तीर्थोद्धारक, वात्सल्यमूर्ति, विपुल साहित्य सजृनकर्ता, विशाल संघनायक विश्ववंय परम पूज्य 108 आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज है, जो उत्कृष्ण मुनिचर्या का पालन करते हुए भव्य जीवों को कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर रहे है।

वीर भूमि राजस्थान प्रान्त के धौलपुर जिलान्तर्गत विरौंधा ग्राम में पिता श्री (रिखब) ऋषभचन्द जैन के घर माँ त्रिवेणी बाई की पावन कुक्षि से दिनेश नाम के बालक ने सन् 1967 को जन्म लिया और युवावस्था में ही युगादि देव ऋषभ के मार्ग का अनुसरण कर 11 अक्टूबर 1989 को निर्ग्रन्थ मुनि दीक्षा धारण कर मुनि श्री निर्णयसागर जी के रूप में रत्नत्रय (सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान, सम्यक्चारित्र) की त्रिवेणी में अवगाहन करने लगे।

आपकी दिव्य लेखनी से विविध भाषाओं में 300 से भी अधिक ग्रन्थों का सजृन/सम्पादन भव्य जीवों के कल्याणार्थ हुआ है। अनेक तीर्थों का उद्धार आपकी पावन प्रेरणा से हुआ है। पंचकल्याणक प्रतिष्ठाओं, विधानों, जिनार्चनाओं तथा विद्वत्गोष्ठियों में सक्रिय निर्देशन व सान्निध्य प्रदान कर आपने महती धर्म प्रभावना की है।

आपकी जन्म स्वर्ण जयन्ती के पुनीत अवसर पर मैं भावना करता हूँ कि आपकी दीक्षा स्वर्ण जयन्ती, दीक्षा हीरक जयन्ती भी हम आपके ही सान्निध्य में उत्साहपूर्वक मनाकर पुण्यार्जन करें, किन्तु आपका जन्म अनेक बार न हो और आप अत्यल्प काल में ही स्व-पर कल्याण में रत रहते हुए मोक्ष लक्ष्मी का वरण करें। आपके पावन चरण कमलों में बारम्बार नमोस्तु निवेदित करता हूँ।

प्रो. टीकम चन्द जैन, प्रतिष्ठाचार्य
एम 84 नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

प्रणामाञ्जलि

अक्षर-शिल्पी पूज्य आचार्य वसुनंदी मुनि महाराज के प्रथम दर्शन चौरासी मथुरा में सन् 2007 में चातुर्मास में हुए। उस समय उपाध्याय 108 श्री निर्णयसागर से विश्रुत थे। वीतरागी स्मित-चेहरा, समत्व साधना में निरत आपकी वाणी में वीणा सी मधुरता का रसपान कर, विनीत मैं चरणों में झुक गया। जैसे पूर्व से मेरा परिचय हो। उस आत्मीयता से आशीर्वाद देकर सृजित साहित्य का उपहार भेंट किया। यदि संत कवि हृदयी और करुणा अनुकम्पा की पिच्छी धारण किये हो तो निश्चित ही ऐसे संत समागम से आनंदानुभूति अवश्य होती है।

आप अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी दिगम्बर आचार्य हैं, उस का प्रत्यक्ष प्रमाण आपका वृहद् साहित्य और ज्ञान-साधना की अपरिमेय-दृष्टि है। आपकी 50वीं 'स्वर्ण जयन्ती महोत्सव' (3-10-17) पर भले ही मैं श्रवणबेलगोला की विद्वतसंगोष्ठी में रहूंगा, परन्तु आपकी रत्नत्रयी-साधना और महाव्रतों का अनुशीलन, भव्य-जीवों को मोक्षमार्ग प्रशस्त करता रहेगा, ऐसी मेरी श्रद्धा/विश्वास की लेखनी रेखांकन कर चरणों में सविनय नमोऽस्तु।

चरणानुरागी-प्राचार्य पं. निहालचंद जैन
जवाहर वार्ड-बीना (म. प्र.), पिन-470117
मो. 9893633851

जहाँ-जहाँ भी पग रखते हो,
मिट्टी चंदन हो जाती है।
धरती पग को पाकर देखो,
सुबह-शाम सी हँस जाती है।
गीत गा रहे झरने-बादल,
मानो जय-जय बोल रहे,
अपने दिल का दर्द कर रहे,
मानो कपाट को खोल रहे।।

-साभार 'स्वर्णोदय'

तुम्हें भूलना नामुमकिन

हालांकि बात फरवरी 2004 की है पर ऐसा लगता है कि कल की बात हो। पूज्य आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी महाराज (उस समय उपाध्याय निर्णय सागर जी महाराज) सरधना (मेरठ) में विराजमान थे। उसी समय शामली नगर में पूज्य ऐलक श्री विज्ञान सागर जी महाराज (ससंघ) प्रवास कर रहे थे। पूज्य ऐलक श्री विज्ञान सागर जी के आशीर्वाद एवं प्रेरणा से शामली जैन समाज के श्रावकों के साथ मुझे भी पूज्य उपाध्याय श्री को शामली आने का निमन्त्रण देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सरधना पहुँचकर पूज्य श्री को श्रीफल भेंट कर शामली आने के लिए निवेदन किया गया। मेरे जीवन का यह पहला सुअवसर था जब मैंने उपाध्याय श्री के प्रथम बार दर्शन किये। शामली जैन समाज के आमन्त्रण को स्वीकार कर पूज्य श्री ने शामली आगमन के लिए अपनी स्वीकृति दी। और एक निश्चित तिथि को सरधना से शामली की ओर उनका विहार हुआ। ऐलक विज्ञान सागर जी महाराज के निर्देशन में पूरे संघ का जैन समाज शामली द्वारा बड़ी गर्मजोशी से भव्य स्वागत किया गया। शामली नगर के बाहर गुरु-शिष्य मिलन का अद्‌भुत दृश्य था। दो संघों का मंगल मिलन हो रहा था। हम सभी उस मिलन को देखकर अभिभूत थे। बैण्ड-बाजों के साथ पूरा समाज उमड़ पड़ा था। स्थान-स्थान पर जैन युवाओं ने अपने-अपने तरीके से संघ की अगवानी की। आज भी उस गुरु-शिष्य को याद कर मन प्रफुल्लित हो जाता है।

शामली नगर में प्रवास के दौरान मुझे पूज्य श्री ससंघ क सान्निध्य का सुअवसर प्राप्त हुआ। उनका सरल व्यवहार, मृदुवाणी एवं धर्मानुकूल व्यवहार ने सबका मन मोह लिया। उनके मीठे प्रवचन धर्मसभा में श्रावकों की संख्या निरन्तर बढ़ाते रहे। प्रवचन-सभा में उससे पहले कभी इतनी संख्या नहीं रही थी। हालांकि शामली नगर में प्रवास कुछ ही दिन रहा लेकिन जो भी हमें समय मिला उससे पूरा जैन समाज उनका दीवाना हो गया। उनकी सारगर्भित एवं ओजस्वी वाणी ने धर्मपिपासु श्रोताओं का मन

मोह लिया। शंका-समाधान के समय ऐसा लगता था कि जैसे साक्षात् गणधर जी समवशरण में विराजमान हो। सभी प्रश्नों का यथोचित उत्तर प्राप्त कर मन शान्त हो जाता था। उस समय से लेकर अब तक जैन समाज शामली पूज्य श्री को भूला नहीं है। कुछ श्रावक समय-समय पर उनके दर्शन भी करते रहे हैं। श्री जयशान्तिसागर निकेतन, मण्डौला मे आयोजित पंचकल्याणक पूजा में भी श्री 108 आचार्य वसुनन्दी जी का सान्निध्य मिला। उनके दर्शन का लाभ मिला। श्रावकों के प्रति उनका वात्सल्य अन्यत्र देखने में नहीं आता। ऐसे साधु-स्वाभावी गुरुवर संसार में दृष्टिगोचर नहीं होते।

परम पूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत आचार्य श्री 108 विद्यानन्द जी महाराज के शुभाशीर्वाद से आचार्य पद का दायित्व लेकर संघ को संचालित कर रहे हैं। अपने वैराग्य जीवन के लगभग 30 वर्षों में कई महान ग्रन्थों की रचना कर समाज को एक नयी दिशा दी है। 'मीठे प्रवचन' ग्रन्थ के माध्यम से छोटे-छोटे प्रसंगों द्वारा अन्तर में उतर जाने वाली बातों का संग्रह निश्चित रूप से हम जैसे अज्ञानी को दिशाबोध कराते हैं।

मैंने पूज्य श्री के कई ग्रन्थों का स्वाध्याय किया है। मैंने पाया है कि ग्रन्थ को प्रारम्भ करने के बाद ग्रन्थ के समापन तक पढ़ने की जिज्ञासा एवं रुचि बनी रहती है। आचार्य श्री द्वारा लिखित ग्रन्थ 'दुःखों से मुक्ति' निश्चित रूप से सभी के लिए कल्याणकारी है। इन ग्रन्थों का स्वाध्याय मोक्षमार्ग का वाहन तो है ही साथ ही संसार मार्ग का अवरोधक भी है। इन ग्रन्थों की भक्ति सातिशयकारी, पुण्यबर्धक, अशुभ आस्रव निरोधक, शुभ आस्रववर्धिनी एवं पूर्ववद्ध कर्मों की निर्जरा करने वाली है। 'कल्याणी' ग्रन्थ का अध्ययन एवं अध्यापन निश्चित रूप से सभी के लिए कल्याण करने वाली है। इस पुस्तक में चार-चार पंक्तियों द्वारा दिया गया ज्ञान, आत्मोन्नति के लिए साधक है। आचार्य श्री द्वारा विरचित ग्रन्थों को बार-बार पढ़ने से नयी-नयी ऊर्जा का संचार होता है।

वर्तमान पंचम काल में तीर्थंकर भगवान का साक्षात सान्निध्य नहीं है लेकिन उनकी वाणी एवं उनके द्वारा प्रणीत मार्ग पर चलने वाले साधु ही आज जनमानस के लिए आलंबन है। उनके श्रीमुख से जिनवाणी की वाचना ही धर्मपिपासु साधको के लिए अंधेरे में ज्योति के समान है।

परम पूज्य आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज की कृति 'सद्गुरु की सीख' जनमानस को नैतिक संस्कार प्रदान करने वाली है। यह कृति सभी स्वाध्याय प्रेमियों को रुचिकर एवं कल्याण कारक है। 'धम्मस्स सूक्ति संग्गखे' में आचार्य श्री की लेखनी ने सचमुच गागर में सागर भर दिया है।

आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी महाराज की सभी क्रियाऐं सर्वानुग्रही एवं बहुजन हितकर रूप होती हैं। प्रज्ञ पुन्ज, महान तपस्वी एवं सरस्वती पुत्र आचार्य नभ में ध्रुवतारा के रूप में विद्यमान हैं।

अक्षर शिल्पी, महामनीषी, महावीर के अवतारी आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज की स्वर्णिम जयन्ती पर उनके श्री चरणों में नतमस्तक हैं। अपने प्रवचन एवं अमिट लेखनी द्वारा समाज का जो दिशा निर्देशन किया है, उसके लिए पूरा समाज आपका ऋणी रहेगा।

हम सभी की कामना है कि आप स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवन प्राप्त कर हम सभी का कल्याण करते रहें।

शत्-शत् नमन।

डॉ. एम. सी. जैन 'सर'
आर. के. पी. जी. कालिज
शामली (उ.प्र.)

उत्सव आज मनाऐं

स्वर्ण जयन्ती गुरूवर की मिलकर आज मनाऐं ।
झूमें नाचें और शान से गीत खुशी के गाऐं ।
राष्ट्र संत हैं गुरूवर के
गुरूवर विद्यानन्द ।
दर्शन भक्ति करके भरलो
जीवन में आनद ।
ढोल नगाड़ें लेकर हम सब
गीत गुरु के गाऐं ।
स्वर्ण जयंती.....
फाल्गुन महीने आती होली
रंगों की बरसात ।
पिचकारी बन जाओ गुरूवर
हम रंगों की बौछार ।
आन वान और शान से उत्सव सभी मनाऐं ।
स्वर्ण जयंती.....
आषाढ़ माह में होती है
खूब झमाझम वर्षा।
बादल तुम सनजाओ गुरूवर
बूंदें बन मैं हर्षा ।
नाच कूद कर जन्म जयंती
मिलकर सभी मनाऐं ।
स्वर्ण जयंती.....
श्रावण के महीने में रक्षाबन्धन पर्व है आता ।
राखी तुम बन जाओ गुरूवर
मुझे धागा बनना आता ।
गुरूवर की भक्ति की

एक मिसाल बनाएं ।
स्वर्ण जयंती.....
कार्तिक मास अमावस प्यारी
आती है दीवाली ।
दीपक तुम बन जाओ गुरूवर
बनूं ज्योति मैं प्यारी ।
घर घर पहुंचे धर्म धवजा
हम ऐसा कर पाऐं ।
स्वर्ण जयंती.....
ग्रंथों की रचना कर तुमनें
राह मोक्ष दिखलाई ।
पठन और पाठन करके
मुझको बुद्धि आई ।
स्वाधयाय प्रेमी हो जन जन
ऐसी अलख जलाऐं ।
स्वर्ण जयंती.....
जन जन के हितकारी हैं
वसुनन्दी जी प्यारे।
अक्षर शिल्पी मृदुभाषी हैं
सारे जग से न्यारे ।
स्वर्ण जयंती है गुरूवर की
उत्सव आज मनाऐं ।
स्वर्ण जयंती.....

डा. एम.सी. जैन (शामली)

आचार्य श्री वसुनंदी जी संक्षिप्त परिचय

सती शिरोमणि त्रिवेणी देवी जैन में सफलित गोदी के शृंगार, भाग्यवान श्री रिखबचन्द्र जैन पिता के शुभ भाग्योदय के आधार, कमल मम मनोहर ग्राम विरौंधा, धौलपुर, नगरी की भव्य भावना-मय उपहार आचार्य श्री वसुनन्दी जी मुनिराज सादर नमन तुम्हें करता हूँ त्रयकार।

इतिहास के पृष्ठों को अगर पलट कर देखा जाये तो भारत संतों व ऋषियों की भूमि रही है। यहाँ पर अनेक संत हुए जिन्होंने जीवन में साधनों में नहीं बल्कि साधना में, तप में, त्याग से एवं आचरण से जीवन को धन्य बनाया है और मुक्ति के चरम शिखर में प्राप्त हुए। ऐसी साधना से महान बनने वाली आत्मायें हमें आचरण व त्याग की प्रेरणा देती रहती हैं। ऐसे सन्तों की श्रेणी में अग्रणी, जन जन की आस्था के केन्द्र, आगम ज्ञाता, महान धर्मोपदेशक, चन्द्रमा सम शीतल एवं श्रमण संस्कृति के उन्नायक संत शिरोमणि आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज के 50वें स्वर्ण जयंती महोत्सव 3-10-2017 पर मैं अपनी ओर से आपके उज्जवल, त्यागमय, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं साधना में रत व्यक्तित्व के प्रति अपनी श्रद्धा अभिव्यक्त करते हुए हार्दिक बधाई देता हूँ और जिन शासन देव के चरणों में आचार्यश्री जी के रत्नत्रय की कुशलता एवं मंगलमय स्वास्थ्य दीर्घायु की प्रार्थना करता हूँ कि आप चिरकाल तक देश, धर्म और समाज का मार्ग दर्शन करते रहे।

3 अक्टूबर 1968 का शुभ दिन दिगम्बर जैन जगत के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है, जब जिला धौलपुर (राजस्थान) तहसील मनियां के एक छोटे से ग्राम विरौंधा में माँ श्रीमती त्रिवेणी बाई जैन व पिता श्री रिखबचन्द्र जैन के घर में एक होनहार बालक ने जन्म लिया। जिसका नाम दिनेश रखा था। प्रकृति ने किस महान उद्देश्य को लेकर इस बालक को भेजा था, उस समय उसके मोह शील आत्मीय जन यह नहीं समझ सके। पूर्व जन्म के संस्कार कहिये या शुभ कर्मोदय कहिए, आपको कम उम्र में वैराग्य की प्राप्ति हुई। आपने 14-5-1988 का वर्ष की आयु

में ही ब्रह्मचर्य दीक्षा ले ली और मात्र 6 माह के उपरांत क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण की, और आपने 6 माह के उपरांत ही 11-10-1089 भिण्ड में मुनि दीक्षा ग्रहण की। आप मुनि श्री निर्णय सागर जी मुनिराज के नाम से जाने गए आपने आगमों का स्वाध्याय किया, षटदर्शनों के मार्मिक रहस्यों को समझा और अपनी प्रतिभा को निखारा। आप कुछ ही वर्षों में अपने अथक परिश्रम के बल पर जैन जगत के गगन पर एक महान संत, महान विद्वान के रूप में एक देदीप्यमान नक्षत्र बनकर चमक उठे। आपको 17 फरवरी 2002 में उपाध्याय पद से विभूषित किया। आपको 3 जनवरी 2015 का शुभ दिन दिगम्बर जैन जगत के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित हो गया जब तपोनिष्ठ, जन जन की आस्था के केन्द्र प.पू. श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज ने एलाचार्य 1-4-2009 श्री वसुनंदी जी मुनिराज को आचार्य पद में अलंकृत किया। मुनि दीक्षा के पवित्र दिन 11 अक्टूबर 1989 से आज तक आप निरंतर अनेक अतिशय क्षेत्र, सिद्धक्षेत्र व नगरों में स्वतंत्र रूप से चातुर्मास करते हुए देश के युवक युवतियों, बच्चे व वृद्धों में धर्म का बीज रोपण करते हुए जैन संस्कृति को उच्चतम शिखर पर पहुँचाने में प्रयासरत हैं।

आपने करीब 200 ग्रंथों की रचना की है। दिगम्बर जैन समाज की धरोहर है आप हम सबका मार्गदर्शन कर रहे। आप दि. जैन जगत के क्षितिज पर सूर्य की तरह दैदीप्यमान हैं। जिस प्रकार चहुँओर फैलाकर अज्ञान रूपी अंधकार को मिटा रहा है।

पर्वत में ऊँचाई होती है, गहराई नहीं, सागर में गहराई होती है, ऊँचाई नहीं, ऊँचाई और गहराई किसी में एक साथ देखनी है तो उसे आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज का सानिध्य प्राप्त करना होगा। आचार्य भगवान में जहाँ चारित्रिक ऊँचाई पर्वत से अधिक है वहीं ज्ञान की गहराई भी किसी सान्निध्य से कम नहीं है।

आप सभी को विदित है कि पारस मणि को छूकर लोहा भी सोना हो जाता है, पर उसमें पारस मणि के गुण नहीं आते परन्तु गुरुवर आचार्य प्रवर वसुनन्दी जी तो वह पारस मणि हैं जो सम्पर्क में आने वाले को सोना

नहीं अपितु पारस मणि बना देते हैं। अर्थात् अपने सम् बना देते हैं। ऐसे परोपकारी संत के विषय में जितना भी लिखा जाये वह कम ही होगा, जिस प्रकार ग्रीष्म ऋतु में लोग दिन में पेड़ों की छाया का आश्रय लेते हैं शीतल जल वाले सरावरों में डुबे रहकर ताप निवारण करते हैं, शीतल पेय पीते हैं, चन्द्रमा की शीतल किरणों से शांति प्राप्त करते हैं। उसी प्रकार संसार के दुखों से त्रस्त घबराये प्राणी गुरुदेव के पाद कमलों में आकर शांति प्राप्त करते हैं। ऐसे युग प्रमुख, युग प्रवर्तक, महान चिंतक, गुरुवर आचार्य श्री के गुणों को कहाँ तक वर्ण करें। शब्दों से क्या भावों को तोला जा सकता है? नहीं कदापि नहीं।

यूं तो कहने को तेरे सिर पर कोई ताज नहीं।
मगर कौन सा वो दिल है, जिस पर तेरा राज नहीं॥

भवदीय

प्रो. एस.के. जैन

रिटा. प्रिंसिपल, प्रधान बी.एम. कॉलेज
भूतपूर्व प्रधान, दि. जैन मंदिर करनाल (हरियाणा)
संरक्षक-उपाभ्याय नयनसागर जैन कॉलेज

विद्वानों की दृष्टि में आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज

वर्तमान निरन्तर प्रगति एवं वैज्ञानिक अनुसंधान के युग में पूरा विश्व बारूद के ढेर पर बैठा है। अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त सम्पन्न राष्ट्र भी हर पल अत्यधिक अस्थिरता तथा बैचैनी का अनुभव करते है एवं निरन्तर सम्भवत: एक मानसिक उद्वेग से परे शांति की खोज में रहते है। इसी शांति की तलाश में वे लोग भारतीय संस्कृति तथा शाकाहार का आश्रय लेने लगे है। आज भारत के अनेक प्रतिष्ठित विश्व विद्यालयों में जैन दर्शन एवं जैन तीर्थंकरों पर अनेक शोध हो रही है तथा शोध-ग्रंथों पर पी.एच.डी. एवं डी. लिट् की उपाधि प्रदान की जा रही है।

हमें गर्व है कि हमारे जिन आगम को मानने वाले जैन साधु अनेक पुस्तको की रचना करते है तथा उनके मार्मिक प्रवचन इतने गहन होते है कि उनसे अनेक पुस्तकों को लिखा जा सकता है। वर्तमान में उच्च कोटि के जैन साधुओं में परम पूज्य आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज का नाम सर्वप्रथम मानस में आता है। आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज का चिन्तन विशाल सागर से भी गहरा है। उनकी वात्सल्य दृष्टि पूर्णिमा चन्द्रमा की शीतलता सी प्रदान करती है। उनके साहित्य की वाटिका में अनेक ग्रन्थों रूपी पुष्प अपनी सुगन्धी चारों और फैला रहे है। उनके मधुर प्रवचनों में न जाने कितने लोग पत्थर की मूर्ति के समान ध्यानस्थ से होने लगते है। आचार्य श्री एक नहीं अनेकों भाषाओं के ज्ञाता है। उनकी स्मरण शक्ति अविस्मरणीय है। किसी भी विषय पर वे धारा-प्रवाह बोलते चले जाते है, लिखने वाले का हाथ रूक जाता है, किन्तु उनकी वाणी में कही कोई अवरोध नहीं आता है।

आचार्य श्री के साहित्य सागर से मैंने कुछ रत्न चुने तथा उनका अध्ययन करने लगा तो हर पल दृष्टि प्रत्येक उदाहरण पर रूक जाती तथा मन विचार करने को विवश हो जाता प्रथम रत्न ''न मिटना बुरा है न पिटना'' इस ग्रंथ में माटी के माध्यम से फूलों के माध्यम से तथा अनेक

यथाउपयोगी माध्यमों से रचनाकार ने जो जीवन्तता उत्पन्न की है, उसको लेखनी से नहीं लिखा जा सकता, केवल पढ़कर भावों में समाहित किया जा सकता है।

मीठे प्रवचन-1 (दृश्य अंतर का)

मीठे प्रवचन-2 (कदम मंजिल की ओर)

मीठे प्रवचन-3 (दृष्टिकोण सम्यक दृष्टि का)

उक्त पुस्तकें इस संसार में भटकते प्राणी के लिये अमृत प्याले की तरह है। मानव के हृदय में आने वाले हर प्रश्न का यथोचित उत्तर है। मानव को संसार रूपी सागर से पार उतारने की नौका है। उक्त पुस्तकों का हर बार अध्ययन नवीन लगता है तथा मन पुनः पढ़ने को आतुर होता है।

दु:खों से मुक्ति

उक्त पुस्तक जिनेन्द्र प्रभु की शक्ति में 'जिनसहस्त्रनाम महार्चना में लिखी गई है। वास्तव में जिनेन्द्र देव के एक हजार आठ नामों का निरन्तर श्रद्धा से जो जीव नित्य पाठ करते है, वे भव्य जीव निरन्तर अपनी आत्मा का कल्याण करते हुये मोक्ष पद को प्राप्त होते है।

उक्त ग्रन्थों के अतिरिक्त आचार्य श्री द्वारा रचित निम्नांकित पुस्तकों के विषय में उल्लेख करना आवश्यक हैं-

अन्त में, मैं कहना चाहूंगा परम पूज्य गुरुदेव आचार्य वसुनन्दी जी महाराज इस धरा पर तीर्थंकर के समान है, वास्तव में उनकी पुस्तकों, साहित्य तथा विलक्षण प्रतिभाओं के बारे हम तुच्छ मानवों की लेखनी वर्णन नहीं कर सकती है। आचार्य श्री की सकारात्मकता (Prsitivity), धैर्य, अवर्णननीय वात्सल्य तीक्ष्ण बुद्धि तथा विश्लेषण क्षमता, परोपकार भावना, समदृष्टि एवं अनेक गुण ऐसे है जो प्रत्येक दर्शनार्थी को अपनी ओर आकर्षित कर सदैव के लिए अपना बना लेते है। अन्त में आचार्य श्री के चरणों में शत्-शत् नमन्।

प्रो. (डॉ. मुकेश जैन)

बी-64, सेक्टर-33, नोएडा मो. 9891974323

नमन

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग में रत प. पू. आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज जो प्राकृत हिन्दी एवं संस्कृत ग्रन्थों के लेखक हैं। जिनके जन्म के 50 वर्ष पूर्ण होने पर उनके भक्तजन अनेकानेक समाज हित के कार्य सम्पादित कर रहे हैं। यद्यपि मैं साधुओं की जन्म जयन्ति मनाने का व्यक्तिगत रूप से समर्थक नहीं हूँ, स्वयं आचार्य महाराज भी नहीं है। परन्तु श्रावक की अपने गुरु के प्रति श्रद्धा व समर्पण भाव अपने श्रेष्ठ आचार्य के जन्मोत्सव पर वह जनहित के कार्य आदि कर आत्मसंतुष्ट होते हैं।

गुरुओं के प्रति श्रद्धाभाव बना रहे, उनकी अनुकम्पा हमारी साधना में सहयोगी बने मैं मुनिराज के दीर्घायुस्य की मंगल कामना करता हूँ। और हम इस अवसर पर जो भी श्रेष्ठ कार्य हो उनकी हृदय से अनुमोदना करता हूँ।

मुनिराज के ससंघ चरणों में नमोऽस्तु-3

विनीत कुमार जैन
प्रधानाचार्य श्री म. दि. जैन संस्कृत उ. मा. वि.
साढूमल, ललितपुर (उ.प्र.)-284404
मो. 9721419696

गुरुजनों का सत्संग पाकर,
देखों मानवता चमकी है।
नील गगन में एक ही तारा
देह तुम्हारी दमकी है।
निश्छल बनकर खड़े तपस्वी,
अभिनंदन देव भी करते हैं।
गुरू चरणों में हम भी आये,
आरती वन्दन करते हैं।।

-साभार 'स्वर्णोदय'

आत्मनिष्ठा के अनुपम आदर्श : आचार्य श्री वसुनन्दी जी

शारीरिक एवं मानसिक विषमताओं के अवसर पर व्यक्ति आकुल व्याकुल हो जाते है। ऐसे अवसरों पर अधिकांश व्यक्ति अनेक प्रकार के साधनों का प्रयोग उन विषमताओं को दूर करने के लिए कृत्रिम साधनों का प्रयोग करते हैं। चिकित्सकों के पास प्रतिदिन उन विषमताओं को लेकर चिकित्सा परामर्श हेतु आते हैं। इन संसाधनों का प्रयोग रोगों की चिकित्सा करने में आश्चर्य पूर्ण प्रभाव दिखाते हैं। परन्तु आचार्य वसुनन्दी जी मुनिराज कई बार गम्भीर रूप से रोग ग्रस्त हो जाने पर भी मानसिक रूप से विचलित नहीं होते देखे गये हैं। फिरोजाबाद में पीलिया रोग से पीड़ित हो गये। उस समय उनका स्वास्थ्य कमजोर हो गया था परन्तु मानसिक दृढ़ता बने रहने से ठीक हो गये।

शंकरनगर, दिल्ली में आचार्य श्री का स्वास्थ्य मधुमेह की बीमारी से गम्भीर रूप से बीमार गये थे। वे इस बीमारी की गम्भीरतम अवस्था अर्द्ध चेतना (सेमी कोमा) में चले गये। मुझे ज्ञात हुआ कि आचार्य श्री गम्भीर रूप से बीमार है तो मैंने उन्हें देखने का विचार किया। मेरे स्वभाव के अनुसार मैं यदि अन्य चिकित्सक रोग की चिकित्सा कर रहे हो तो मैं उसमें हस्तक्षेप नहीं करता। परन्तु आचार्य श्री की गम्भीर रोग की स्थिति में मैंनें हस्तक्षेप कर उनकी उचित चिकित्सा हेतु परामर्श दिया। आचार्य श्री गम्भीर परिस्थितियों में किसी प्रकार निराश नहीं नजर आये। वे उस विषम परिस्थिति में जिनेन्द्र प्रभु के चरण शरण के प्रभाव से स्वस्थ हो गये।

मुनिश्री सदैव अपने संघ में एक वाक्य सदैव उच्चारण स्वयं करते हैं और अपने संघ के सभी साधुवृन्द से बुलवाते हैं ''मैं पूर्ण स्वस्थ हूँ। मेरे भाई मैं पूर्ण स्वस्थ हूँ।'' यह वाक्य शरीर में नई चेतना का संचार कराता है।

आचार्य श्री वसुनन्दी जी मुनिराज द्वारा 2017 के चार्तुमास के अवसर

पर प्रात:काल समाधितंत्र का अध्ययन, 8 बजे सार समुच्चय आचार्य कुलभद्र स्वामी द्वारा रचित शास्त्र का वाचन, दोपहर में पद्मपुराण का वाचन, सांयकाल में प्रथमानुयोग की कथाऐं सभी श्रावकों को रूचिपूर्वक सुनने को मिलती रही। दशलक्षण पर्व पर भी मीठे प्रवचनों का लाभ जन मानस को प्राप्त हुआ। इन कार्यक्रमों से धर्म की अत्याधिक प्रभावना हुई। श्रावकों मे जिनवाणी पढ़ने की रूचि उत्पन्न हुई। मुनि श्री के प्रवचनों को सुनने जैन अजैन सभी लोग आते थे।

मुनि श्री की विलक्षण प्रतिभा उस समय लगती थी जब वे 10 मिनट में 100 श्लोकों का वाचन पूर्ण कर देते थे। आश्चर्य की बात कि कोई भी श्लोक पढ़ते समय ऐसा नहीं लगता था कि वे तीव्र गति से पढ़ रहे है। प्रत्येक शब्द स्पष्ट समझ में आता था।

स्मरण शक्ति का अद्भुत परिचय मुनिराज श्री वसुनन्दी का उस समय परिलक्षित होता था जब वे अनेक ग्रंथों की मूल गाथाऐं बोलते थे एवं लोकोक्तियों का संदर्भ देकर अपने अभिप्राय को प्रकट करते थे।

जिनेन्द्र भक्त एवं धर्म प्रभावक आचार्य श्री वसुनन्दी मुनिराज के पावन चरणों में अपनी विनयांजलि प्रस्तुत करते हुए हर्ष की अनुभूति होती है। जिनेन्द्र प्रभु से प्रार्थना करता हूँ मुनि श्री दीर्घायु हो एवं जैन धर्म के दिव्य संदेश को सदैव इसी प्रकार सम्पूर्ण विश्व में फैलाते रहे।

डॉ. डी. सी. जैन

भूतपूर्व विभागाध्यक्ष न्यूरोलोजी विभाग, दिल्ली
वर्द्धमान महावीर मेडिकल कालेज एवं सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली

सरल, सौम्य स्वभाव एवं चुम्बकीय व्यक्तित्व के धनी

जैन धर्म में चतुर्विध संघ का बहुत महत्व हैं पंचम काल में तो साधु ही श्रावक/श्राविकाओं का मार्ग दर्शन करते हैं। आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज सरल, सौम्य, स्वभाव स्व वात्सल्य के धनी आचार्य है जो आत्म साधना से बचे समय का सदुपयोग श्रावकों के हित में साहित्य के सृजन एवं युवाओं को संस्कारित करने में करते हैं। उनके व्यक्तित्व में चुम्बकीय आकर्षण है कि जो एक बार गुरुवर के सम्पर्क में आ जाता है वह सदैव ही उनके दर्शन को लालायित रहता है एवं यही कारण है कि उनके गुणानुरागियों की संख्या सतत बढ़ रही है। परम पूज्य राष्ट्र संत आचार्यश्री विद्यानंद जी के सान्निध्य में रहकर आपने आगमिक ज्ञान में भी बहुत वृद्धि कर ली है।

मुझे आपकी तीन कृतियों को पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ है:

1. न मैं चुप हूँ न गाता हूँ

छोटी बड़ी 38 कविताओं का यह सुंदर गुलदस्ता है जिसमें सुंन्दर रीति से गीत एवं कविताओं को गूंथा गया है। श्री अजितनाथ स्तवन से प्रारंभ इस संकलन की आखिरी कविता श्री निर्ग्रन्थ गुरु स्तवन है किन्तु मध्य में जीवनोपयोगी अनेक शिक्षाओं को परोसा गया है। नमूना देखिए

सहना सब हाल में भला है,
सहना सत्व में रहने की कला है।
सहना आगे बढ़ने की विधि है,
सहना सर्व गुणों की निधि है।
ना कहना, न स्वात्मा को दहने से,
आदमी श्रेष्ठ बनता है सहने से।
जिसने जीवन में सीखा है सहना और सहना,
उसने ही गुणाधिक्य के कवच को है पहना॥

2. आत्मा का ए.सी. रूम

46 पृष्ठीय इस लघु कृति में आचार्य श्री ने मुख्यतः क्षमा के संदर्भ में सुंदर सूक्तियों को संकलित किया है। इसके अलावा भी अनेक सूक्तियां एवं सुंदर आलेख है किन्तु आपकी ही एक अन्य कृति मीठे प्रवचन से वृद्धों को सलाह के रूप में जो 4 बिन्दु संकलित किए गए हैं वे बुजुर्गों के मन की शांति के लिए दीपस्तम्भ है। मैं यहाँ उन्हें अविकल उद्धृत कर रहा हूँ। जो अपनी वृद्धावस्था को सुखी बनाना चाहते हैं उन्हें वृद्ध अवस्था में चार बातें ध्यान रखनी चाहिए

1. कौन, 2. मौन, 3. नौन, 4. पौन अर्थात्

1. कौन कोना/एंकात प्रिय रहो। बहु-बेटी आदि आपकी बार-बार दखलंदाजी पसंद नहीं करेंगे, बिना पूछे ही आप सलाह दोगे तो अपमानित होना पड़ेगा।

2. मौन कम से कम बोलना कम बोलने से आत्म शक्ति और आत्मशांति की प्राप्ति होती है, सम्यक मौन व्रत का पालन करने वाले व्यक्ति की वाणी भी प्रभावी होती है।

3. नौन नमक अर्थात भोजन में नमक मिर्च या मीठा आदि की हीनाधिकता की चर्चा किये बिना जैसा मिले वैसा ग्रहण कर लेना क्योंकि अब तुम पराधीन हो, तुम्हें अब अपने अनुकूल नहीं परिवार के अनुकूल चलना है।

4. पौन पवन, अब वृद्धावस्था में पवन वत निःसंग रहो। बहिरंग परिग्रह के साथ अंतरंग परिग्रह भी घटाओ तभी परलोक की यात्रा सुखद हो सकेगी।

3. सद्गुरु की सीख

24 लघुकथाओं को समाहित करने वाली इस 176 पृष्ठीय कृति में संकलित कथायें जीवन को जीना सिखा देती है। प्रत्येक कहानी एक-एक सच्ची शिक्षा देकर जाती है। कहानी कला के तत्वों के आधार पर ये श्रेष्ठ कहानियाँ हैं। जिनमें कथानक, कथावस्तु, संवाद, शिक्षा सभी गुणों का परिपाक है।

पूज्य आचार्यश्री की अन्य कृतियाँ भी ऐसी ही श्रेष्ठ होगी ही। मैं गुरुवर के रत्नत्रय की वृद्धि की मंगल कामना करता हूँ एवं आशा करता हूँ कि उनकी लेखनी से और भी श्रावकोपयोगी वृत्तियाँ मिलेगी। इन सबसे हमारी श्रमण परम्परा का गौरव बढ़ेगा।

डॉ. अनुपम जैन

प्राध्यापक गणित, ज्ञानछाया

डी-14, सुदामा नगर, इंदौर (म.प्र.)

आशीर्वाद का कलश भरा है,
शुभ भावों का दान दिया।
दौलत भर दी इतनी सारी,
धरती का कल्याण किया।
नरभव रतन बता रहे,
कठिन तपस्या करते हो।
बालक सम् हो निर्विकार हो,
अध्यात्म साधना करते हो।।

–साभार 'स्वर्णोदय'

ज्ञान के अथाह सागर- आचार्य श्री वसुनन्दी जी मुनिराज

आचार्य वसुनन्दि जी के प्रथम दर्शन मुझे सन् 2004 में कुन्दकुन्द भारती, नई दिल्ली में हुए थे जब आपका नाम निर्णयसागर मुनि था। उन दिनों आचार्य विद्यानन्द मुनिराज के सान्निध्य में आप ससंघ अध्ययन कर रहे थे। मुझे और मेरी धर्मपत्नी श्रीमति रुचि जैन को भी प्रतिदिन आचार्य श्री के मुख से रत्नकरण्ड श्रावकाचार सुनने पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

उन दिनों मुनि निर्णय सागर जी कक्षा के मध्य जिस प्रकार शंकायें करते थे उससे ही मुझे इनकी तीव्र तत्त्वजिज्ञासा एवं श्रुतप्रेम का अनुमान हो गया। मैं आपके स्वाध्याय प्रेम और साधना से बहुत प्रभावित हुआ। चूंकि साथ में ही कक्षा में अध्ययन कर रहे थे अतः विषयाधारित विमर्श भी आपके साथ सहज ही हो जाता था।

यह समागम मेरे लिए अनेक कारणों से महत्वपूर्ण था। जिसका उल्लेख करने का लोभ संचरण नहीं कर पा रहा हूँ। उन दिनों मेरी धर्मपत्नी गर्भावस्था में थी। प्रथम शिशु को लेकर मैं भी उत्साहित था। संस्कार गर्भ में ही पड़ जाते हैं ऐसा सुना था, अतः उसका प्रयोग करने के लिए मैं उसे प्रतिदिन श्रावकाचार जी की कक्षा सुनवाता तथा मुनिराजों के दर्शन करवाता। समय बीतता गया, 9 माह के अनन्तर मुझे पुत्र रत्न की प्राप्ति हुयी जिसका मैंने 'सुनय' नामकरण किया। सुनय तीन वर्ष के अनन्तर जब बोलना सीख रहा था, तब मैंने उसे श्रावकाचार का मंगलाचरण 'नमः श्री वर्धमानाय' सुनाया। वह उसे गम्भीरता पूर्वक सुनता और उसी उम्र में उसे यह मंगलाचरण स्मरण हो गया। उसने अपने मुख से सर्वप्रथम यही संस्कृत का श्लोक सुनाया। मेरा प्रयोग सफल रहा।

आचार्य श्री की एक पुस्तक 'दशामृतसार' मेरे हाथ फिरोजाबाद में उस समय लगी जब 2008 में मैं वहाँ दशलक्षण पर्व पर प्रवचनार्थ गया

था। दश धर्मों पर शास्त्र उद्धरणों के साथ, रोचक दृष्टान्तों के साथ एक प्रमाणिक पुस्तक पढ़कर मुझे बहुत आनन्द आया। तभी मैं आपकी लेखनी से भी प्रभावित हुआ। वर्तमान में आप प्राकृत भाषा में नयी रचनायें कर रहे हैं। यह आपके श्रुताभ्यास का परिणाम है। आप सदैव रत्नत्रय की वृद्धि करते रहें तथा स्वपरकल्याण करें और नवीन साहित्य सर्जनाओं से दिशाबोध देते रहें यही भावना है।

डॉ. अनेकान्त कुमार जैन
अध्यक्ष- जैन दर्शन, दर्शन संकाय
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत
विद्यापीठ, नई दिल्ली-110016
मो. 9711397716

ऐसा कोई काम नही है,
जो गुरुवर न करते हैं।
चलते-चलते लोग थक गये,
पर गुरुवर न थकते हैं।
चिंतन-लेखन करते गुरुवर,
फिर अनुभव की बात बताते।
स्वयं चले हो पहले गुरुवर,
फिर औरों को मार्ग दिखाते।

-साभार 'स्वर्णोदय'

एक अद्‌भुत संत : आचार्य वसुनन्दी जी महाराज

संयम साधना के अग्रदूत अभीक्ष्ण योगी सन्त आचार्य वसुनन्दी जी महाराज विभिन्न आयामों से विद्या-जगत में परिचित हैं। उनके अध्ययन, चिन्तन, लेखन विषय है और अभिव्यक्ति की अनेक सृजन कार्य करते हैं। भाषा, व्याकरण, साहित्य और समस्त शास्त्रीय सिद्धान्तों को मनुष्य की कसौटी पर रखकर देखने का आग्रह और दृष्टि स्वकीय विचारकोण है। आपने समय के अनुकूल ऐसी विचारधारा शृंखलाबद्ध दी है। आपके लेखन में भाषा की सरलता देखते ही बनती है और तर्क की क्षमता गहरे मथती है। इन सबमें अहम सूत्र जो संस्कृति पर विचार करते हुए आचार्य श्री ने दिए हैं वह न केवल प्रासंगित है अपितु विचारोत्तेजक भी हैं। चरित्र का सम्बन्ध जीवन से है और वह एक जीवन विज्ञान है। जीवन-विज्ञान को एक-एक विधा शाखा का विकास किया जाए तो आन्तरिक व्यक्तित्व से परिचित होने और उसे समझने संवरने का अधिक व्यापक अवसर मिल सकता है।

आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज इस विश्व को नया स्वरूप देना चाहते हैं, विषमता, अन्याय, असत्य, पाखण्ड, मानवीय अपमान, दुराचार, भ्रष्टाचार उनकी आँखों को भाता नहीं। वे इसे मनुष्य के मन से समाप्त करना चाहते हैं। उनका चरित्र बदलकर आन्तरिक बाध्यता बनाकर इसके भीतर की धरा को नम करते हुए उसे मानवीय बनाना चाहते हैं। जिसकी सत्यता को दुनिया की प्रयोगशाला में सब देख रहे हैं। ओ आत्मदर्शन, आत्मविश्लेषण और आन्तरिक परिशुद्धि पर पूर्ण बल देते हैं। पीढ़ियों के अन्तराल को जानते हुए भी वे न तो युवा पीढ़ी के प्रति अकरूण होते हैं और न वृद्धों के प्रति भावुक।

औद्योगिक संस्कृति और विज्ञान की बढ़ती आक्रमता के मध्य उनका करुण वात्सल्य प्रधान सन्त, मन अहिंसक जीवन प्रणाली की सादगी

चाहता है कहीं बढ़ते उपभोक्तावाद का सामना करते हुए मानवीय व्यक्तित्व की आत्मिक क्षमता को दृढ़ करते जाने में वे एक समाधान देखते हैं। बढ़ते अंधकार का खौफनाक रूप का दर्दनाक अहसास, जितनी गहराई तीव्रता, कलात्मकता, कुशलता और चित्रात्मकता से वे कराते हैं उतना ही यह विश्वास भी पैदा करते हैं कि कहीं न कहीं मनुष्य तमाम जटिलताओं प्रतिरोधी शक्तियों और मारक स्थितियों के बीच भी अपनी सृजनशीलता के उन्मेष के आधार पर वैतरणी पार कर सकता है। उनकी वह आस्था एक विशाल और मौलिक आध्यात्मिकता से बल अर्जित करती है।

आपकी वाणी और गहरे आशावाद से भरपूर, स्वस्थ, मौलिक एवं सार्थक परिश्रम की ऐसी गतिशील धारा जो चल पड़ती है। रास्ते पर इस विश्वास से कि युग को सही दिशा बोध अवश्य मिलेगा। आज विश्व-मानव की विश्वाब्धि के भ्रमरूपी भंवर से भटकती व डूबती नाव को नाविक की भाँति कुशल नेतृत्व प्रदान कर आचार्य श्री सुरक्षित उद्‌ष्टि की ओर ले जायेंगे।

आपकी अद्‌भुत क्षमता से जिन शासन की वृद्धि हो, धर्म का विकास हो, नव पीढ़ियों में धर्मचेतना प्रबल हो, सवत्वयशीलता का वातावरण निर्मित हो, धर्माचार्य का साम्राज्य स्थापित हो, तथा समाज एवं श्रमण परम्परा के लिए आप वरदान स्वरूप सिद्ध हों।

डॉ. अमित जैन
हैदराबाद (आ.प्र.)

राष्ट्रसंत की परम्परा के सच्चे निर्वाहक हैं आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज

दिगम्बर जैन संत के आत्म केन्द्रित व्यक्तित्व में यद्यपि इतनी सार्वव्यापकता निहित है कि उसे किसी परिधि में सीमित नहीं किया जा सकता, परन्तु किसी जैन सन्त को 'राष्ट्र सन्त' कहकर उनके विराट व्यक्तित्व के एक विशिष्ट आयाम का दिग्दर्शन तो किया ही जा सकता है।

किसी भी सन्त के राष्ट्रसंत होने का अर्थ है कि उनकी आत्मस्थ दृष्टि का व्यापक प्रसार हो जाना। स्वानुभूति होने के साथ-साथ अन्य प्राणियों में समानुभूति होने लगना। सामान्य मनुष्य और किसी संत के प्रेम, स्नेह और करूणा में यही अन्तर है कि सामान्य मनुष्य में प्रेम, स्नेह और करूणा के बीज स्वार्थ की कठोर पाषाण शिला के नीचे दबे रहते हैं और वही बीज निर्मोही सन्त के प्रेम, करूणा एवं परोपकार की मृदु भूमि पर अंकुरित होकर अनन्त विस्तार प्राप्त कर लेते हैं।

लोकव्यापी करुणा और वात्सल्य के अजस्र स्रोत आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज एक ऐसे ही राष्ट्रसन्त है जिन्होंने अपने गुरु विश्रुत राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्री 108 विद्यानन्द जी महाराज की लोककल्याणकारी परम्परा का निर्वहन सच्चे अर्थों में किया है। 03 अक्टूबर 1967 को ग्राम विरौधा जिला धौलपुर (राजस्थान) में जन्मे बालक दिनेश ने मात्र 16 वर्ष की युवा अवस्था में ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके और मात्र 22 वर्ष की उम्र में दिगम्बर मुनि दीक्षा धारण करके यह तो प्रारम्भ में ही सिद्ध कर दिया था कि उनका असीम व्यक्तित्व किसी संकीर्णता और स्वार्थ के दायरे में बंधने वाला नहीं है। दीक्षा के उपरान्त सतत स्वाध्याय और ज्ञानाराधना के द्वारा आप अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी के रूप में प्रसिद्ध हो गये।

जहाँ एक ओर आप अगाध वैदुष्य के धनी हैं वहीं प्राकृत एंव संस्कृत जैसी प्राच्य भाषाओं पर भी असाधारण अधिकार रखते है। आपने 250 से अधिक कृतियों का लेखन एवं संपादन करके जैन वाड्.मय के साथ-साथ

भारतीय मनीषा के संवर्द्धन में भी अभूतपूर्व कार्य किया है। आपके द्वारा प्राकृत भाषा में सृजित रयणकंडो (प्राकृत सूक्ति कोश),अज्ज- संक्किदी (आर्य संस्कृति), णंदिणंद सुत्त, रट्ठसंति महाजग्गो एवं ऐसी ही अनेक अन्य कृतियाँ आपके अगाध वैदुष्य और उदस्त भावों का स्पष्ट परिचय देती है। इन कृतियों में आपने अपने लोकव्यापी चिंतन को जिस समग्रता से प्रस्तुत किया है उससे आपके व्यक्तित्व की विशालता का अनुभव पाठकों को स्वयं होने लगता है।

अज्जसंक्किटी में आप कहते हैं कि'

सव्वस्स होज्ज दिग्पाउ, सव्व-पावाण णासणं।

सव्वत्थ फुडिदो पेम्मो, वेरं दुक्खं कया वि णो॥

अर्थात् सभी दीर्घायु हों। सबके पापों का नाश हो। सर्वत्र प्रेम का विस्तार हो। बैर, दु:ख कभी भी न हो।

आपके इस चिंतन में जैन धर्म की समष्टि हित की भावना सहज ही साकार हो उठती है। इसी प्रकार आपने रट्ठ संति महाजग्गो में भी भावना व्यक्त की है कि-

देंस गामे हु धग्मीणं, रट्ठे राया पजा जणा।

जिण धम्मेण सण्णाणिं, हिदत्थं वंदएज्जमि॥

होदि संती कुले रज्जे, णरेसु च वि जंतुसु।

तवस्सी-संजमी चावि, तहा पावी य सज्जणा॥

अर्थात् मैं स्वसंवेदनात्मक ज्ञान सहित जिन धर्म से राष्ट्र में, देश में, गांव में साधर्मियों व राजा-प्रजाजनों के लिए हित की वांछा करता हूँ। कुल व राज्य में शांति हो, मनुष्य, प्राणी, तपस्वी, संयमी, पापी अथवा सज्जनों को सभी को शांति होवे।

आचार्य श्री के इन उद्गारों से यह भलीभाँति स्पष्ट है कि उन्होंने जैन धर्म की सर्वोदयी भावना को आत्मसात् कर लिया है। उनका हृदय सभी संकीर्णताओं से मुक्त होकर विश्व कल्याण की उदात्त भावना से आप्लावित

हो रहा है। रयण कंडो में आचार्य श्री कहते हैं कि-सग-देसम्म य उण्णदीए समणो समिगो य सच्चजुदो होदव्व। अर्थात् स्वयं और देश की उन्नति के लिये श्रमण और श्रमिक को सत्य युक्त होना चाहिए। श्रमण के सत्य धर्म के पालन का उद्देश्य स्वयं की आत्मोन्नति के साथ-साथ देश की उन्नति भी है-ऐसा चिंतन कोई राष्ट्र संत ही कर सकता है।

वर्तमान युग में जहाँ असहिष्णुता, हिंसा एवं आतंकवाद निरन्तर बढ़ता जा रहा है वहीं आचार्य श्री एक राष्ट्रसंत के रूप में 'णंदिणंद सुत्तं' में उद्घोष करते हैं कि-

किदं पडिकदं कज्जं, हिंस पीडं ण हिंसगो।

सव्वेसिं हिद कादव्वं, दुट्ठो दुट्ठस्सणो हवे॥

अर्थात् सुकार्य के प्रति सुकार्य करना चाहिए अथवा उपकार का बदला उपकार से चुकाना चाहिए किंतु हिंसा के प्रति हिंसक नहीं बनना चाहिए, सबका हित करना चाहिए। दुष्ट के साथ दुष्ट नहीं होना चाहिए।

आचार्य श्री की कृतियों में ऐसे ही अमृत विचार सर्वत्र दृष्टि गोचर होते हैं। इन विचारों से जहाँ एक ओर आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज जैन धर्म को विश्व धर्म के रूप में स्थापित करने का सफल प्रयास करते हुए दिखाई देते हैं वहीं दूसरी ओर वे राष्ट्रसंत की परम्परा का सफल निर्वहन करते हुए भी दिखते हैं।

आचार्य श्री की यह एक दुर्लभ-तम विशेषता है कि उनके कृतित्व और व्यक्तित्व में अद्भूत समन्वय है। जितनी समग्रता और उदारता उनकी कृतियों में दृष्टिगोचर होती है उतनी ही परिपूर्णता उनके व्यक्तित्व में भी दिखलाई पड़ती है। उनके व्यक्तित्व का सिंचन जिन कठोर अनुभवों से हुआ है उन अनुभवों ने उन्हें जीवन का वह यथार्थ दिखला दिया है जो सभी के लिये सुलभ नहीं होता है। कठोर अनुभवों की कठिन यात्रा ने आचार्य श्री के जीवन को कुन्दन बना दिया है।

उनके व्यक्तित्व में ऐसी अनेक विलक्षण विशेषताएं है जो उन्हें एक राष्ट्रसंत के रूप में स्थापित करती हैं। वे अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी होकर भी

विद्या कें अंहकार से शून्य हैं। हर भाषा और विषय में पारङ्गत होकर भी सतत अध्यवसायी हैं। आपके निर्दोष और निश्छल हृदय से सभी भव्य प्राणियों के प्रति स्नेह और वात्सल्य निर्झरित होता रहता है। अत्यन्त सरल होकर भी कुशलता पूर्वक संघ को अनुशासित रखते हैं। आपकी सरलता, सहजता एवं प्रतिभा का संप्रसारण आपके संघ में भी दिखाई देता है।

आपने श्रमणाचार की जिस पराकाष्ठा को प्राप्त किया है एवं मानवीय मूल्यों से ओतप्रोत जिन विचारों का प्रवाह आम जन में प्रवाहित किया है वह निश्चित ही श्लाघनीय है। आपके महान व्यक्तित्व के प्रभाव से आपका सान्निध्य प्राप्त करने वाले भव्य जीवों का कल्याण तो निश्चित रूप से होगा ही साथ ही आपके मार्गदर्शन एवं विचारों से समाज और राष्ट्र की समुन्नति भी अवश्य होगी। इसी पुनीत भावना के साथ आपके चरणों में श्रद्धावनत हृदय से कोटिशः नमन करता हूँ।

डॉ. पंकज जैन
जैन दर्शन विभाग, राष्ट्रीय संस्थान
(मानित विश्वविद्यालय) भोपाल, म.प्र.

पिच्छी और कमण्डल लेकर,
मोक्षमार्ग पर चलते हो।
चौबीस घंटे में आहार करते,
केशलोंच को करते हो।
प्रतिक्रमण व स्तुति करके,
समता उर में धरते हो।
वसुनन्दी है अमर तत्व से,
निडर सजग से चलते हो।।

–साभार 'स्वर्णोदय'

तहाँ धम्मो जहाँ तरू
(जहाँ वृक्ष हैं वहाँ धर्म है)

आज मानव जाति प्राकृतिक आपदाओं से त्रस्त है। केदारनाथ व सुनामी जैसी भीषण आपदाओं ने मानव जाति के अस्तित्व को ही शंका में डाल दिया है। समस्त वसुन्धरावासी त्राहीमाम् त्राहीमाम् कर रहे हैं। आज मानव समाज अपने अस्तित्व के संरक्षण के लिए प्रयासरत हो गया है। भारत सरकार भी पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्द्धन पर अत्यधिक ध्यान दे रही है।

जैन धर्म प्राकृतिक धर्म है। विश्व के समस्त धर्मों में जैन धर्म प्रकृति के सबसे अधिक निकट है। यह कथन अतिशयोक्ति नहीं होगा। जैनाचार्यों ने आदिकाल से ही अपने उपदेशों में पर्यावरण संरक्षण को अत्यधिक महत्व दिया है। दिगम्बर आचार्य श्री उग्रदित्य स्वामी ने तो अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ कल्याणकारकम् में जल की महत्ता को वर्णित व प्रदर्शित करने के उद्देश्य से एक स्वतन्त्र अध्याय को लिखा है। आचार्य श्री ने जल के सात प्रकारों का वर्णन अपने ग्रन्थ में किया है। ग्रन्थकार के अनुसार झरने का जल सर्वोत्कृष्ट होता है, द्वितीय स्तर पर सरोवर का जल, फिर बहती हुई नदी का जल, फिर वर्षा का। इस प्रकार आचार्य उग्रदित्य स्वामी ने जल के विभिन्न प्रकारों व उपयोग का वर्णन अपने ग्रन्थ में किया है।

जैनाचार्यों की प्राचीन परम्परा को वर्तमान आचार्यों ने संवर्द्धित कर अपने मौलिक विचारों को भी सम्मानित किया है। आचार्य प्रवर वसुनंदी जी महाराज इन्हीं आचार्यों में कनिष्का अंगुली पर अपना स्थान रखते है।

आचार्य श्री का ज्ञान अत्यन्त विशाल है। जीव मात्र के प्रति करुणा, दया एवं उपकार का भाव आपकी साधना में साक्षात् परिलक्षित होता है। आत्म कल्याण की साधना में रत् आचार्य श्री राष्ट्र व समाज के कल्याण के निमित्त किसे अपने मौलिक चिंतन को अपने उपदेशों में समावेशित करते रहते है। आचार्य श्री ने आदर्श राष्ट्र की स्थापना कैसे हो, राजा किस प्रकार का होना चाहिए एक आदर्श मंत्री में कौन-कौन से गुण होने चाहिए, आदर्श प्रजा को किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए ताकि राष्ट्र

में सुख व शांति स्थायी रूप से वास कर सके आदि विषयों पर अपने बहुमूल्य एवं उपयोगी विचारों को अपने उपदेशों के माध्यम से प्रगट किया है।

आचार्य श्री ने पर्यावरण संरक्षण को अपने उपदेशों में प्रमुख स्थान दिया है। पर्यावरण संरक्षण के द्वारा ही हम मानव समाज को संरक्षित कर सकते है। एक दृष्टान्त के माध्यम से आचार्य श्री जल के महत्व को समझाते है।

''एक सेठ के घर में नई बहु आयी, उसके हाथ से पानी का मटका छूट गया। सेठ जी ने उसे खूब डाँटा वह रोती हुई चली गयी। संयोगवशात, अगले दिन सेठानी के हाथ से घी का मटका फूट गया। सेठ जी बोले देखकर चला करो। यह सब बहु भी देख रही थी। उसे बहुत बुरा लगा। वह सेठ जी के पास पहुँची और बोली, ''पिता जी क्षमा करना, यदि आज्ञा हो तो कुछ कहूँ।'' सेठ जी तो चाह ही रहे थे उन्होंने कहा बेटा निःसंकोच पूछो। वह बोली, ''पिता जी, कल मेरे हाथ से पानी का मटका फूटा तो आपने मुझे बहुत डाँटा और माँ के हाथ से घी का मटका फूटा तब भी आपने उन्हें कुछ नहीं कहा। मेरा मटका तो 5-10 रु. का था जबकि उनके मटके की कीमत 5 हजार होगी।'' सेठ जी बोले, बेटा! मैं भी आपको समझाना चाह रहा था। बात 5 रु. या 5 हजार रु. की नहीं है। घर में किसी चीज की कमी नहीं है। जब कल तुम मटका लेकर आयी और वह गिरा तो तुम्हारे चहरे पर शिकन तक नहीं थी ऐसा लगा जैसे कुछ हुआ ही नहीं। मैं बताना चाहता हूँ बेटा कि जल भी बहुत कीमती है। जिस तरह से घी के मटके की सुरक्षा करते हैं वैसे ही जल की भी करो। जल जीवन है हमारे पास तो जल है किन्तु जहाँ जल की कमी है उन लोगों से जाकर पूछो। बहु को पिता जी की बात समझ में आयी और वह चरण छूकर बोली पिताजी आपके द्वारा दी गई इस शिक्षा को मैं सदैव याद रखूँगी।

बहु समझदार थी अतः उसने तुरन्त शिक्षा को व जल के महत्व को आत्मसात् किया किन्तु क्या हम भी समझदार है?

आचार्य श्री प्राय अपने प्रवचनों में आचार्य भगवन् देवसेन स्वामी के 'भाव संग्रह' की निम्न पंक्तियों को जल के महत्व को निरुपित करने के

लिए उद्धत करते है

खीरं घिव्यं जहा रक्खे, तहा रक्खेज्ज अंबु हू।

अंबु हु जीवणं मण्णे, णट्ठे जीवा वि णट्ठ हि।

"As milk and ghee are protected in the same way water should be preserved because water is life. If water is destroyed life destroyed."

आचार्य श्री वसुनंदी जी कहते है कि जल के बिना जीवन की कल्पना करना उसी प्रकार है जैसे आकाश में पुष्पों का खिलना। अतः जिस प्रकार मानव घी, दूध की रक्षा करता है उसी प्रकार जल की रक्षा की जानी चाहिए। कई नलों से पानी टपकता रहता है। लोग देखकर भी निकल जाते है परन्तु सौ में से कोई एक सड़क पर लगे उस नल को बंद करता है। जल के प्रति रखी गई असावधानी आपको स्वयं को भुगतनी पड़ेगी। आज कई लोग जल की समस्या से जूझ रहे हैं। यदि आज इस पर ध्यान नहीं दिया गया, जल की सुरक्षा नहीं की गई तो भविष्य संकट में होगा। जैन धर्म में आवश्यकता के अनुसार जल का प्रयोग करने का मूल उद्देश्य जल का सरंक्षण ही रहा होगा। क्योंकि जल के नष्ट होने पर जीवन की संभावना भी नहीं रहती।

आचार्य श्री प्रायः अपने उपदेशों में वृक्षों की उपयोगिता के विषय में भी चर्चा करते हैं। आचार्य श्री कहा करते है। कि आज प्रदूषण हटाओं या स्वच्छता का अभियान जोर-शोर से चल रहा है तो इसके लिए सर्वप्रथम आवश्यकता है वृक्षों के सरंक्षण व संवर्द्धन की। वृक्षों से बड़ा परोपकारी वसुन्धरा पर कोई नहीं है। धरती से किंचित पोषण व स्थान लेकर धरती को फलो, फूलों से लाद देते हैं। धरती को सूर्य के तीष्ण किरणों से तप्त नहीं होने देते। इतना ही नहीं धरती की जहरीली गैसों को अवशोषित कर समस्त वसुन्धरा को प्राण वायु से पूरित कर देते है। इस पर वृक्ष समस्त जीवों का उपकार करते हैं। आचार्य भगवन् श्री उमास्वामी मुनिराज ने एक वैज्ञानिक सूझ से जीव का लक्षण निरूपित करते हुए कहा है -

''परस्परोपग्रहो जीवानाम्''

एक-दूसरे पर उपकार करने वाला ही जीव है। अतः वृक्षों से महान

जीव कौन हो सकता है? हमें चाहिए कि हम अधिक से अधिक संख्या में वृक्षारोपण करें। आचार्य श्री प्रेरणा देते है कि हमें विभिन्न अवसरों जैसे जन्मोत्सव, सालगिरह, त्यौहारों आदि पर एक वृक्ष अवश्य लगाना चाहिए। स्थान का अभाव हो तो घरों पर ही गमले लगा सकते है। साथ ही हमें रोपित वृक्षों का पालन भी करना चाहिए। अगर हम वृक्ष को लगाकर बाद में देखभाल नहीं करते है तो वह सूख सकता है जिससे हमें जीव हिंसा का भी पाप लगता है। अतः 'रोपण के साथ पोषण' को भी अवश्य अपनाना चाहिए।

आचार्य श्री कहते हैं कि अधिक वृक्षारोपण के माध्यम से बढ़ते हुए प्रदूषण को भी रोका जा सकता है। वृक्षों से माध्यम से वृष्टि भी समय पर होती है। जिससे फसल उत्पादन भी अच्छा रहता है। यदि वृक्ष पर्याप्त मात्रा में हो तो जल की समस्या भी खड़ी नहीं होगी। वृक्ष की जड़े अंदर मिट्टी को बांधे रखती हैं जिससे बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोप भी थम जाते हैं। वृक्ष धूप की तपन और भूमि में वपन सहते हैं और बदले में शीतल छाया और मिष्ट फल प्रदान करते है।

वृक्ष मानव जीवन के लिए बहुत उपकारी है। अतः उनकी सदैव रक्षा करनी चाहिए। राष्ट्र में सुख-शांति की स्थापना भी तभी हो सकती है जब प्रकृति साथ हो वरना प्रकृति का प्रकोप सब कुछ तहस-नहस कर देता है। अतः वृक्षों की रक्षा करें। वृक्षों का संवर्द्धन व संरक्षण करें। वृक्षों के अभाव में सुख पूर्वक जीवन संभव नहीं है।

रुक्खेण णो विणा सक्कं, सुही णरस्स जीवणं।
तम्हा दक्खेज्ज सक्खाणं, तहा धम्मो जहा तरू।।

(It is not possible to live happily without trees, so trees must be saves. Whare there are trees, those is religion.

डॉ. अमित जैन
असि. प्रो. हिन्दी विभाग
दिगम्बर जैन कॉलिज
बड़ौत (बागपत) उ. प्र.

मेरी दृष्टि में आचार्य वसुनन्दी

जैनसंस्कृति का निर्वाह दो पहलुओं से होता है प्रथम श्रावक तथा द्वितीय श्रमण धर्म। श्रावकों के आचार को समीचीन बनाने के लिए श्रमणवर्ग की समाज में अत्यन्त आवश्यकता है। उन श्रमणों में जो समीचीन चारित्र के धनी हैं तथा जो अपने शिष्य वर्ग को समीचीन चारित्र में चलने के लिए निरन्तर उपदेशित तथा निर्देशित करते रहते हैं ऐसे आचार्य समाज के परम उपकारी हैं।

वर्तमान शहरी जीवन में साधुओं में एकल विहार की प्रवृत्ति अधिकता से देखी जा रही हैं। साथ ही वर्तमान की चकाचौंध में आधुनिक वस्तु के प्रति आकर्षण साधुता की वीतरागता को तार-तार कर रहा है। ज्ञान में हीनता तथा स्वाध्याय की प्रवृति का स्थान तंत्र-मंत्र की साधना ने ले लिया है। समाज के श्रावक वर्ग को गुमराह करने के लिए भरसक प्रयास किये जा रहे हैं। समाज को पंथवाद में विभक्त करने का पूर्ण प्रयास किया जा रहा है। ऐसी साधु वृत्ति से भिन्न तथा निराले, शिथिलावादी साधुओं के लिए सबक रूप में आचार्य वसुनंदि मुनिराज की चर्या अकल्पनीय है। शिथिलाचारी साधुओं के लिए एक आदर्श आचार्य वसुनन्दि जी मुनिराज को गिना जा सकता है।

स्वाध्याय के अभाव में साधुओं तथा श्रावकों का जीवन आधुकनिकता की चकाचौंध में अत्यन्त व्यस्त हो चुका है। ऐसी स्थिति में हिताहित का विवेक शून्य हो चुका है। वहीं पूर्वाचार्यों के द्वारा रचित ग्रन्थों को समझने में विद्वानों की अल्पता हो गई है। ऐसी परिस्थिति में आचार्य वसुनंदी मुनिराज जी द्वारा प्राकृत भाषा तथा हिन्दी स्थानीय भाषा में साहित्य का सृजन अत्यन्त सरल शब्दों में करके समाज को साहित्य पढ़ने की प्रेरणा दी है। साथ ही विद्वान वर्ग के प्रति आचार्य श्री की उदारता विद्वानों के संरक्षण में महती भूमिका का निर्वाह कर रहा है। आचार्य श्री के प्राकृत भाषा के साहित्य इतने सरल हैं कि जो व्यक्ति देहाती भाषा को समझता है, वह प्राकृत भाषा को अवश्य समझ जाये।

साहित्य सृजन से अतिरिक्त आचार्य श्री की दृष्टि जीवन्त प्रतिमाओं के सृजन की ओर भी हैं जिससे अपने समान विद्वान तथा चर्या कुशल शिष्यों को तैयार करके समाज को आदर्श प्रस्तुत किया है। समाज के लिए उपयोगी मंदिरों, धर्मशालाओं तथा पाठशालाओं का निर्माण कराके समाज को दिशा निर्देश दिया है। आचार्य वसुनन्दि ने साहित्य सृजन तथा समाज में कुशल रत्न प्रदान करके पूर्व परम्परा को जीवन्त किया है।

आचार्य श्री की दृष्टि प्राकृतभाषा तथा जैनसिद्धांत के प्रचार-प्रसार के प्रति अधिक उपयोग सिद्ध हो रही है। उनके द्वारा भविष्य में प्राकृत की पाठशालाओं का संचालन, प्रतिष्ठित संस्थानों में प्राकृत भाषा को स्थान दिलाना, उच्चशिक्षा में प्राकृतभाषा को प्रचलित करना तथा समाज को प्राकृत भाषा के विषय में अवगत कराना उनकी दूरदर्शिता को परिलक्षित करता है।

डॉ. सतेन्द्र कुमार जैन
WZ-440 जैन मंदिर की गली
पालम रोड, नई दिल्ली

जिन मूरत को लखकर तुमने,
अपना वैराग्य बढ़ाया है।
स्वाध्याय में मन को लगाकर,
कदम से कदम मिलाया है।
स्तुति-निन्दा से दूर रहे तुम,
बस अपने में खो जाते हो।
जो भी देखता एक बार भी,
बस उनके ही हो जाते हो।।

–साभार 'स्वर्णोदय'

आचार्य श्री वसुनंदी जी कृत साहित्य : संस्कृति का अनुनाद

श्रमण संस्कृति के संवाहक, यशस्वी गुरु परम्परा संवर्द्धक अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज का सम्पूर्ण व्यक्तित्व एवं कृतित्व दिव्य जीवन का संदेश है और उनकी साहित्य साधना विशेषतः दिव्यता का आह्वान।

आचार्य श्री ने 250 से अधिक ग्रन्थों का प्रणयन किया है, बहुभाषाविद आचार्य श्री का समग्र साहित्य, धर्म, दर्शन, अध्यात्म और आत्मविज्ञान से समन्वित हैं, अस्य अल्प समय में विशाल सृजन चमत्कार से कम नहीं है। मधुमेह की दुःसाध्य व्याधि से ग्रस्त होने के अनन्तर भी निरंतर सृजन, साधना, विहार समस्त श्रमणचर्या का निर्दोष परिपालन सहज नहीं है, जीवन में कई बार आचार्य श्री के दर्शन का एवं प्रवचन श्रवण का सौभाग्य मिला, इनके संघ की विदुषी गणिनी आर्यिका गुरुनंदिनी जी ससंघ का हमारे नगर में अल्पकाली प्रवास भी रहा, जिनके माध्यम से शिष्याओं के अंतरंग में प्रतिष्ठित गुरु भक्ति को निर्झर की प्रणम्य स्वर लहरी निनादित होती हुई देखने को मिली और पूज्य ऐलक श्री विज्ञान सागर जी का हमारे नगर सहारनपुर में वर्षायोग एवं उनके धर्म साथी क्षु. श्री ज्ञानसागर जी महाराज की पिच्छी प्राप्त करने का सौभाग्य मिला, पूज्य ऐलक श्री जी का गुरु गुणानुराग उनके मुख से कई बार श्रवण किया है। उनके स्वर्णिम जयंती महोत्सव को ऐतिहासिक व उल्लेखनीय करने का संकल्प, तदनुरूप संकल्पना के प्रचार प्रसार सुवास का ही प्रभाव है कि हम आज उनको अक्षरांजलि अर्पित कर रहे हैं, मैंने पूज्य ऐलक श्री जी द्वारा रचित गुरु भक्ति प्रदर्शिक 50 कविताओं का संग्रह देखा, प्रश्नोत्तरी देखी सत्यतः एक सारस्वत गुरु के लिए एक सारस्वत शिष्य प्राप्त होना भी एक उपलब्धि से कम नहीं है।

आचार्य श्री की कृतियों का परायण किया एक कृति जो मुझे

श्रद्धाभिभूत कर रही है वह है ''रयणकंडों (प्राकृत सूक्ति कोश) आचार्य श्री प्राकृत ज्ञाता है, उनका प्राकृत पर पूर्णाधिकार है तभी उन्होंने दर्जन भर से अधिक कृतियाँ प्राकृत में लिखकर भाषा के भण्डार को समृद्ध किया, यह सूक्ति कोश संकलन नहीं है। इसकी विशेष विशेषता एवं विलक्षणता है कि आचार्य श्री ने इन 3333 सूक्तियों का मौलिक सृजन किया तथा हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित 552 पृष्ठों में इनको समाहित किया, 400 से अधिक विषय बिन्दु पर उनका चिंतन है।

सूक्तियों में अनुभवों एवं ग्रंथों का सार होता है, जो गहन, मनन, अध्ययन एवं मंथन से प्राप्त होता है। 45 सूक्तियाँ तो ज्योतिष सम्बन्धी भी हैं, धर्म, नीति, सरल, मानवीय मूल्य, गुण, अवगुण, विज्ञान, मनोविज्ञान एवं अध्ययन का विस्तार है, सूक्तियों की संरचना मनीषी विद्वान एवं स्वाध्याय प्रेमी ही किया करते हैं। एक-एक सूक्ति की रचना सागर में अवगाहन कर मोती निकालने सदृश है, कभी भी कोई भी सूक्ति किसी का कण्ठाहार बनकर जीवन को प्रकाशित कर देती है।

आचार्य श्री प्राकृत भाषा पर बहुत सुंदर सूक्ति दी है

2213 : ''कप्पलदा इव संस्किद भासा असोगरुमवोन य पागद''

(कल्पना के समान संस्कृत भाषा है और अशोक वृक्ष के समान प्राकृत) पृ. 354

हमें भाषाओं का ज्ञान क्यों करना चाहिए इस संदर्भ में कोश में लिखा है।

''पडुदा सच्च वादिदा य भासाए जाणदे

(पटुता और सत्य वादिता भाषा द्वारा जानी जाती है)

तथा

''बहुभाषाविदो सहाए आयरं लहदि॥ (पृ. 355)

(बहुभाषाविद सभा में आदर प्राप्त करता है, उनके तलस्पर्शी ज्ञान की द्योतक है ज्ञानी एवं चित्त सम्बन्धी कुछ सूक्ति

''णाण पवणेव चित्त वडीए विआर कल्लोलाणि आयदं णति''

(ज्ञान की पवन के द्वारा ही चित्त रूपी नदी में विचार रूपी लहरें

उत्पन्न होती हैं।)

''मूण कायं दुण्डंति कसायं च बाबी''

(मूर्ख काय को दण्डित करते हैं और ज्ञानी कषाय को)

इस प्रकार अ से ह तक शब्द कोष की भांति सृजित ये सूक्तियाँ विषयों की महत्ता, चिंतन की सूक्ष्मता, अनुभव प्रवणता का दर्पण है, प्राकृत की प्रकृति के अनुरूप जन सामान्य के मनो मस्तिष्क को झंकृत करने वाली सम्पूर्ण आगम नवनीत को प्रस्तुत करने वाली है, अर्थ की गहराई तक पहुँचाने वाली है, शब्द चयन एवं वाङमय ज्ञान विशेषज्ञ होने से आचार्य श्री ने उपमा एवं रूपक अलंकारों से इन्हें अलंकृत कर मोहक बनाया है कृति में सर्वत्र आपके विस्तृत विराट नभ स्पर्शी छवि का प्रस्फुटीकरण हुआ है।

तपोज्जवल व्यक्तित्व की परिचायिका इस कृति का अमृत तत्त्व संजीवनी है जीवन के कायाकल्प के लिए चिन्तन के परिष्कार के लिए है, इसमें मुनष्य को सत्यानुगामी बनाने का भाव है और यह भाव कायिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक रूप से समर्थ परिपक्व व्यक्तित्व में ही होता है। यह भाव वाणी या लेखनी का विलास नहीं होता अपितु वह ''पारस'' होता है जिसके द्वारा विश्व प्रेम की भावना बलवती होती है तथा कुण्ठाएं, दुराग्रह, पूर्वाग्रह, ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य कलह आदि की कुभावनाएं सुवर्णमयी बन जाती है, बाधक वृत्तियों का त्याग तथा साधक वृत्तियों की साधना के सूक्तियाँ सदा सहायक रही हैं।

आचार्य श्री के 50वीं स्वर्ण जयंती महोत्सव सदा सर्वदा धर्मानुरागियों को एवं सम्पूर्ण विश्व को ज्ञान प्रकाश देगा, दिशा देगा, मन को स्थिर कर सन्मार्गोन्मुख करेगा, हम उनका स्तवन, वन्दन, अभिनन्दन करते हैं उनका रत्नत्रय कुशल रहे हैं वे चिरकाल तक श्रमण परम्परा को गौरवान्वित करते रहें।

डॉ. नीलम जैन
एच-210 डैफोडिल्स
मगरपट्टा सिटी, पुणे (महा.)

आचरण की पूज्यता से ही चरणों की पूज्यता है।

मंगल भगवान वीरो, मंगल गौतमो गणी,
मंगल कुन्द कुन्दाद्यो जैन धर्मोस्तु मंगलं॥

'मंगल कुन्दकुन्दाद्यौ आचार्य विद्यानंद जी आचार्य विद्यासागर जी और इसी परम्परा में आचार्य वसुनंदी जी ''जैन धर्मोस्तु मंगलं'' का जयघोष करते, मंगल परम्परा को विस्तार देते, अनेकानेक ग्रंन्थों की रचना करते, निर्मल निश्छल मन से, सहज भाव से, जैन आम्नाय की श्री वृद्धि करते हमारे मध्य विराजमान है। वर्तमान शताब्दी को यह गौरव मिला है कि निर्ग्रन्थ श्रमण साधुओं का पावन सान्निध्य उसे प्राप्त हुआ है।

आचार्य विद्यानंद जी के विषय एवं पथानुगामी आचार्य वसुनंदी जी के विषय में लिखना और लघु लेख में बांधना कदाचित कठिन प्रतीत हो रहा है। क्योंकि वो पुण्यात्मा जो किशोर अवस्था में किसी युवा की मृत्यु को देख आदिनाथ भगवान के समान सारा परिग्रह त्याग करने की धारणा कर ले और छहढाला की पंक्तियां

''दौलत समझ सुन चेत सयाने, काल वृथा मत खोवे।''

यह नर भव फिर मिलन कठिन है, जो सम्यक नहीं होवे॥ सुनकर ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर लें, युवावस्था मे ही क्षुल्लक बन जाए और अपने हृदय में विराजे आचार्य विद्यानंद जी के वरद् आशीर्वाद से आचार्य पद को पा जाए, उनके लिए शब्दों का बंधन और विशेषों का प्रयोग मात्र प्रयोग ही होगा। यदि कही त्रुटि रहेगी तो सुधि पाठक क्षमा अवश्य कर देगें इसी भावना के साथ लिखने का साहस संजोया है।

बाल ब्रह्मचारी दिनेश भैया जी छोटी उम्र से ही ज्ञान पिपासु रहे और आत्मा के कल्याण की ओर उनकी प्रवृत्ति आचार्य वसुनंदी के रूप में उनकी परिणति होना है। प्राकृत भाषा में अनेकों कृतियों के लेखक

आचार्य श्री द्वारा रचित ''रयणकंडो'' जो प्राकृत सूक्ति कोष है और उनकी शिष्या आर्यिका वर्धस्वनंदिनी माता जी ने हिंदी भाषा के साथ अंग्रेजी में भी सौन्दर्य के साथ अनूदित है, उनकी देव शास्त्र और गुरु भक्ति की परिचायिका है। साथ ही युगों युगों तक ज्ञान रंजन भव्य जनों का मार्ग प्रशस्त करती रहेगी। यूं तो सुक्ति कोष इतना विशाल और सारगर्भित है कि कितनी भी बार पढ़ा जाए हर बार हर सूक्ति अपना अलग प्रभाव छोड़ती है किंतु सूक्तियां जो कदाचित मेरे मन मस्तिष्क को मथने लगी है सुधि विज्ञजनों के साथ सांझा कर रही हूँ।

(''कृतज्ञ'' शीर्षक के अंर्तगत'')

''कियण्हुदा सज्ज्णेसु चिट्ठदि जहा खीरे सप्पी'' अर्थात् कृतज्ञता सज्जनों में रहती है जैसे दूध में घी।

(''कृपण शीर्षक के अंतर्गत)

''किवणस्स धणं कया विणो सेमंगरं'' अर्थात् कृपण के हाथ में धन की दुर्गति होती है, जैसे कीचड़ में जल।

सर्वथा नवीन सोच को जन्म देती और अपने आप में पूर्ण उपरोक्त सूक्तियाँ हमारी धरोहरों में दर्ज होगी। आचार्य श्री का यह साहित्य जैनेत्तर समाजों में भी प्रसारित हो तो जैन आचार्यों की वर्तमान नवीन देन सर्वत्र व्याख्यायित तो ही ज्ञान सागर वसुनंदी जी की स्वत: प्रस्फुटित सूक्तियों के माध्यम से नई विचार धारा भी जन्म लेगी।

ऐलक विज्ञान सागर जी का मुझ से चर्चा करना मेरे लिए सौभाग्यवर्धक रहा अन्यथा आचार्य श्री वसुनंदी जी के साहित्य संसार से शायद मेरा परिचय इतना शीघ्र नहीं हो पाता। ऐसे विरले साधु जिनकी पिच्छि की परिवर्तन होने पर जिन्होंने पिच्छिका ली उनमें से कितने ही आत्म कल्याण के पथ पर चल पड़े और कितने ही स्वयं को परिमार्जिन कर रहे हैं यह आश्चर्य का विषय है। ऐलक श्री विज्ञान सागर जी, गणिनी आर्यिका विज्ञा श्री जी, आर्यिका सौम्यनंदिनी जी, मुनि जी संकल्प भूषण जी, मुनि श्री विश्ववीर सागर जी आर्यिका श्री नंदिनी जी, आर्यिका यशोनंदिनी, मुनि

शिवानंद जी उनकी मयूर पंखी पिच्छिका के स्पर्श मात्र से कल्याण पथ पर अग्रसर हुए है पर आचार्य श्री के तेज का प्रताप ही है। साधना के कठिन पथ को आचार्य श्री ने सहज ही सुलभ और समतापूर्ण बना दिया है। जो निश्चय नय के धारकों के लिए निश्चित ही सरल हो चला है। वे कहते हैं और कहने के साथ व्यवहार में भी लाते है।

''मैं'' किसी से बेहतर करूँ क्या फर्क पड़ता है।

''मैं'' किसी का बेहतर करूँ बहुत फर्क पड़ता है।।''

आचार्य श्री के प्रवचन उनकी लेखनी आपको सकारात्मक सोच की ओर अग्रसर करती है और विचार शक्ति को प्रबल करती है। मैं अपनी भावाञ्जलि अर्पित करते हुए आचार्य श्री के प्रवचन से इस लेख को समाप्त कर रही हूँ और अगले लेख की भूमिका भी तैयार कर रही हूँ।

''आचरण की पूज्यता से ही चरणों की पूज्यता है। जिनका आचरण ही पूज्य नहीं है, उसके चरण कौन पूजेगा। जो अपने चरणों को पुजवाता है किंतु आचरण से रिक्त है, ऐसा व्यक्ति आत्मघाती है, छली है, कपटी है प्रपंचक है। वह स्वयं तो भवसागर में पतित होगा ही है, साथ ही अपने पूजकों व प्रशंसकों को भी पतित कर देगा, निर्दोष आचरण करने वाले महापुरुषों के चरणों की शरण को प्राप्त कर लेना सदाचरण की ओर बढ़ाया गया एक कदम ही है जो आपको कभी लोक शिखर सिद्धालय तक भी पहुँचा देगा।

ओम् नमः

डॉ. प्रभाकिरण जैन (साहित्यकार)
पन्ना भवन, 2/1 अंसारी रोड़
नई दिल्ली-110002

युगपुरुष आचार्य वसुनंदी जी महाराज

युगदृष्टा, युग सृष्टा, वैराग्य, अध्यात्म व ज्ञान की त्रिवेणी विश्व वंदनीय गुरुवर श्रमण संस्कृति का वह दैदीप्यमान नक्षत्र है, जिसकी आभा से जैन जगत अलौकित अभासित है। दिगम्बर अर्थात दिशा ही जिसके वस्त्र हैं, अर्थात् जीवन को प्राकृतिक रूप से तादाम्य करने वाले दिगम्बर मुनि की साकार प्रतिमा हैं पूज्यवर आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज।

कोमल काया, कठोर तपश्चर्या-चेतना की ज्योर्तिमयशाला। नेत्रों में प्राणीमात्र के लिए वात्सल्य, वाणी में वीणा की झंकार व्यक्तित्व में सम्मोहन सदैव साधना में लीन है। समाजोत्थान में समर्पित, संकल्पित गुरुवर का सांसारिक नाम दिनेश कुमार है। असोज वदी अमावस्या की पूर्णिमा की रात आभा से आलोकित हो उठी जब ग्राम विरौंधा (धौलपुर) की धरा पर जब इस दिव्य बालक का जन्म हुआ। पिता रिखबचन्द्र माता त्रिवेणी देवी की कुक्षि धन्य हो गई। पुत्र के पैर पालने में दिखते हैं। जब 12 वर्ष की अल्पायु में कालजयी कृति छहढाला को पढ़कर सन्यास पथ पर चलने का मन बना लिया था। हिमालय को क्या कोई हिला पाया, तूफान को कौन रोक पाया। मात्र 16 वर्ष की अवस्था में ब्रह्मचर्य धारण किया। माता रोती है, मैं किसका मनुहार करूँगी, पिता कहे किसका दुलार करूँगा, बहना कहें किसको राखी बाधूँगी, पर सन्यास ज्वारभाटा नहीं रुका। आचार्य विद्यानंद जी महाराज से उपाध्याय, एलाचार्य पद ग्रहण किया। संन्यास पथ पर कदम इतनी तीव्र गति से बढ़े की मात्र 48 वर्ष की अवस्था में आचार्य पद को अलंकृत कर जग को धन्य किया।

गंगा गोमुख से निकलकर, भूखों को भोजन, प्यासों को पानी, पतितों को पावन बनाती सागर में विलीन हो जाती है। उसी प्रकार गुरुदेव ने अपने चातुर्मास भिण्ड, श्रेयांसगिरि, दमोह, गढ़ाकोटा, ललितपुर, मेरठ, दिल्ली, तिजारा आदि स्थानों पर अभूतपूर्व धर्म प्रभावना हुई। श्रावकों ने सन्मार्ग पर बढ़कर अपना जीवन धन्य किया। पूज्यवर के करकमलों से 250 से भी अधिक ग्रंथों का सम्पादन हो चुका है। उनकी वीथिका से निसृत प्राकृत

कोश, राष्ट्र शांति महायज्ञ, आर्य संस्कृति, तत्व विचार सारो, णमोकार महत्वं, अन्ते समाही मरण विज्जा वस्तु साव गायारो जैसे अनेक ग्रन्थों की रचना प्राकृत भाषा में करके 'गागर में सागर' की युक्ति चरितार्थ की। गुरुदेव की लेखनी व जीवन प्राकृत भाषा के उत्थान के लिए समर्पित है। आँखों में करुणा, दिल में ममता जलधार उनके प्रवचनों में सतत प्रवाहमान होती श्रावक गुरुदेव के प्रवचनों को मीठे प्रवचन भक्तजन कहते हैं।

आचार्य श्री की प्रेरणा व आशीर्वाद से गाजियादबाद के निकट मंडोला ग्राम में नर को नारायण, बनाने की भावना से जय शांति निकेतन क्षेत्र का निर्माण है, जिसका निर्देशन, मार्गदर्शन कर्मठ, कर्मयोगी, जीवन साधना की सरगम, श्रमण संस्कृति में संगीत, वैराग्य व ज्ञान से मिश्रण के पथ पर अविरल बढ़ रहे हैं। उनके बहुआयामी व्यक्तित्व की भाषा की सीमा में बाँध पाना कलम से वर्णन संभव नहीं है। संत वर्तमान में जीता है, वह समय को अपनी साधना का केन्द्र बनाकर संयम को मुट्ठी से नहीं खिसकने देता है। गुरुवर जहाँ कठोर आत्मसाधक है वही हृदय में संवेदनशीलता और भावुकता से सम्पूरित है स्व और पर कल्याण में अहर्निश लगे आचार्यश्री सर्वहारा मानव के लिए वरदान है, उपहार है। ऐसे आचार्य श्री युग-युग तक जयवंत हों।

डॉ. रूबी जैन

68, मिशन कम्पाउण्ड,

सहारनपुर (उ.प्र.)

आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज

मानव जीवन अमूल्य है। इस जीवन की उपयोगिता को एक महान साधक, योगी, तपस्वी ही समझ सकता है। आज पाश्चात्य चकाचौंध से युक्त इस वैश्वीकरण के युग में आधुनिक युवा पीढ़ी को सही मार्ग निर्देशन की आवश्यकता है। बचपन में माँ, बच्चों को संस्कारित करते हैं और इसके बाद गुरु। आज के इस युग में माता-पिता यदि स्वयं संस्कारों से परिपूर्ण धर्माचरण करने वाले हों तो बच्चों को सही दिशा मिल जाती है। अन्यथा बदलती जीवन शैली और बदलते परिवेश में बच्चे को सही दिशा मिल जाए, सौभाग्य की बात है।

आचार्य श्री वसुनंदीजी महाराज द्वारा रचित साहित्य में चाहे वह प्रवचनों का संकलन के रूप में हो या विधान आदि के रूप में उन्होंने सदैव मानव मात्र के कल्याण की भावना से अपने शब्द सुमन माँ जिनवाणी को समर्पित किये हैं। उनके अनुसार रत्नत्रय के बिना जीवन में सफलता की प्राप्ति संभव नहीं और जो शाश्वत सुख है वह कर्मों की निर्जरा के बिना असंभव है। रत्नत्रय से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। आचार्य श्री ने अपने प्रवचनों में सत्संग की महिमा, अच्छे विद्यार्थी के आवश्यक गुण, जीवन में दान की महत्ता, दुखियों के प्रति करुणा भाव आदि की विवेचना अनेक उद्धरणों के द्वारा की है। अपने भावों की अभिव्यक्ति में अनेक महापुरुषों के विचार तथा जैनाचार्यों के कथन को उद्धृत करते हुए सांसारिक प्राणियों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित किया है। ऐसे परम पूज्य गुरुवर के चरणों में कोटिश नमन।

डॉ. सरोज जैन

प्राध्यापक हिंदी शास्त्र,

कन्या महाविद्यालय, बीना, सागर (म.प्र.)

श्रमण संस्कृति उन्नायक : आचार्यश्री

साधना के पथ पर अविराम गति से अपना मदन्यास करने वाले सन्तों का अभिनन्दन करना उनके प्रति अपनी आस्था का एक प्रकर्ष रूप है। परम पूज्य आचार्य श्री के 50वें अवतरण महोत्सव में इस अभिनन्दन के साथ मेरा भी स्तवन अभिनन्दन है। पूज्य आचार्य श्री के पावन कृतित्व और व्यक्तित्व की विराटता को मैंने उनकी कृतियों व पूज्य आगम वेत्ता ऐलक श्री विज्ञानसागर जी महाराज द्वारा सृजित प्रश्नोत्तरी से ही जाना। ऐसे तपस्वी मनस्वी विद्वान संतों का आविर्भाव समाज के लिए ही नहीं राष्ट्र के लिए सौभाग्य सूचक है।

आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज की शब्द साधना आगम में अवगाहन की परिचायक है। वे अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी है उन्होंने अपने चिन्तन एवं मौलिक प्रतिभा को ज्ञान तन्तुओं की तुलनात्मक लय में बांधकर शब्दबद्ध किया है। ''णाणं पसायणं'' ज्ञान तो प्रकाशक है जैसे देहरी का दीप अन्दर बाहर प्रकाशित करता है उसी प्रकार ज्ञान दर्शन चारित्र प्रकाशक है। ज्ञानगर्भित वैराग्य और साधना ही आचार्य श्री के सदृश श्रुत साधक व आराधक बनाती है। आचार्य श्री का प्राकृत साहित्य, काव्य शिल्प और प्रवचन, बहुज्ञान विज्ञता उनके अथक अद्‌भुत पुरुषार्थ व प्रज्ञा का अमृतफल है।

आचार्यश्री की जीवन्त कृतियों के रूप में प्रणम्य शिष्यवृंद उनके गुरुत्व और गुणत्व को वृद्धिगत करता है। अनेक शिष्यवृंद अपने सच्चरित्र संयम साधना से धर्म प्रभावना कर रहे हैं। वही पू. ऐलक विज्ञानसागर जी जैसे वर्तमान पीढ़ी को सूत्रात्मकता रूप से साहित्य संरचना कर धर्मप्रभावना कर रहे हैं। ''वे कौन थे'' ग्रन्थों के रचयिता आदि ऐसी अनेक कृतियों से तो मैंने अपनी भी ज्ञानवृद्धि की और उन पर आधृत धर्म प्रतियोगिताएं बनाकर धर्म चेतना प्रसारित की। पूज्य ऐलक श्री जी के गृहस्थ जीवन के कई बन्धु बान्धव हमारे पास ही रहते हैं और हमारे चैत्यालय में आते हैं। उनके द्वारा भी हमें उनके बाल्यकाल के अनेक संस्मरणों ने प्रभावित

किया। पू. ऐलक श्री के आदेश को ही शिरोधार्य कर हमें पूज्य आचार्य प्रवर श्री वसुनंदी जी के 50वें स्वर्ण महोत्सव में भावांजलि समर्पण का सुअवसर प्राप्त हुआ। पू. आचार्य श्री के विराट व्यक्तित्व के प्रति ''अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी'' अभिनन्दन ग्रंथ का प्रकाशन या जिनवाणी की आराधना में दिव्य प्रेरणा प्रदीप समन्वित माँ भारती की आरती ही है। आपका पुनीत पावन चारित्र अनन्तकाल तक जीवनोत्थान का अमर संदेश देता रहेगा। आपकी यश सुरतभ सद्गुण एवं साधना जन जन के हृदय में श्रद्धा का विषय बनी रहेगी। आप दीर्घायु होकर इस जीव जगत को आत्मकल्याण की पावन प्रेरणा देते रहे, यही मंगलकामना है। श्रमण संस्कृति उन्नायक ऐसे आचार्य श्री के चरणों में हम इस शब्द पुष्पांजलि समर्पित करते हुए हम धन्य हैं।

डॉ. ममता जैन
ई. 801 डेफोडिल्स
मगरपट्टा सिटी पुणे (महा.)

जिस पत्थर ने चरण हुये है,
वो शंकर बन जाते हैं।
जिस जूल को छू लेते गुरूवर,
वो अमृत बन जाते हैं।
जहाँ से निकले मेरे गुरूवर,
वो राह स्वयं बन जाते हैं।
इनका वंदन करते-करते,
खुद के वन्दन हो जाते हैं।।

–साभार 'स्वर्णोदय'

नहिं कृत उपकारं साधावः विस्मरंति

परम पूज्य आचार्य वसुनंदी जी महाराज के पावन चरणों में सादर नमोस्तु। अंग्रेजी विद्वान कवि एच.डब्लू. लांगफेलो ने अपनी एक कविता 'साम ऑफ लाईफ' (Psalm of Life) में कहा है-

Lives of great men all remind us
We can make our lives sublime,
And, departing, leave behind us
Footprints on the sands of time ;
Footprints, that perhaps another,
Sailing o'er life's solemn main,
A forlorn and shipwrecked brother,
Seeing, shall take heart again.

इसी कविता का प्राचीन रूपांतर है:-

मृदुजनों के उत्तम जीवन, उच्च स्वर से कहें पुकार
तुम भी अपना जीवन जग में, कर सकते हो इसी प्रकार
जग में काल मरुस्थल सम है, जिस पर उनके पैर निशान
डग पर डग चलते तुम जाओ, पाओगे तब यश और मान
देख तुम्हारें चिन्ह पदों को जग अन्याय लगेंगे पार
मरु पर उनके दर्शन पाकर साहस होगा उन्हें अपार।

(परवार बंधु, दिसंबर 1927)

महापुरुषों के पद्‌चिन्हों के दर्शन उनके उस पथ का बोध कराते हैं जिस पर चलकर उन्होंने महानता पूज्यता प्राप्त की। किस दिशा में किस पथ पर हमें उनके पद्‌चिन्ह बताते हैं।

इसीलिए एक अन्य विद्वान करलाइस (Carlyse) ने लिखा है कि हमें महापुरुषों का जीवन दर्शन अनिवार्य रूप से पठन चिंतन मनन अपने जीवन को सुख शांति समृद्ध तथा आत्मविकास हेतु अवश्य करना चाहिए। यह हमें 'अप्प दीपो भवः' के सूत्र को चरितार्थ करने की प्रेरणा देता है। डॉ. राधाकृष्णन ने एक बार कहा था कि यथार्थ में महान वे नहीं जो भौतिक

धन से सम्पन्न है अथवा लौकिक ज्ञान के भंडार है किन्तु महान वे हैं जो नैतिक आध्यात्मिक गुणों से सम्पन्न है।

जैन वांगमय में वे महान पुरुष महापुरुष है जो वासनाओं विकारों कषायों का दास न बनकर आत्मावलंबी हो अपने रत्नत्रय धर्म को उज्ज्वल प्रदान करते हुए आत्म विकास के क्षेत्र में वर्धमान होते हैं, वास्तव में इंद्रियों पर नियंत्रण ही आध्यात्मवाद है और भोगों को निमंत्रण देना भौतिकवाद। वह जितेन्द्रियता है जो व्यक्ति को महापुरुष बनाती है।

जिन शासन में आत्मविकास का सूत्र रूप में 'सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्राणी मोक्षमार्गः।' इस जिनागम सर्वज्ञ प्रणीत मार्ग में सम्यक्ज्ञान के चार भेद कथित है - प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग और द्रव्यानुयोग। सम्यक् ज्ञान जिनमें चारों पुरुषार्थों का कथन है-धर्म, अर्थ काम और मोक्ष, जो पुण्य के कारण है, बोधि-समाधि में विजाने हैं ऐसे चारित्रों को पुराणों को शास्त्रों को प्रथमानुयोग कहते हैं यह चारों अनुयोगों में आत्म विकास की प्रथम अवस्था में महान उपकारी होने से ही प्रथमानुयोग कहलाता है। इस अनुयोग में वर्णित पुण्य कषायों को सुनकर भक्त पाप से छूटकर पुण्य प्रसाधक धर्म कार्यों में युक्त होता है। संसार के दुःखों से मयमति जीवों का संकट में एकमात्र सहारा प्रथमानुयोग है। यह अनुयोग जीव को संकट उपसर्ग के काल में समताभाव धारण करने में सहारा है। आज मुझे इस प्रसंग पर चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज द्वारा संल्लेखना के 26वें दिन दिये गये अपने अंतिम दिव्य संदेश में प्रारंभिक मंगल स्मरण में भूत, भविष्य, वर्तमान चौबीस सम्यग्ज्ञान को नमन करने के साथ प्रत्येक तीर्थंकर के समय होने वाले दश दश घोरोपसर्ग विजयी मुनीश्वरों को नमन किया था। उन्होंने कहा था 'जिनवाणी सरस्वती देवी अनन्त समुद्र समान है, फिर उसमें जिनधर्म को जो जीव क्षपण करेगा उसका कल्याण अवश्य होता है। अनंतसुख को प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त कर लेता है। अनन्त आगमों में एक अक्षर के अक्षर मात्र को धारण करता है। उस जीव का कल्याण होता है। उन्होंने उल्लेख किया 'सम्मेदशिखर में दो बंदर लड़ते थे। णमोकार मंत्र के प्रभाव में बंदर स्वर्ग

गया। सेठ सुदर्शन ने सबको उपदेश दिया वह स्वर्ग गया। महाकाल धारी अंजनचोर की णमोकार मंत्र के उपदेश से उच्च गति हुई। यह तो जाने दो कुत्ता महानीच जाति को जीवंधर ने उपदेश दिया वह भी देवगति को गया। इतनी महिमा जैन धर्म की है। इन प्रसंगों कथानकों को व्यक्ति को आत्मविकास शांति प्राप्त करने में कितना आत्मबल साहस धैर्य समताभाव प्राप्त होता है वह व्यतीत है। इन्हीं भावना को व्यक्त करते हुए ''संकटमोचन विनती'' में कवि वृंदावंद जी ने कहा है-

तोते ने तुम्हें आनि-के, फल आम चढ़ाया
मेंढक ले चला फूल भरा भक्ति का भाया।।
तुम दोनों को अभिराम स्वर्ग धाम बसाया।
हम आपसे दातार को लख, आज ही पाया।।
कपि श्वान सिंह नेवला अज बैल बिचारे।
तिर्यच जिन्हें रंच न था, बोध चितारे।
इत्यादि को सुर धाम दे, शिवधाम में धारे।
हम आपसे दातार को प्रभु, आज निहारे।

भक्ति में शक्ति का अहसास हमें प्रथमानुयोग से ही तो होता है। इसीलिए इसे कथानुयोग नहीं कहा। प्रथम आत्म विकास हेतु पठनीय मननीय होने से यह प्रथमानुयोग कहलाता है। यथार्थ में प्रथमनुयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह तीनों अनुयोगों की नजीर सदृश है। सुकौशल का वैराग्य, युधिष्ठिर आदि की ध्यान में निमग्नता, सुकुमाल की अंतर्मुखता में द्रव्यानुयोग का दर्पण पाया जाता है। आदि प्रभु का अन्तराधिक ग्रहणादि में चरणानुयोग प्रतिभाषित मुनिचर्या का दर्शन होता है।

मैंने अल्पज्ञ होते हुए भी कुछ प्रथमानुयोग के बारे में लिखा। इस हेतु मुझे यथार्थ में आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज के व्यक्तित्व कृतित्व से प्रेरणा प्राप्त हुई। आचार्य महाराज द्वारा सृजित साहित्य पर एक दृष्टि डालकर लगा उन्होंने कितने महापुरुषों का जीवन लिखा जैसे महावीर पुराण, सुभौम चक्रवर्ती चरित्र, चारूदत्त चरित्र, महीपाल चरित्र, चित्रसेन

पद्मावती चरित्र, जम्बूस्वामी चरित्र, श्री विमलनाथ पुराण, सीता चरित्र, सुकुमाल चरित्र, सुलोचना चरित्र, वीर वर्धमान चरित्र, नंग अनंग कुमार चरित्र आदि। मुझे व्यक्तिगत रूप से बीसवीं शताब्दी के प्रथम आचार्य चा. च. शांतिसागर जी महाराज के पास जाकर अपने ज्येष्ठ भ्राता विद्वतरत्न पंडित सुमेरूचन्द्र जी दिवाकर के साथ जाने से पुण्य अवसर मिला तथा पंडित जी द्वारा लिखित चारित्र चक्रवर्ती ग्रंथ का प्रथम संस्करण प्रकाशित कराने का पुण्य सौभाग्य सन् 1953 में प्राप्त हुआ। मुझे अनुभव से जनहित में वर्तमान काल के ज्ञान वृद्ध, तपोवृद्ध और अनुभव वृद्ध महार्षि का जीवन ज्ञान कितना सार्थक है। आचार्य वसुनंदी जी महाराज के परम शिष्य मुनि श्री शिवानंद जी ने आचार्य महाराज पर 'अक्षर शिल्पी' रचना का लेखन कर समाज पर महान उपकार किया है। इस कृति से आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज के व्यक्तित्व पर यथार्थ प्रकाश प्राप्त होता है। महाराज श्री कितने बहुमुखी प्रतिभा के धनी, प्रज्ञा श्रमण है। ''तप चाहे सुराय, लोभ पाप को बाप बखानो, जिस बिना नहिं जिनराज श्री के'' मान महाविषय रूप ''हीरो का खजाना'' आदि महाराज श्री की धर्म प्रभावना एवं श्रावक सद्गृहस्थ निर्माण की दिशा में सृजित कृतियां ही चा.च. आचार्य श्री शांतिसागर जी महारज के प्रति आचार्य वसुनंदी महाराज की महान श्रद्धा और उनके जीवन का प्रभाव प्रतिलक्षित होता। वे संपूर्ण पंथों को व्यामोह से दूर है। आगम पथ में पथिक है। आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज द्वारा सृजित 'मीठे प्रवचन' स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य हैं उन सद्वाक्यों से हम जीवन की संयामापन्न करने हेतु मार्गदर्शन प्राप्त होता है। आचार्य श्री अपने उद्बोधान द्वारा 'संयमपथ' का अनुसरण करने की प्रेरणा देते है। ऐसे महान उपकारी आचार्य श्री के पावन चरणों में त्रिबार बारम्बार नमोस्तु कर उनके रत्नत्रय पूर्णता की कामना करता हूं। उनका पावन आशीर्वाद हमें दीर्घकाल तक प्राप्त होता रहे। यह भगवान से प्रार्थना है।

अभिनंदन दिवाकर (एडवोकेट)
सिवनी (म.प्र.)

एक लाजवाब संत-आचार्य श्री वसुनंदीजी

मण्डौला से पूज्य ऐलक विज्ञानसागर जी की प्रेरणा से एक सूचना व कुछ पुस्तकें मिलीं। साथ में एक पत्र भी कि परम पूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज का 50वां जन्मजयंती महोत्सव 3 अक्टूबर को दिल्ली में आयोजित हो रहा है। मैं अपने को सौभाग्यशाली मानता हूँ कि मैंने विगत 20 वर्षों में आचार्यश्री का मंगल आशीर्वाद एवं सान्निध्य अनेक अवसरों पर पाया है/पा रहा हूँ।

आचार्य श्री पहली बार फिरोजाबाद में वर्ष 1998-99 के आसपास आए थे और वे मुनि निर्णय सागर जी के रूप में जाने जाते थे। संघ भी बहुत छोटा था किन्तु उनका ज्ञान, स्वाध्याय, वात्सल्य एवं प्रभावक प्रवचन शैली ने श्रावकों का मन मोह लिया और भक्तों की एक बड़ी संख्या बनती गई जो आज बढ़ती ही जा रही है।

वर्ष 2000 मे उनके सान्निध्य में नगर की नवनिर्मित पॉश कॉलोनी विभवनगर में भगवान शान्तिनाथ पंचकल्याणक से तो उनकी ख्याति समस्त आगरा मण्डल में हो गई और शीघ्र ही वे उपाध्याय निर्णयसागर बन गए, उपाध्याय पद की गरिमा के अनुसार उन्होंने लगभग 180 पुस्तकें/शास्त्र लिखे संपादित किए जिनसे विद्वत जगत में भी इनकी सराहना होने लगी। तभी वे राष्ट्रसंत आचार्य विद्यानंद जी के सान्निध्य में आये और उन्हें एलाचार्य पद पर प्रतिष्ठित करते हुए नाम दिया एलाचार्य वसुनंदी जी। अनेक पंचकल्याणक,व्रत प्रतिष्ठायें, विधान आदि उनके सान्निध्य में सम्पन्न हुए हैं और अनेक दीक्षायें देकर उन्होंने भाग्यशालियों के लिए संयम का मार्ग प्रशस्त किया है।

फिरोजाबाद का कटरा पठानान व नायम मुहल्ला जहाँ मैं रहता हूँ उनके प्रति सदैव कृतज्ञ रहेगा क्योंकि इसी मुहल्ले के महेन्द्र सिंह नामक युवक ने गृहत्याग करके वर्ष 1943 में कर्नाटक में मुनि दीक्षा ली और वे तीर्थभक्त शिरोमणि आचार्य महावीर कीर्ति बने। वर्ष 1945 में विद्यानंद जी

ने क्षुल्लक दीक्षा भी महावीरकीर्ति जी से ही ली थी।

कटरा मुहल्ले के एक युवा चन्दन जैन को बौलखेड़ा में जब उन्होंने मुनि दीक्षा दी तो वातावरण अत्यंत भावुक था। मुझे उस दीक्षा की अनुमोदना का उत्तरदायित्व सौंपा गया था।

आचार्य श्री का ज्ञान, ध्यान, चारित्र, तप, स्वाध्याय चिन्तन लाजवाब है। वे मनन, चिन्तन और प्रवचन पर समान अधिकार रखते हैं। विद्वानों के प्रति स्नेह और वात्सल्य रखते हैं। उनके द्वारा रचित पुस्तकों की संख्या अब 250 से भी अधिक है।

ऐसे परमपूज्य आचार्य श्री का 50वां जन्मजयंती पर्व हम सबके लिए कल्याणकारी हो और हमसे भी संयम और त्याग की भावना जगायें। इन्हीं शुभ भावों के साथ गुरुवर के श्रीचरणों में विनम्र विनय।

अनूप चन्द्र जैन एडवोकेट

संपादक जैन सन्देश, फिरोजाबाद (उ.प्र.)

विमल सागर व सुमति सिन्धु,
जिनसे जीवन उत्थान किया।
शांतिसागर को उत्तम कहते,
पाय सागर का ध्यान किया।
जयकीर्ति तपोधन थे,
देशभूषण जी संत महान।
विद्यानन्द जी गुरू आपके,
राष्ट्र संत में रहे महान।।

–साभार 'स्वर्णोदय'

वात्सल्य के धनी आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज

श्रमण परम्परा में आचार्य वीरसेन स्वामी, आचार्य जयसेन स्वामी, आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी, आचार्य समन्तभद्र, आचार्य अकलंक देव जैसे अनेकों महनीय आचार्य हुए जिन्होंने अपने आचरण व उपदेशों से जगत के प्राणी मात्र को धर्म का मार्ग बताया इसी श्रमण परम्परा में वर्तमान आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज का व्यक्तित्व एवं कृतित्व समस्त जनमानस के लिए अनुकरणीय है। आचार्य श्री का व्यक्तित्व साक्षात वात्सल्य की प्रतिमूर्ति हैं जो भी श्रावक एक बार आचार्य श्री के दर्शन कर ले वह उनका हो जाता है। उनका हृदय तो सागर के समान गंभीर है। आचार्य श्री का सन् 2007 का चातुर्मास सिद्धक्षेत्र मथुरा चौरासी में हुआ तब आचार्य श्री के व्यक्तित्व को निकट से जानने का अवसर प्राप्त हुआ। प्रातः से लेकर सायंकाल तक सतत रूप से आत्म साधना एवं ज्ञानार्जन में संलग्न रहते एवं आपके सन्निकट आने वाले भक्त जनों को जो ममतामयी आशीर्वाद प्राप्त होता है मानो उसे संसार की सर्वश्रेष्ठ वस्तु प्राप्त हो गई हो, आपके निकट आते ही दुःखी व्यक्ति भी प्रसन्नचित्त होकर के सदैव के लिए आपसे जुड़ जाता है। आपके संयम एवं साधना के प्रताप से कोई अछूता नहीं रहा जिसने भी आपकी भक्ति का रसपान किया वह आपका ही बन गया। निस्वार्थ एवं अटूट रत्नत्रय रूपी माला में पिरो दिया गया।

मुनि, आर्यिका, ऐलक, क्षुल्लक एवं त्यागी वृत्तियों का विशाल संघ आपके व्यक्तित्व का जीता जागता उदाहरण है। जो स्वयं रत्नत्रय के मार्ग पर चलते हुए भोले-भाले संसार में भ्रमित प्राणी मात्र को भी रत्नत्रय का मार्ग बताकर उनका कल्याण कर रहे हैं। उसी वीतरागी मुद्रा के दर्शन मात्र से ही वह अपने मोक्ष मार्ग की खोज कर लेता है।

आपका व्यक्तित्व तो जीवंत पुस्तक की भांति है जिसे पढ़ने की आवश्यकता नहीं है उसे तो देखने मात्र से ही कल्याण हो जाता है। आप

तो साक्षात् महावीर के लघुनन्दन हैं। पूज्य आचार्य श्री साधना के साथ-साथ ज्ञानार्जन में भी सतत् रहते हैं। जिसके फलस्वरूप अपने प्रथमानुयोग में सन्निहित महापुरुषों के जीवन चरित्र संबंधित एवं श्रावक के आचार-विचार दान की महिमा जिनेन्द्र भक्ति हेतु विधान आदि शताधिक कृतियां आपके अथक ज्ञानार्जन का प्रतिफल हैं। जिसके फलस्वरूप जैन संस्कृति के आधार स्तम्भ जिन महापुरुषों के जीवन से आज जनमानस अछूता था ऐसे महापुरुषों के जीवन चारित्र को आचार्य श्री की लेखनी से सरल एवं सारगर्भित रूप में लिखकर जिन्हें प्रकाशित कराया गया। ऐसे ग्रन्थ जो आज स्वाध्याय हेतु सुलभता से प्राप्त हो रहे हैं एवं महापुरुषों के जीवन चरित्र कृतित्व के रूप में पूज्य गुरुदेव का जो उपकार है उसका वर्णन अकथनीय है।

सारी पृथ्वी कागज करूँ, लेखनी करूँ वन राय।
सात समुन्दर स्याही करूँ, गुरु गुण लिखा न जाय॥

मोक्ष मार्ग के पथिक, रत्नत्रय की साधना में तल्लीन ऐसे पूज्य गुरुवर का आशीर्वाद सदा हम पर बना रहे। आपके श्री चरणों में कोटिशः नमोस्तु।

गुरुभक्त जिनेन्द्र जैन शास्त्री
श्रमण ज्ञान भारती जैन चौरासी सिद्धक्षेत्र
मथुरा (उ.प्र.)

शत्-शत् उन्हें प्रणाम है।
वसुनंदी जी उनका नाम है।।

आचार्य श्री विद्यानन्द जी महाराज व पू. एलाचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज के चरणों में शत्-शत् नमन

ऐलक श्री विज्ञानसागर जी महाराज की प्रेरणा से प.पू. आ. श्री वसुनंदी जी मुनिराज की 50वीं स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के संदर्भ में

उच्च कुल में जन्म लेने से व्यक्ति महान नहीं होता है जब तक कि वह महान कार्य न करे। व्यक्ति जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है जब वह अच्छे कर्म करता है तभी महान बनता है, बच्चे के जन्म से अच्छे संस्कार और श्रेष्ठ गुरु का मार्गदर्शन ही उसे महान कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। बच्चा तो गीली मिट्टी के समान होता है हम उसे चाहे किसी भी साँचे में ढाल सकते हैं, जैसे कि एक कुम्हार गीली मिट्टी को किसी भी साँचे में ढाल सकता है वह गीली मिट्टी से भगवान की मूर्ति भी बना सकता है और दानव की भी। उसी प्रकार बच्चो को माता-पिता के द्वारा दिए गए अच्छे धार्मिक संस्कार और श्रेष्ठ गुरु का मार्गदर्शन उसे महान बना देता है। वही गलत संस्कार उसको पतन के मार्ग की ओर ले जा सकते हैं।

श्रेष्ठ गुरु ही व्यक्ति को अज्ञानता के पथ से ज्ञान के पथ की ओर ले जाता है और उसे महान बनाता है। हमारे प.पू. आ.श्री वसुनंदी जी महाराज बहुत सौभाग्यशाली हैं जिन्हें श्रेष्ठ माता-पिता के धार्मिक संस्कार के साथ-साथ श्रेष्ठ गुरु आचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज का सानिध्य प्राप्त हुआ और आज प.पू. वसुनंदी जी मुनिराज माता-पिता के धार्मिक संस्कार और आचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज के मार्गदर्शन के कारण अपने ज्ञान के प्रकाश से सम्पूर्ण समाज को प्रकाशित कर रहे हैं और जन-जन के लिए वन्दनीय व पूजनीय हैं।

1988 में 2 प्रतिमाधारी की दीक्षा लेने के पश्चात् आज प.पू. वसुनन्दी जी मुनिराज श्रेष्ठ गुरु के मार्गदर्शन के कारण आचार्य की पदवी पर हैं

और जन-जन के सन्त बने हैं। जन्म से ही प्रत्येक माता-पिता के अपने बच्चों को लेकर कुछ सपने होते हैं, लेकिन किसी भी माता-पिता को यह पता नहीं होता कि उनका बच्चा वैराग्य धारण करके भी संसार में पूजनीय बन जायेगा और उनका नाम रोशन करेगा। ऐसे ही हमारे सन्त श्री वसुनन्दीजी महाराज हैं जिन्होंने अपने माता-पिता का नाम सार्थक किया।

कभी-कभी व्यक्ति के जीवन में ऐसी घटना घटित हो जाती है कि जिसके कारण व्यक्ति को यह संसार क्षणभंगुर लगने लगता है और उसको संसार से वैराग्य उत्पन्न हो जाता है। जैसे कि आदिनाथ भगवान जो इतने बड़े राज्य के राजा थे अपने दरबार में नीलांजना नृत्यांगना की मृत्यु को देखकर उनको वैराग्य उत्पन्न हो गया और संसार उन्हें क्षणभंगुर लगने लगा। उन्होंने तभी वैराग्य धारण कर लिया। उसी प्रकार भगवान नेमिनाथ ने अपनी शादी में पशु हत्या होते हुए देखकर, वैराग्य धारण कर लिया। मृत्यु-जीवन का एक सुंदर सत्य है जो मृत्यु के मर्म को समझ जाता है वही संत बन जाता है। ऐसी ही एक घटना हमारे प.पू. श्री वसुनंदी जी मुनिराज के जीवन में घटित जिसके कारण उन्हें वैराग्य उत्पन्न हो गया उन्होंने युवावस्था में किसी की मृत्यु को देखा और मृत्यु को देखकर वे उसके मर्म को समझ गए उन्हें संसार क्षणभंगुर लगने लगा और वैराग्य उत्पन्न हो गया। तभी से वे सन्त बन गए मृत्यु ही उनके वैराग्य का कारण बनी जो सन्त मृत्यु के सुन्दर सत्य को पहचान लेता है वह भव सागर से पार उतर जाता है।

दिया मिट्टी का है या सोने का यह महत्वपूर्ण नहीं बल्कि वो अंधेरे में प्रकाश कितना देता है, यह महत्वपूर्ण है। उसी प्रकार सन्त भी तभी संसार में पूजनीय बनता है जब वह अपने ज्ञान के प्रकाश से संसार को आलोकित करे। ऐसे ही संत हमारे प.पू. वसुनंदी जी महाराज हैं जो अपने ज्ञान के प्रकाश से संसार को आलोकित कर रहे हैं और जन-जन में पूजनीय हैं। हमारे सन्त श्री वसुनंदी जी मुनिराज का कहना है कि मोह दुख का कारण है इसके रहते हुए मोक्ष मार्ग असम्भव है। अंधकार से दोस्ती करके प्रकाश को पास में नहीं बुलाया जा सकता। अंधकार को

त्याग करने का संकल्प ही प्रकाश का बुलावे की प्रथम व अनिवार्य शर्त है। जीवन संयम से ही सार्थक बनेगा समय रहते जीवन को सफल व सार्थक बनाओ। जागो और सफलता हासिल करो।

जीवन में सच्चा साधक तभी बना जा सकता है जब दृष्टि में सच्चापन हो। दृष्टि में निर्मलता आये बिना निर्मल दृश्य भी निर्मल नहीं दिखाई देगा। मन में अच्छे विचारों का सृजन हो जब तक मन में विकृत विचारों का सृजन होगा तो दूसरों की अच्छाईयाँ वैसे अनुभव करेंगे अर्थात् दूसरों की भलाई भी बुराई के रूप में दिखेगी। अतः अपनी दृष्टि ज्ञान, चर्या, चित्तकृति आदि निर्मल बनाओ जिससे निर्मलता को देख सको अपना सको और पा सको। श्रेष्ठ गुरु का मार्गदर्शन ही सच्चा साधक बनने का द्वार है।

विश्व के समस्त साधु और संतों में केवल दिगम्बर संत ही एक ऐसे संत होते हैं जिनका न तो कोई निश्चित मुकाम होता है और न ही अपना मकान उनके पास न कोई बीजा होता है और न कोई पास फिर भी पूरे विश्व में कहीं भी बेरोकटोक विहार करते वह नदी के प्रवाह की तरह होते हैं। जैन साधु एक ऐसा मसीहा है जिसका अपना कोई दास नहीं होता और न ही वो किसी का दास होता है।

गुणों के सहारे ही व्यक्ति सफल हो पाता है, विचार और विवेक साथ हों तो शिखर छू जाता है। बहुत आसान होता है। कोई उदाहरण पेश करना बहुत कठिन होता है खुद कोई उदाहरण बनना। एक पत्थर सिर्फ एक बार मंदिर जाता है और भगवान बन जाता है इंसार हर रोज मंदिर जाता है फिर भी पत्थर ही रहता है। इसीलिए पत्थर की तरह अपने कर्मों से भगवान बनना चाहिए।

प्रेम से भरी हुई आँखें, श्रद्धा से झुका हुआ सर, सहयोग करते हुए हाथ, सन्मार्ग पर चलते हुए पाँव, सत्य से जुड़ी जीभ, व्यक्ति के महान बनने का कारण होती है। हमारे प.पू. आ. श्री वसुनंदीजी महाराज इन सभी गुणों से परिपूर्ण हैं। इसीलिए वो आज समाज में पूजनीय हैं। महान व्यक्ति अपने चेहरे पर दो ही चीजें रखते हैं 'मुस्कुराहट' और 'खामोशी'।

मुस्कुराहट मसलों यानी समस्याओं को हल करने के लिए और खामोशी मसलों से दूर रहने के लिए।

जीवन में सुन्दरता से बढ़कर व्यक्ति का चरित्र है और प्रेम से बढ़कर त्याग है। दौलत से बढ़कर मानवता है। इस संसार में हम क्या लेकर आये थे और क्या लेकर जायेंगे बस एक दिल लेकर आये थे और हजारों दिलों में जगह बना कर जायेंगे। अन्त में मैं बस इतना ही कहना चाहूँगी कि प. पूज्य आ.श्री वसुनंदी महाराज के माता-पिता धन्य हैं जिन्होंने इतने सुयोग्य पुत्र रत्न को जन्म दिया जो अपने ज्ञान के प्रकाश से संसार को प्रकाशित कर रहे हैं।

दीपा जैन

46/2, सी-1, गली नं. 17, ईस्ट आजाद नगर, दिल्ली

दीपक के सम् जलते गुरुवर,
अन्धकार का काम नहीं है।
सारे तीरथ देखे हमने,
गुरुदेव सा धाम नहीं है।
तन पिंजड़े से पंछी उड़ता,
ऐसा गुरुवर कहते हैं।
मोक्षमार्ग के पथिक आप हो,
मोक्षमार्ग पर चलते हैं।।

–साभार 'स्वर्णोदय'

लोक-मंगलकारी प्रसंग
आचार्य श्री वसुनन्दी जी की पदारोहण-यात्रा

आचार्य श्री वसुनन्दी जी का स्वर्ण जयंती महोत्सव लोक मंगलकारी प्रसंग तो है ही, मानवता के लिए शुभ शकुन भी है। उनका आधी शताब्दी का यह जीवन एक समर्पित व्यक्तित्व विविधताओं से भरा जीवन की प्रमुख घटनाओं की समीक्षा जब हम करते हैं, तब लगता है जैसे वे केवल जैनों के ही नहीं देश की शताब्दियों में विकसित आध्यात्मिक मान्यताओं के जीवन्त इतिहास है। उनकी अब तक की विचार-यात्रा का हर पड़ाव लोक जीवन की कोई-न-कोई दिशा देने के लिए प्रकाश स्तम्भ बनकर प्रकट हुआ है। उनके विभिन्न नगरों में हुए प्रवचनों ने भारत की अन्तरात्मा को जगाया है। हम देखते है कि आचार्य श्री का अब तक का जीवन मात्र व्यक्तिगत उठान पर आधारित नहीं अपितु एक आध्यात्मिकता के साथ ही अपरिग्रह की उत्तम प्रयोगशाला भी है।

मैंने आचार्य श्री वसुनन्दी जी के प्रथम बार दर्शन उस समय किये जब आचार्य विद्यानन्द जी मुनिराज दिल्ली के उपनगर विश्वास नगर में विराजमान थे और उनके सान्निध्य में वहाँ पर पंचकल्याणक महोत्सव की तैयारियां चल रहीं थी। उस समय ग्रीन पार्क जैन समाज के पदाधिकारी आए और उन्होंने मुनिश्री निर्णय सागर जी के द्वारा लिखी हुई पच्चीस ग्रंथों का एक सेट देते हुए निवेदन किया कि आप इन ग्रंथों के लेखक मुनिश्री निर्णय सागर जी को उपाध्याय पद पर प्रतिष्ठित करने की अनुकम्पा करें। यह अच्छे लेखक के साथ-साथ अच्छे प्रवक्ता भी है।

समाज के जाने के बाद आचार्य श्री ने वह सेट मुझे देते हुए कहा- सतीश तुम इन ग्रंथों को देख लो, मैं तो इतने ग्रंथ पढ़ नहीं सकता हूँ।

मैं भी गुरु के आदेश के अनुसार ग्रंथों को पढ़ तो नहीं सका, पर ग्रंथों के नाम और उनके आरम्भ के दो-एक पृष्ठों का ही अवलोकन कर सका।

16 फरवरी 2002 को प. पू. आचार्य श्री विद्यानन्द जी ने आयोजकों को बताओ कि कल दोपहर की सभा में एक मुनि श्री को उपाध्याय पद पर प्रतिष्ठित करना है, अतः प्रतिष्ठाचार्य से परामर्श करके उपयोगी सामग्री मंगवा ले।

17 फरवरी को आचार्य श्री विद्यानन्द जी ने मुनि श्री निर्णय सागर पर विधिवत सुसंस्कार करने के पश्चात् घोषित किया कि आज से मुनि श्री निर्णयसागर जी को उपाध्याय श्री निर्णयसागर जी कह कर सम्बोधित किया जाएगा।

पंच परमेष्ठियों में उपाध्याय परमेष्ठी मुनि दीक्षा के पश्चात् प्रथम-पद है। उसके पश्चात ही पदों की श्रृंखला आरम्भ होती है। इसी क्रम में 1 अप्रैल 2009 को एलाचार्य, 3 जनवरी 2015 को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया गया। उपरोक्त सभी पदों के लिए संस्कार परम पूज्य आचार्य श्री विद्यानन्द जी मुनिराज ने किए। मैं अपने आपको सौभाग्यशाली मानता हूँ कि मैं इन सभी भव्य और गौरवपूर्ण समारोहों का संचालक बनने का पुण्य लाभ ले सका।

वर्तमान में आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज का संघ आगम के अनुरूप संघ परम्परा की गरिमा को दृढ़ता के साथ पालन कर रहा है।

आचार्य श्री वसुनन्दी जी मध्यमार्गी है। वे अपने मंगल प्रवचनों में विषय का ध्यान रखते हुए अपनी बात प्रमाणिकता के साथ सुगम-सरल भाषा में ही रखते हैं। इनकी भाषा परिमार्णित और परिपक्व है। जनसाधारण को भी उनके विचार हृदसंगम करते देर नहीं लगती। उनके पास ज्ञान-ध्यान-क्रिया-शोधक उपकरणों के अतिरिक्त बाहरी आण्डम्बर परिग्रह आदि नहीं है। संघ को भी समय-समय पर संचय-मुक्त रहने का आदेश देते रहते है। दर्शनार्थियों के साथ भी सदैव ही वात्सल्यपूर्ण सौम्य व्यवहार देखने को मिलता है, जिसके कारण जन-मानस उनकी ओर आकृष्ट होता है।

सतीश जैन (आकाशवाणी)
मयूर विहार, दिल्ली

महान ज्ञानोपयोगी

श्रद्धेय परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य वसुनंदी जी महाराज के चरणों में सविनय विनयांजलि।

भारत की वसुन्धरा राजस्थान की गोद में ग्राम धौलपुर में जन्में बालक, माता त्रिवेणी व पिता श्री रिखबचंद जैन के कुल में उत्पन्न बालक दिनेश जैन ने आज से 50 वर्ष पूर्व जन्म लिया, संसार से मुख मोड़कर, परिवार से नाता तोड़कर, दिगम्बर जैनेश्वरी दीक्षा, धारण कर भगवान 1008 श्री महावीर स्वामी के लघुनंदन वर्ष में श्रमण मुनि बने। आप महान ज्ञानोपयोगी एवं आपके मुखारविंद से अमृतवाणी खिरती हैं जो जन-जन को प्यारी लगती है। आपके अपने गुरु श्वेतपिच्छाचार्य आचार्य श्री विद्यानन्द जी महाराज हैं। आपने अपने ज्ञानार्जन से करीब 200 से भी अधिक पुस्तकें लिखकर प्रकाशित करके जैन धर्म का प्रचार करके उसे सजाया व ध्वजायें फैलाई। जिन-जिन ने भी आपकी वाणी को सुना और पुस्तकों को पढ़ा वो धन्य हो गये।

मैं जिनेन्द्र भगवान से प्रार्थना करता हूं कि आप जैसे महान संत वसुनंदी जैसे हजारों-हजारों अवतार लेकर सम्पूर्ण भारत वर्ष में जन-जन को कृतज्ञ करावें। आपका स्वास्थ्य मंगलमयी हो। आपका रत्नत्रय निरंतर आगे उत्कृष्ट होवें। आप दीर्घायु हों एवं आप हमेशा-हमेशा जयवंत हों। आप अपनी मंजिल पार करके एक दिन सिद्धालय में जाकर विराजमान हो जावे। आप सबके पूज्यनीय वंदनीय हैं। ऐसी मेरी भावना रखते हुए एक बार फिर आचार्य श्री के चरणों में त्रिकल नमोस्तु। नमोस्तु।। नमोस्तु।।।

जैनम् जयतु शासनम्

एम. हुक्मी चंद्र जैन (गिलिया)
निमाज निवासी, पांडिचेरी प्रवासी

शत्-शत् नमन-आचार्यश्री को

आचार्य वसुनन्दी महाराज जी, एक ऐसे संत हैं जिसने मानव के अन्तस को छुआ है, सुप्त संवेदनाओं को जगाया है, योग्यता का अभिनन्दन, स्वावलम्बन, चिन्ता, मानसिक प्रदूषण से बिगड़ता पर्यावरण, सदाचार, जीवन शुद्धि का बीज हाइपरटेंशन, जिनकी आज नई और पुरानी युवा पीढ़ी और वृद्ध दोनों को नितांत आवश्यकता है। आपकी वाणी अंजन की भांति भौतिकता की चाक चिम्प से धुंधली हुई आँखों की धुंध मिलाकर दृष्टि को निर्मलता प्रदान करता है।

आचार्यश्री के लिए अंग्रेजी का एक शब्द है ''वर्सेटाइल जीनियस'' तात्पर्य बहुमुखी प्रतिभा। उक्त शब्द में गर्हित सामर्थ्य और क्षमता को धारण करने वाले व्यक्तित्व, देश में बहुत कम हैं जो हैं उनमें श्री वसुनन्दी जी महाराज भी है। यह समग्र जैन समाज के लिए गौरव की बात है। आप बहुभाषी के साथ बहुभाष्य भी हैं। बहुगुण संपन्न हैं तो 'बहुसक्षम' भी हैं और 'बहुपद' है। आप बहुश्रुत विद्वान हैं। उनका वर्णन 'बहुविस्तीर्ण' है।

प्रेमनारायण वारेश्व

प्राचार्य नेताजी सुभाष सिवानी (म.प्र.)

भक्ति करना पुण्य कमाना,
ये गुरुवर की वाणी है।
वाणी सुन लो आज गुरु की,
ये कहती जिनवाणी है।
सार-सार को बता रहे है,
समवशरण भी दिखा रहे।
निर्मल पथ को देने वाले,
बात हृदय की बता रहे।।

–साभार 'स्वर्णोदय'

अनमोल रत्न

सहज स्वभावी, सरल हृदय गुरुदेव के चरणों में सादर नमोस्तु!आचार्य श्री के सान्निध्य में मुझे अब तक चार पंचकल्याणक का सम्पूर्ण कार्य करने का मौका मिला, जिनमे आचार्य श्री की मुझ पर असीम कृपा रही है, जिनमे दो बार पंचकल्याणक अतिशय क्षेत्र जय शांति सागर निकेतन, मन्डौला व दो बार पंचकल्याणक 1008 आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, इंद्रापुरी, लोनी के पदभार के लिए उचित व्यक्ति समझकर मुझ पर बहुत बड़े कार्य को सम्पन्न कराने का बहुत कुछ सीखने का अवसर दिया। उन पंचकल्याणक के समवशरण में मैंने आचार्य श्री के साक्षात उस स्वरूप के दर्शन किये जिसे आज के समय में शायद ही देखने को मिलता है। साक्षात् तीर्थंकर स्वरूप, मृदुभाषी ऐसे हैं मेरे पूज्य गुरुदेव! अपने विहार में हर कदम को इस तरह से संभालकर रखना ताकि कोई जीव गलती से भी हिंसा का पात्र न बन जाये। प्रवचन के समय बोलते वक्त मुख से ऐसी वाणी निकालना जिससे भूलवश भी किसी प्राणी या जीव की निंदा न हो, हर व्यक्ति को ध्यान में रखकर कर्णप्रिय मृदुभाषी शब्द प्रस्तुत करना, जिसे सुनकर बड़े तो क्या बच्चे भी अपने आप अपनी कुरीतियां को त्याग दें। उनके मुखाकृति व मुखकान्ति को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि आज के युग मे भी किसी के मुख पर इतनी शांति इतनी चमक कैसे हो सकती है। आजकल दुनियां में प्रचलित रीतियां से कोई खुद को कैसे अलग रख सकता है, पर पूज्य गुरुदेव इतने दृढ़निश्चयी है कि उन्होंने अपनी सब इच्छाओं पर विजय पा ली है। उनके हाथों में पिच्छी और कमण्डल को देखकर ऐसा प्रतीत होता है जैसे पूज्य गुरुदेव का उनसे जन्मों जन्मों का नाता है। अंत में मैं यही कहना चाहता हूँ कि दुनियां में एक से एक कीमती रत्नों का भंडार है पर मेरे पूज्य के जैसे कीमती रत्न कोई नही हो सकता क्योंकि बाकी रत्नों का मोल लगाया जा सकता है पर गुरुदेव तो अपने आप मे ही अनमोल है जिनका कभी कोई मोल नहीं लगाया जा सकता है।

प्रवीन जैन

अध्यक्ष- अतिशय क्षेत्र जय शांतिसागर निकेतन, मन्डौला

महावीर के लघुनन्दन आचार्य वसुनन्दी जी

भौतिकता की चकाचौंध से भ्रमित होकर नैतिक मूल्यों से मुंह मोड चूकि वर्तमान पीढ़ी को सन्मार्ग में लगाने हेतु गुरु की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन ही एक मात्र साधन है। क्योंकि गुरु की वाणी एवं उनका वात्सल्य ही जनमानस पर जादू की तरह असर करता है।

प्राचीन काल के साधुओं के दर्शन करने का सौभाग्य तो नहीं मिला लेकिन शास्त्रों का पठन करने के बाद वर्तमान समय में गुरुदेव 108 श्री वसुनन्दी जी महाराज जी की साधना त्याग करुणा, वात्सल्य देखकर लगता है कि ऐसे ही मुनिराज उस समय होते है।

मुझे सर्वप्रथम 1999 में नसिया जी फिरोजाबाद में गुरुदेव के मुनि अवस्था में (मुनि श्री निर्णय सागर जी महाराज) के रूप में दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उसके बाद गुरुदेव के उपाध्याय, एलाचार्य एवं वर्तमान में आचार्य श्री के रूप में दिग्दर्शन हो रहे है। एलाचार्य पद के संस्कारों का तो 1/4/09 को ग्रीनपार्क दिल्ली में अपने नैत्रों से सुखद अनुभव किया।

मुनि श्री 108 वीर सम्राट जी महाराज आपके संघ में थे। उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था। तीन दिन तक मैं उनके साथ रहा आप उनका कितना ध्यान रखते थे। उनकी पूरी चर्याओं को पालन कराते थे। वे सारी बाते मेरे इस पटल पर अंकित है। सभी बाते आपके वात्सल्य को दर्शाती है। इसलिये आप वास्तव में वात्सल्य रत्नाकर है।

पूज्य गुरुदेव को कई बार साधना रत देखा है। एक बार राम पार्क लोनी में अर्धरात्रि को आपको साधना करते देखकर लगा कि वीर प्रभु का धरा पर अवतरण हो गया है। आप महान तपस्वी है।

आपके पावन सान्निध्य में कराई गई अनेक क्रियायें चाहे वह पंचकल्याणक हो वेदी प्रतिष्ठा हो शिखर कलशारोहण हो अथवा दीक्षा संस्कार। समय-समय पर अनेक अतिशय होते रहते हैं। मण्डौला मे हमने कई बार अनुभव किया है। इसलिये आप अतिशयकारी बाबा हो।

गुरुदेव की महान विशेषता है कि उनके कितने भी व्यस्त कार्यक्रम हो किसी भी समाज को निराश नहीं करते। अपने स्वास्थ्य को दूर किनार करते हुये सभी को समायोजित कर लेते है। इसलिये आप करुणा के सागर हो।

परम पूज्य ऐलक 105 श्री विज्ञान सागर जी महाराज ने आपकी 50वीं स्वर्ण जयन्ती के शुभ अवसर पर ''वसुनन्दी प्रश्नोत्तरी'' पुस्तिका का प्रकाशन कराया है। जिसके माध्यम से आपके जीवन-दर्शन करने का सुअवसर प्राप्त होना। वह भी बहुत ही प्रशंसनीय कार्य है।

मैं वीतराग भगवान से प्रार्थना करता हूं कि गुरुदेव का हम शताब्दी महोत्सव मनाये। आप दीर्घायु रहे, स्वस्थ रहे ऐसे ही मोक्षमार्ग पर चलकर स्वयं के साथ हमारा भी कल्याण करने का कारण बने। इन्हीं भावनाओं के साथ ऐसे ऋषिराज गुरुराज एवं महामुनिराज के पावन चरणों में अपना त्रिकाल नमोऽस्तु निवेदित करता हूँ।

आपका अपना

संजय कुमार जैन

कोषाध्यक्ष, अतिशय क्षेत्र जय शांतिसागर निकेतन

मण्डौला, गाजियाबाद, उ.प्र.

स्वयं जगे हो, हमें जगा रहे,
ये ही गुरु का परिचय है।
सिद्धांत ज्ञान को बता रहे हो,
मानो मुक्ति का परिणय हो।।
क्षमा शील हो क्षमावान में,
अमृत का कलशा लाये हो।
ज्ञान के मोती बाँट रहे हो,
क्योंकि उनको ही लाये हो।।

–साभार 'स्वर्णोदय'

आचार्य श्री वसुनंदी जी

सभी धर्मों में कहा गया है कि यदि माता-पिता का जीवन सदाचरण पूर्ण सादा, संयम-मय और धर्मनिष्ठ होगा तो निश्चय ही उनके बालक इन सब संस्कारों से ओत-प्रोत होंगे वे उनके गुणो के अधिकारी होंगे। तात्पर्य अपनी संतान को निष्कपट, सरल धर्मात्मा सत्यनिष्ठ और स्वच्छ-चित्त वाले बनाने की भावना रखने वाले माता-पिता को अपना जीवन श्रेष्ठ और सरल बनाना होगा ऐसा करने से बच्चों में धर्माचरण धारण करने का योग्यता आयेगी। मात्र स्कूल और कॉलेजों के भरोसे अपने बच्चों में सद्गुणों का भण्डार नहीं देखा जा सकता, मेरे विचार से बच्चों के लिए अपने माता-पिता की गोद और सुन्दर प्रेरणादायक संस्कार सर्वोत्कृष्ट विद्यालय हो सकते हैं लेकिन माता-पिता ही संस्कारविहीन है। तो ''अर्जन जैसा फर्जन की कहावत को चरितार्थ करेंगे। इससे स्पष्ट है कि हमें अपने आचरण पर विशेष ध्यान देना चाहिए जिससे हम अपने बच्चों को एक अच्छा मानव बना सके। बच्चों में कभी भी धर्मघातक बातों के संस्कार नहीं डालना चाहिए। बच्चों में अकलंक और निकलंक जैसे धर्म पर बलिदान होने वाली महापुरुषों की गाथाओं के सुसंस्कार डालने चाहिए जिससे वे आगे चलकर धर्म पर विश्वास करते हुए आत्मख्याति करें।

''मौन रहना साधना है और बोलना है कला'' इस वाक्य के प्ररेणास्तोत्र आचार्य श्री वसुनंदी मुनिराज पर कुछ लिखने से पूर्व मेरे मन में अज्ञान के बादल छँट गए, विवेक का सूर्य उदित हो गया। अशुभ का कचरा निकल गया। मस्तिष्क का टेंक स्वच्छ हो गया। मुझे क्या करना है, कहाँ रहना है, किसकी संगति करना और क्या ग्रहण करना है? बुद्धि जाग गई बेहोशी समाप्त हो गई है, मूर्छा चली गई, अब मदहोश नहीं, होश में हूँ।

आचार्य श्री का वात्सल्य आकाश के समान असीम है, पृथ्वी के समान सहिष्णु है जल के समान तरल है, पवन के समान भ्रमणशील है, अग्नि के समान पवित्र है और निखारने वाला है। जिसके जीवन में वात्सल्य नहीं है तो कल तुम बूढ़े हो जाओगे तब कौन सहारा देगा? कौन तुम्हारे बुढ़ापे की लकड़ी बनेगा? अगर आप में वात्सल्य का दीया होगा तो सब काम आयेंगे।

आचार्य श्री का मानना है कि अगर पशु पक्षियों को वात्सल्य दोगे तो

जंगल में जब साधना करोगे तो वे द्वार पर पहरा देंगे तुम्हारी रक्षा करेंगे। यदि पेड़-पौधों को प्रेम वात्सल्य दिया तो उनकी छाया में साधना करने को मिलेगी। प्रेम जितना लेता है उससे कई गुना लौटा देता है। तुम प्रेम में जिसकी फिक्र करोगे वह तुम्हारी फिक्र करेगा जो जगत को प्रेम करते हैं उनको परमात्मा का प्रेम मिलता है।

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री का कहना है कि अहिंसा बीज है, प्रेम वृक्ष है, अहिंसा सागर है, तो प्रेम उसकी तरंग है। अहिंसा पानी है प्रेम शीतलता है। अहिंसा निराकार है, प्रेम साकार है, अहिंसा आत्मा है, प्रेम शरीर है। प्रेम को लोग समझ नहीं पाये। मेरी भावना में लिखा है कि फैले प्रेम में परस्पर जग में, मोह दूर ही रहा करें। सम्यक दृष्टि के गुणों में अनुकम्पा को रखा है।

सभ्यता के उषा काल से ही धर्म मानव को मानव से जोड़ने का एकमात्र सशक्त माध्यम रहा हैं अपने दीर्घ अनुभव तप:पूत ज्ञान और चिन्तन द्वारा भारत के आत्मदर्शी संत इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि आत्मानुभव, आत्मसाक्षात्कार और आत्मदर्शन ही मानव जीवन का परम पुरुषार्थ है। आचार्य श्री का मानना है कि जब व्यक्ति अपने सुधार अपने दोष निवारण की ओर से आँखें मूंद लेता है अथवा अपनी चरित्रगत दुर्बलताओं की ओर से उदासीन हो समाज के उद्धार का प्रयास करता है तब सभ्यता का भ्रष्ट और विकृत होना स्वाभाविक ही है इसके विरुद्ध जब समाज का प्रत्येक घटक आत्मशुद्धि पर ध्यान देता है, स्वार्थवृत्ति पर नियन्त्रण रखता है, तब सम्पूर्ण समाज अपने आप निर्मल हो जाता है।

आशा ही नहीं विश्वास भी है कि आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनि महाराज पर प्रकाशित होने वाली कृति अंधकार से प्रकाश, असत्य से सत्य और मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाने वाली पर हितकारी सन्तों की महिमा से जन-साधारण के जीवन को सफल बनाने में प्रकाशपुंज का कार्य करेगी।

तुलसी संगत साधु की
हरत कोटि अपराध।

संजय जैन ''संजू''
ब्यूरो चीफ, राज एक्सप्रेम सिवनी (म.प्र.)

मधुरता सरलता और मृदुता के धनी-आचार्य श्री वुसनंदी जी

संसार एक जीवन चक्र है जिसमें हम सब परिभ्रमण कर रहे हैं। 84 लाख योनियों में भटकते-भटकते न जाने कितनी पर्यायों को बदलते हुए जब अथाह पुण्य का संग्रहण हुआ और परिणाम में निर्मलता, सरलता, सहजता का आभास हुआ तब मनुष्य पर्याय प्राप्त हुई। मनुष्य पर्याय मिल भी गई तो उसमें उच्च जैन धर्म, जैन कुल, जैन संस्कृति व संस्कार मिलना आसान नहीं है। यह सब अथाह पुण्य कर्म के उदय से होता है।

मनुष्य जैन कुल में जन्म प्राप्त कर भी लिया लेकिन जैन धर्म को समझ लें यह बहुत बड़ी बात है। जन्म लेना ही सब कुछ नहीं है अपितु जीवन जीना हर व्यक्ति जानता है परन्तु जीवन को जीना हर व्यक्ति नहीं जानता। पशु-पक्षी, जीव-जन्तु, कीट-पतंगे, वनस्पति भी जीवन जीते है परंतु जीवन को जीना न सीख पाते।

एक व्यक्ति के जन्म से ही उसके लक्षण दिखने लगते हैं। यह कहना कठिन है। उसी प्रकार जिस प्रकार एक बालक पिता के घर में जन्म लिया, बाल्यावस्था को खेलकूद में व्यतीत कर लिया, प्रौढ़ावस्था आते ही संस्कारों ने अंतरंग हृदय में परिवर्तन का तूफान जगा दिया। हृदय में महावीर बनने की लालसा जाग उठी। दिगम्बर संतों को देखकर उनकी तपस्या ज्ञान, चर्या, मन में विचार आया कि संसार में जब मैं आया हूँ तो जीवन को जीना चाहिए। भौतिकता के सुख-साधन, धन, दौलत, ऐश्वर्य, सम्पदा, भाई-भतीजे, रिश्ते-नाते सब से मन विचलित होने लगा और वह अपने आप में रमने लगा।

वैराग्य पथ पर चलने की राह पर निकला व्यक्ति अपने कल्याण के साथ-साथ जन-कल्याण का मार्ग भी प्रशस्त कर देता है। संसार की नश्वरता को पहिचान लिया और पृथ्वी को ही शय्या माना, आकाश जिसके वस्त्र हैं। ज्ञान ही जिनका भोजन है ऐसी दिगम्बर जैनेश्वरी दीक्षा

धारण कर मोहमयी संसार का त्याग की ओर अग्रसर हो गई। इस संत का नाम है आचार्य वसुनंदी जी है।

आ. वसुनंदी जी के मधुरता सरलता और मृदुता तथा अद्‌भुत ज्ञान व तपस्या का वर्णन नहीं किया जा सकता। जो इनके चरणों के निकट आ जाता है वही इस अमृतपान का रसास्वादन कर पाता है। बहुत विरले संतों में वात्सल्य गुण प्राप्त होता है। परम पूज्य निमित्त ज्ञानी आ. श्री विमल सागर जी महाराज के वत्सलता को देखने के बाद आज पूज्य गुरुदेव आ. वसुनंदी जी के दर्शन करके उस वात्सल्यता की स्मृति जागृत हो गई। मैं पूज्य गुरुदेव के चरणों में शत-शत नमन करते हुए उनके जीवन की सुखद कामना करते हुए गुरुदेव शतायु हों और सदा उनकी वह इच्छा वर्षणा प्राप्त होती रहे यही हम भावना भाते हैं।

शैलेष जैन (जबलपुर निवासी)
पारस गोल्ड, सम्मेदशिखर जी

कुन्दकुन्द के लघुनन्दन हो,
जिनवाणी के पुत्र कहे।
गणधर जैसे भाई मिले है,
ज्ञानानन्द से शिष्य कहे।
परम हितेशी आप हो गुरुवर,
मैंने तो पावन माना है।
कोई कहता ऋतुएँ तुमको,
मैंने तो सावन माना है।।

–साभार 'स्वर्णोदय'

गुरुवर मेरे भगवान है

वसुनन्दी गुरुवर एक ऐसा नाम
जिसने भक्तो को दिये कई आयाम।
चाहने वालो के लिए भगवान, भक्तों के लिए वरदान।
देखने वालो के लिए अजूबा,
सुनने वालो के लिए संस्कारों का पिटारा।
समझने वालो के लिए रहस्यों का खजाना।
सीखने वालों के लिए ज्ञान की कुंजी।
जीवन में उतारने के लिए त्याग की प्रतिमूर्ति।

सौरभ के समावेश से ही वसुनन्दी गुरुवर का उदय हुआ है, गुरूवर को देखने मात्र से ही कष्टों का क्षय हुआ है। ऐसे गुरुवर को आंखों में ज्ञान के सागर की गहराई साफ झलकती है। स्नेह व प्यार की इबारत लिखने को आतुर सी लगती है।

गुरु की महिमा का वर्णन चंद शब्दों में करना मुश्किल ही नहीं असंभव है। फिर भी मेरा एक छोटा सा प्रयास।

गुरु अपने आप में एक विचित्र शब्द है। जिसके मात्र स्मरण से ही शांति का अनुभव होता है। आत्मा तृप्त हो जाती है और मन प्रफुल्लित हो उठता है। गुरु जिसकी प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका है या यूं कर सकते है 'गुरु जिसके बिना जीवन नहीं शुरू।'

गुरु का होना उतना ही आवश्यक है। जितना शरीर में आत्मा का, वन में पेड़ों का, सभा में लोगो का। चाहे वह स्कूल की शिक्षा को लेकर हो या धर्म की शिक्षा। शिक्षा के बिना मानव का कोई अस्तित्व ही नहीं, शिक्षा ही राष्ट्र की नींव है। 'स्कूल शिक्षा' जिससे व्यक्ति के व्यक्तित्व में निखार आता है और धर्म शिक्षा जो व्यक्ति के कल्याण एवं आत्मा के कल्याण में सहयोगी है। अतः दोनों ही अत्यंत आवश्यक है।

Education is the Foundation of Nation.

इस सूत्र के आधार पर शिक्षक जो शिक्षा का धारक या प्रेरक है। और धर्म गुरु जो धर्म का धारक या प्रेरक है। ये राष्ट्र निर्माण करने वाला महान शिल्पी माना जाएगा। किसी भी राष्ट्र की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थितियों का ब्यौरा उस राष्ट्र विशेष की शिक्षा नीति व गुरुओं के अनुशोधन से ज्ञात हो सकता है। इसलिए तो भारतीय दर्शन में गुरु को जीवन का सृजक संरक्षक और प्रेरक कहा गया है। इसे साक्षात परमब्रह्म की उपाधि दी गई है।

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागू पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो बताय॥

गुरु की महिमा का उदाहरण अतिशय क्षेत्र सरूरपुर कलां उत्तर प्रदेश में मुझे परम पूज्य गुरुवर आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज के समक्ष उपस्थित नजर आया। जहां बच्चे से लेकर बड़ों तक गुरुवर की भक्ति में लीन थे। इनके लिए तो अपने दिन के तीनों पहरो का समागम हो गया हो अर्थात् एक ही पहर हो गया हो। वो है 'भक्ति का पहर' प्रत्येक व्यक्ति गुरुवर की भक्ति में लीन था। मुझे भी अतिशय क्षेत्र सरूरपुर कलां में प्राचीन जैन मंदिर जो लगभग 850 वर्ष प्राचीन है। जिसके पंचकल्याणक में परम पूज्य आचार्य श्री के सान्निध्य में मुझे प्रथम बार मंच संचालन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ मुझे डर था कि आचार्य भगवन का स्वभाव कैसा होगा। परन्तु इतने सरल स्वभावी, मृदुभाषी हमेशा चेहरे पर मुस्कान को देखकर हम कह सकते है कि वास्तव में आचार्य श्री भगवान की प्रतिमूर्ति है। मुझे आचार्य श्री ने बहुत ही आशीर्वाद दिया और कहा कि वास्तव में मिन्टू शब्दों का भण्डार है। भाषा में ओज है। ये जल्दी ही आसमान को छूऐगा।

यह सब गुरुवर की महिमा है। गुरु की शरण में अधार्मिक व्यक्ति भी धर्म की राह का अनुसरण करने लगता है। सांस्कारिक धार्मिक वातावरण में रच-बस जाता है। जिस प्रकार आकार रहित मिट्टी कुम्हार के हाथ लगते ही आकर्षक आकार ग्रहण कर लेती है।

यह ऐतिहासिक तथ्य है कि प्राचीन काल में गुरुओं का प्रभाव सम्पूर्ण समाज यहां तक कि राजा-महाराजाओं पर भी था। राजा-महाराजा भी उनके आदेशों एवं निर्देशों का पालन करते थे। भारत ही नहीं संपूर्ण विश्व में आचार्य भगवान समाज को नई दिशा का बोध दे रहे है।

यदि हम गंभीरता से विचार करे, तो हम पायेंगे कि समाज का ऐसा कोई भी वर्ग नहीं है। जो गुरु की फैक्टरी से न निकला हो।

जिस प्रकार से आचार्य भगवन ज्ञान का कोष लुटा रहे है। जिसने झोली फैला दी वह माला-माल हो गया। जिसने नहीं फैलाई वह जिन्दगी की भीड़ में खो गया आइये हम उनके पावन चरणों में बैठकर ज्ञान अमृत का पान करें और राष्ट्र निर्माण के लिए कदम बढ़ाये।

आचार्य भगवन श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज की मधुर मिश्रित वाणी में ऐसी सम्मोहन शक्ति प्रतीत होती है कि हर कोई उनके पास खींचा चला आता है और प्रवचन शैली का तो क्या कहना इतनी आकर्षक और ओजपूर्ण शांति का अनुभव होता है। और सांसारिक प्राणी अर्थात् गृहस्थ भी क्षणभर के लिए सोचने के लिए मजबूर हो जाता है कि ये संसार नश्वर है।

जब तुम चलते हो, तो राहगीर लगते हो।
इस संसार सागर, के तीर लगते हो।
आपको कोई कुछ भी कहे मेरे प्यारे गुरुवर।
मेरे लिए तो आप साक्षात महावीर लगते हो।

नमनकर्ता

सुरेन्द्र कुमार जैन 'मिन्टू'
वरिष्ठ मंच संचालक-दिल्ली
मो. 9818260976

अविस्मरणीय संस्कमरण

भारत के मानचित्र में अपनी भौगोलिक स्थिति के साथ-साथ धर्म व सांस्कृतिक विरासत के लिये विशिष्ट स्थान रखने वाला मध्य प्रदेश का धर्म विद् हृदयस्थल सिवनी जो महिमामयी अतीत की आभा से आलौकित अपने गगनचुम्बी शिखरबंद, जिनालयों, मूलनायक बड़े बाबा चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान के अतिशय एवं विश्व विख्यात रजत अश्व युगल संयुक्त रजत रथ से जैन संस्कृति के इतिहास को गौरवान्वित किये हुए है।

आईये ऐसी गौरवशाली नगरी से वर्तमान के एक ऐसे निर्ग्रन्थ साधक की स्मृतियों जोड़ते हैं जिनके आगमन से सिवनी के पृष्ठ में एक नव इतिहास 'जो भूतो न भविष्यति' की रचना स्वयमेव रची गई।

प्रसंग है वर्ष 1997 के आषाढ़ मास के एक मांगलिक दिवस का जैन समाज में भक्ति एवं उत्साह के वातावरण का मंदिर जी से लेकर सूदूरवर्ती चौराहों तक रंग बिरंगी झिलमिल करती हुई तोरणों की कतारें, स्वागत द्वार, केसरिया एवं पचरंगी ध्वजाएं, सुन्दर कोटेशनों से युक्त बैनर्स, द्वार द्वार सुन्दर रंगोली के चौक एवं आरती से सजे थल मानों स्वयमेव कह रहे थे कि आज इस नगरी में किसी विशिष्ट महापुरुष का आगमन होने जा रहा है।

विषय विस्तार ना करते हुए मूल प्रसंग में अपनी लेखनी का रूख करते हैं। शुभ प्रसंग था निर्ग्रंथ साधक, मूलाचार के आराधक, तपोरत पूज्य मुनिवर श्री निर्णयसागर जी महाराज के आगमन का।

प्रभातकालीन बेला में ही जैन समाज के अबाल, वृद्ध नर-नारियों का विशाल जन-समुदाय गगन-भेदी दिव्यघोष एवं धार्मिक नारों से वातावरण को गुंजायमान करते हुए नगर सीमा में पूज्य श्रमण संघ की आगवानी हेतु पहुंच गया। आगमोक्त मृदुवाणी से विख्यात पूज्य मुनिश्री निर्णयसागर जी महाराजा के ससंघ आगमन से जैन जैनेतर सभी हर्षित हुए। महाराज श्री के साथ विशाल जनसमुदाय उल्लास के साथ मंदिर जी की ओर उपस्थित

हुआ। घरों पर क्षीर एवं नीर से पाद प्रक्षालन एवं आरती कर श्रमणसंघ की मंगल आगवानी की गई। अन्य मुनिवर निर्णयसागर जी महाराज प्रथम बार सिवनी नगर में प्रवेश कर रहे थे। जैसे-जैसे श्रमण संघ के चरण मंदिर जी की ओर बढ़े जा रहे थे। सुदूरवर्ती मार्गों से गगनचुम्बी अष्टापाद शिखर समूह दृष्टिगोचर होने लगे। कल्पना से बाहर सुन्दरतम नजारा देख श्रमण संघ अत्यन्त प्रमुदित हुआ।

मंदिर जी में प्रविष्ट होते ही बड़े बाबा पार्श्वप्रभु की सांवरिया छवि देखकर ''कर यात्रा-पदयात्री' के चरण जैसे कुछ पल के लिये जड़ हो गये। अत्यंत भक्तिभावपूर्णक मुनिवर ने बड़े बाबा के साथ-साथ सारे जिनालयों की वन्दना की। तदोपरान्त भगवान बाहुबली के जिनालय से प्रतिष्ठित सरस्वती भवन के विशाल सभाकक्ष में पूज्य श्री की धर्मसभा प्रारंभ हुई।

सिवनी नगर के गौरव, वरिष्ठ विद्वान एवं पूज्य श्री प्रियाग्र पं. श्रेयांस कुमार जी दिवाकर ने चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलन कर अपने भूमिका संबोधन में सकल दिगम्बर जैन समाज सिवनी की ओर से श्रमणसंघ को श्रीफल अर्पित कर निवेदन किया कि गुरुवर आपका सान्निध्य पाकर पावन योग के रूप में हम सभी को प्राप्त हो।

सभा चातुर्य व्यक्तित्व के धनी पं. दिवाकर जी के आग्रह को सुन मुनिश्री मंद-मंद मुस्काये एवं बोले दिवाकर जी अभी चातुर्मास का संकल्प किसी ओर स्थान को लक्ष्य बनाकर हमारा विहार चल रहा है किन्तु आप निराश न हो जितना अधिक हो सकेगा हम यहां समय देंगे।

तदन्तर श्रमण संघ सिवनी में तीन दिन रूका। सिवनी में प्रवास में पूज्य श्री निर्णयसागर महाराज का एक इतिहास के रूप में उस समय दर्ज हो गया। जब महासागरों के मिलन एवं बिछोह का यह नगर साक्षी बना पूज्य मुनि श्री विशुद्धसागर महाराज को जैसे समाचार प्राप्त हुआ कि उनके अग्रज श्रेष्ठ चर्या के धनी निर्णयसागर जी महाराज सिवनी नगर में

विराजित है। अनुज के कदम द्रुत गति से अग्रज की ओर बढ़ गये। नियत समय पर पूज्य मुनिश्री निर्णयसागर महाराज अपने अनुज अन्य मुनि श्री विशुद्ध सागर महाराज की आगवानी हेतु नगर सीमा में पहुंच गये। यह वह समय था जब पूज्य मुनि श्री विशुद्धसागर महाराज का छत्तीसगढ़ की ओर भिलाई चातुर्मास हेतु मंगल विहार चल रहा था और निर्णयसागर महाराज का विहार बुन्देलखण्ड की ओर।

सिवनी जंक्शन साक्षी बना राम-भरत मिलाप का। समग्र बुन्देलखण्ड एवं छत्तीसगढ़ की जनता उमड़ पड़ी दो महासागरों के मिलन को देखने।

जैसे ही प्रतीक्षाकर अग्रज पर अनुज की दृष्टि पड़ी अत्यन्त साम्यभाव से आगे बढ़कर विशुद्धसागर जी ने निर्णयसागर महाराज के चरण स्पर्श कर नमोस्तु निवेदित किया। प्रतिनमोस्तु कर दोनों हाथों का सहारा दे अग्रह ने अनुज को ऊपर उठा अपने हृदय से लगाया। वात्सल्य की अविरल धारा अश्रुत के रूप में बह पड़ी। दो उत्कृष्ट साधकों की चरण रज पा नगर की धरा गौरवान्वित हो मानों धन्य हो रही थी।

मंदिर जी में आज धर्मसभा में एक नहीं बल्कि दो दो सरस्वती पुत्रों का लाभ समाज ने लिया। बुन्देलखण्ड एवं छत्तीसगढ़ के विभिन्न अंचलों से पधारे अतिथियों ने अपने नगर का प्रतिनिधित्व करते हुए पूज्य मुनि संघ को श्रीफल अर्पित कर चातुर्मास हेतु प्रार्थना की।

ऐसे में सिवनी समाज कहां पीछे रहने वाली थी पुनः समाज की ओर से पं. श्रेयांस जी दिवाकर ने निवेदन किया कि गुरुवर सिवनी आप दोनों मुनिराजों के मिलन का जंक्शन बना अब चातुर्मास कर नगर को धन्य कीजिये।

प्रत्युत्तर में मुनि श्री विशुद्धसागर जी महाराज ने कहा कि पंडित जी जंक्शन में बहुत सी गाड़ियां आती है, मिलती है एवं अपने गंतव्य की ओर रवानगी लेती है। जंक्शन अनेक गाड़ियों के आगमन एवं मिलन का साक्षी तो बनता है किन्तु गाड़ियां वहां से आगे बढ़ जाती है। हमारा मंगल आशीर्वाद है कि आप सिवनी नगर के जंक्शन को देव शास्त्र गुरु के प्रति

सेवाभाव के साथ समर्पित रखें। संत विशेष एवं पंथ विशेष की नहीं बल्कि पिच्छि कमण्डलु के धारक की आराधना करें।

धर्मसभा के उपरान्त दोनों मुनिराज आहारचर्या हेतु बड़े बाबा जी की वेदिका के सम्मुख विधि ग्रहण कर चर्या हेतु निकले। उपस्थित दृश्य भी बड़ा नयनाभिराम था। राम के पीछे लक्ष्मण चले और मुनि युगल की आहारचर्या हेतु पड़गाहन का सौभाग्य मिला दिवाकर दम्पत्ति को। सप्तम प्रतिमाव्रत की धारी श्रीमती शांतिबाई अपने पति पं. श्रेयांस जी दिवाकर के साथ मंगल कलश लिये चौके और मुनि युगल की आगवानी करते चल रही थी निरन्तरा आहारचर्या कराकर दिवाकर दम्पत्ति हर्ष से फूले ना समाये।

सामायिक उपरांत मांगलिक मिलन की बेला बिछोह में परिवर्तित हुई। भरे हृदय से दोनों मुनिराजों ने एक दूसरे को विदाई दी। राम से भरत बिछड़े। भरत से राम पुनः कदम उठे एक के बुन्देलखण्ड की ओर एवं एक के छत्तीगढ़ की ओर। सिवनी समाज का अंत तक प्रयास रहा कि किसी ना किसी का चातुर्मास प्राप्त हो। किन्तु मुनिराज द्वय के संकल्प उन्हें उनके गंतव्य की ओर ले गये।

क्रमशः गढ़ाकोटा और भिलाई में धर्मप्रभावना पूर्वक दोनों संघों के चातुर्मास सम्पन्न हुए।

समय गतिशील होता है आध्यात्म के क्षेत्र में अपने निर्दोष रत्नत्रय के माध्यम से अभूतपूर्वक धर्म की प्रभावना करते हुए पूज्य मुनि निर्णयसागर महाराज को राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज का मंगल सान्निध्य प्राप्त हुआ उनकी योग्यता को परखकर पूज्य आचार्य महाराज ने उन्हें उपाध्याय पद प्रदान किया।

समय के साथ-साथ पूज्य उपाध्याय श्री अध्ययन में और निखार आता गया। शिष्य की योग्यता देखकर गुरुदेव ने उन्हें क्रमशः एलाचार्य एवं आचार्य पद पर सुशोभित कर वसुनन्दी नाम प्रदान किया।

निर्णयसागर से वसुनन्दी तक का सफर अनेक उतार-चढ़ाव भरा रहा।

शारीरिक व्याध्यिों से भी वे कभी नहीं घबराये।

स्व एवं पर कल्याण में रतन आचार्य वसुनन्दी जी महाराज की चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज पर गहन श्रद्धा है। पूज्य आचार्य महाराज की 131वीं जन्मजयंती आयाजन में पूज्य आचार्य श्री विद्यानंद महाराज के साथ महतीय योगदान रहा। विद्ववत रत्न पं. प्रवर स्व. श्री सुमेरूचन्द्र जी दिवाकर द्वारा रचित स्व. श्रमणराज शांतिसागर महाराज का चरित्र चारित्र चक्रवर्ती उन्हें अत्यन्त प्रिय है। वे निरन्तर उसका पठन-पाठन की प्रेरणा श्रमण एवं श्रावकों को देते हैं।

पूज्य गुरुवर की इन्हीं मांगलिक भावनाओं से प्रेरित हो दिल्ली के निकट ग्राम मण्डौला में पूज्य ऐलक श्री विज्ञानसागर जी महाराज ने 'जयशांतिसागर निकेतन' साधु उपाश्रय के निर्माण में अपनी प्रेरणा प्रदान की। इसी निकेतन में भगवान वासुपूज्य जी सुन्दर जिनालय में विराजमान है। पूज्य ऐलक श्री की अपने गुरु पूज्य आचार्य श्री वसुनन्दी जी गुरुदेव पर अटूट श्रद्धा है। इसी श्रद्धान के वशीभूत हो उन्होनें अपने गुरु के स्वर्णिम पचासवें वर्ष में मुझे इन स्मृतियों को संजोने की प्रेरणा दी। हालांकित स्मृतियों का यह संयोजना मेरे द्वारा किया गया प्रयास मात्र है। क्योंकि गुरु के गुणों का बखान करना ठीक उसी प्रकार है जैसे दैदीप्यमान भास्कर को नन्हा टिमटिमाता दीपक दिखाना।

अंत में भक्तामर जी के उस महान काव्य के गूढ़तम रहस्य को अपने टूटे फूटे शब्दों से जोड़ते हुए विराम देता हूं।

अल्प श्रुतं श्रुत वता परिहास धाम,
त्वद् भक्तिरेव मुखरी करते बलान्माम्।

अर्थात् विज्ञजनों की हंसी के पात्र मुझ अल्पज्ञानी को आपकी भक्ति ही बोलने को विवश करती है।

पारस जैन
शांति सदन, सिवनी (म.प्र.)

आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी महाराज श्री के चरणों में बारम्बार नमोऽस्तु

मैं निलेश हिरासाव कहाते, कनाडा में मेकैनिकल इंजीनियर की हैसीयत से कार्यरत हूं। मेरे गुरुजी श्री 105 विज्ञान सागर जी महाराज श्री और उनके गुरुवर आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज श्री, इनके दर्शन का योग अभी तक नहीं आ पाया पर अब तक जो भी सुना जो भी पढ़ा है उससे मैं काफी प्रभावित हूं। ज्ञान के सागर आचार्य श्री की साहित्य रचना अनमोल है।

आपके विचार, आपकी बोली इतनी प्रभावशाली है कि श्रावकगण इस अनमोल मनुष्य जीवन को सार्थक करने के लिए आपके दिखाये मार्ग पर सहज निकल पड़ते है। तभी दीक्षा सम्राट यह उपाधि आपको पूर्णतः अनुरूप है। आज की घड़ी में आपकी रचना ''मैं किसी से बेहतर करूं क्या फर्क पड़ता है। में किसी का बेहतर करू बहुत फर्क पड़ता है। लोगों को अपने अंदर उतारने कि जरूरत है। आज पूरा संसार एक दूसरे से बेहतर करने में लगा हुआ है। पर आपकी रचना जो मुझे इस भागादौड़ी से वक्त निकाल के दूसरों की भलाई करने की प्रेरणा देती है।

आप मोक्षमार्ग पर आगे अग्रसर होने वह और आपके दर्शन का योग हमें प्राप्त हो इसी भावना के साथ आपका शुभाशीष बना रहे यही अपेक्षा करता हूं।

आचार्य श्री वसुनंदी महाराज श्री नमोऽस्तु-नमोऽस्तु-नमोऽस्तु

ऐलक श्री विज्ञान सागर जी महाराज श्री इच्छामी-इच्छामी-इच्छामी

निलेश कहाते, कनाडा